www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

हिन्दी–ब

रचनात्मक मूल्यांकन
हेतू
शिक्षक संदर्शिका

कक्षा– X

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

शिक्षा केन्द्र, 2–समुदाय केन्द्र, प्रीत विहार, नई दिल्ली–110092

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

नया आगाज़

आज समय की माँग पर
आगाज़ नया इक होगा
निरंतर योग्यता के निर्णय से
परिणाम आकलन होगा।

परिवर्तन नियम जीवन का
नियम अब नया बनेगा
अब परिणामों के भय से
नहीं बालक कोई डरेगा

निरंतर योग्यता के निर्णय से
परिणाम आकलन होगा।

बदले शिक्षा का स्वरूप
नई खिले आशा की धूप
अब किसी कोमल-से मन पर
कोई बोझ न होगा

निरंतर योग्यता के निर्णय से
परिणाम आकलन होगा।
नई राह पर चलकर मंज़िल को हमें पाना है
इस नए प्रयास को हमने सफल बनाना है
बेहतर शिक्षा से बदले देश, ऐसे इसे अपनाए
शिक्षक, शिक्षा और शिक्षित
बस आगे बढते जाएँ
बस आगे बढते जाएँ
बस आगे बढते जाएँ.........

CBSE
CONTINUOUS AND COMPREHENSIVE EVALUATION
KNOW - AS YOU GROW

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

रचनात्मक मूल्यांकन

हेतु

शिक्षक संदर्शिका

हिंदी (पाठ्यक्रम- ब)

कक्षा - दसवीं

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

शिक्षा केन्द्र, 2 - समुदाय केन्द्र, प्रीत विहार, नई दिल्ली- 1100092

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

कक्षा दसवीं के हिंदी पाठ्यक्रम हेतु रचनात्मक मूल्यांकन के लिए शिक्षक संदर्शिका

मूल्य : ₹

प्रथम संस्करण, 2010 केमाशिबो, भारत

द्वितीय संस्करण, 2013 केमाशिबो, भारत

प्रतियाँ : 20,000

कॉपीराइट : केमाशिबो, भारत

प्रकाशक : सचिव, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, 2, सामुदायिक केन्द्र, शिक्षा केन्द्र, दिल्ली- 110092

अक्षर संयोजन तथा विन्यास : **मल्टी ग्राफिक्स,** 8A/101, डब्लू.ई.ए. करोल बाग, नई दिल्ली- 110005 फोन : 011-25783846

मुद्रक :

www.FirstRanker.com

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण [1][प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता
प्राप्त कराने के लिए
तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा
और [2][राष्ट्र की एकता और अखंडता]
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई० को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977) से "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977) से "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

भाग 4 क

मूल कर्त्तव्य

51 क. मूल कर्त्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हों, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी, और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई उंचाइयों को छू ले;

[1](ट) यदि माता–पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिये शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

1. संविधान (छयासीवां संशोधन) अधिनियम, 2002 की धारा 4 द्वारा (12.12.2002) सें अंत: स्थापित।

THE CONSTITUTION OF INDIA

PREAMBLE

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a [1][SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC] and to secure to all its citizens :

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity; and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the[2] [unity and integrity of the Nation];

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty-sixth day of November, 1949, do HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.

1. Subs, by the Constitution (Forty-Second Amendment) Act. 1976, sec. 2, for "Sovereign Democratic Republic" (w.e.f. 3.1.1977)
2. Subs, by the Constitution (Forty-Second Amendment) Act. 1976, sec. 2, for "unity of the Nation" (w.e.f. 3.1.1977)

THE CONSTITUTION OF INDIA

Chapter IV A

FUNDAMENTAL DUTIES

ARTICLE 51A

Fundamental Duties - It shall be the duty of every citizen of India-

(a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;

(b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;

(c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;

(d) to defend the country and render national service when called upon to do so;

(e) to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities; to renounce practices derogatory to the dignity of women;

(f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;

(g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers, wild life and to have compassion for living creatures;

(h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;

(i) to safeguard public property and to abjure violence;

(j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement;

[1](k) who is a parent or guardian to provide opportunities for education to his/her child or, as the case may be, ward between age of six and forteen years.

1. Ins. by the constitution (Eighty - Sixth Amendment) Act, 2002 S.4 (w.e.f. 12.12.2002)

प्रस्तावना

रचनात्मक आकलन इस तथ्य पर बल देता है कि शिक्षार्थी भी निर्णय-निर्माता हैं, यह दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन हमारी विगत आकलन व्यवस्था में इसकी उपेक्षा की गई। परंपरागत आकलन का झुकाव आकलन की आवृत्ति बढ़ाने की ओर था जिससे शिक्षार्थियों द्वारा कथित मानकों पर अधिकार को सुनिश्चित किया जा सके और दूसरी ओर सीखने के लिए आकलन का बल अधिगम के दैनंदिन विकास पर है जिससे वांछित मानकों को प्राप्त करने के लिए शिक्षार्थियों के शैक्षणिक सहयोग को बढ़ाया जा सके। यह शिक्षकों को बताता है कि शिक्षार्थी ज्ञान, व्याख्या और कौशलों के बुनियादी तत्वों को अर्जित कर रहे हैं। संक्षेप में, शिक्षार्थी की सफलता केवल अधिक बार परीक्षण के साथ नहीं जुड़ी है, न ही इसके साथ जुड़ी है जो शिक्षक और प्राचार्य परिणाम के साथ करते हैं और न ही इसके साथ कि कितने बेहतरीन तरीके से आंकड़ों को व्यवस्थित किया जाता है, भले ही ये चीज़ें शिक्षार्थी की सफलता में योगदान दे सकती हैं।

के.मा.शि.बो. से मान्यता प्राप्त सभी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर सतत और समग्र मूल्यांकन को प्रारंभ करके के.मा.शि.बो. ने यह संदेश दिया है कि आकलन को शिक्षार्थी के व्यक्तित्व-विकास के सभी पक्षों का ध्यान रखना चाहिए और चूंकि सीखना एक सतत प्रक्रिया है, आकलन को भी सतत होना होगा। आकलन को सीखने-सिखाने के संपूर्ण ढांचे के अभिन्न अंग के रूप में देखते हुए सीसीई (सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन) ने सैद्धांतिक रूप से परीक्षण के स्थान पर सीखने पर बल दिया है। जब कक्षायी अभ्यासों में इसे शामिल किया जाता है तो आकलन अपनी वैयक्तिक पहचान खो देता है और अनुदेशनात्मक प्रक्रिया में घुल-मिल जाता है। इस प्रकार की संकल्पना रचनात्मक आकलन पर अधिक बल देने को अनिवार्य बना देती है। यह रचनात्मक आकलन को सुदृढ़ करने की महत्वपूर्ण आवश्यकता को उजागर करता है, क्योंकि हमारा मुख्य उद्देश्य आकलन से प्राप्त जानकारी के आधार पर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में सुधार लाते हुए सीखने को सुगम बनाना है।

विद्यालयी शिक्षा से जुड़े पणधारियों में रचनात्मक आकलन-अभ्यासों के संबंध में अवधारणागत स्पष्टता का अभाव है जिसके परिणामस्वरूप ऐसे अनेक उपकरण और तकनीक, जो रचनात्मक आकलन के प्रतीत होते हैं, असल में योगात्मक प्रकृति के होते हैं। उदाहरण के लिए, एक समय विशेष में, नापने के अभ्यासों में शिक्षार्थियों का सीखना विषय-वस्तु के मानकों के सापेक्ष होता है। प्रभावी रचनात्मक आकलन उपकरणों का निर्माण करने को अनेक शिक्षक एक चुनौती के रूप में पाते हैं, वे इन्हें

कक्षाकक्षीय अनुदेशनों में एकीकृत करने में भी कुछ कठिनाई का अनुभव करते हैं। इस संबंध में अवधारणागत स्पष्टीकरण उपलब्ध कराने के लिए और शिक्षकों को रचनात्मक आकलन-कार्यों के कुछ उदाहरण देने के लिए बोर्ड ने कक्षा IX और X के सभी मुख्य विषयों में संदर्शिका की एक श्रृंखला निकाली है। यह श्रृंखला रचनात्मक आकलन की अवधारणा को समझने और कक्षा में रचनात्मक आकलन को प्रशासित करने में शिक्षकों की मदद करेगी।

हमें ऐसा लगता है कि साल-दर-साल और अधिक प्रभावी तरीके से सीसीई को समझने एवं उसे क्रियान्वित करने में हमारा जैसे विकास हो रहा है, शिक्षकों को उपलब्ध कराए जाने वाली शिक्षण-अधिगम सामग्री को एक बार फिर से देखा जाना चाहिए रचनात्मक आकलन संबंधी शिक्षक-संदर्शिका की गुणवत्ता के संबंध में बोर्ड द्वारा के.मा.शि.बो. मान्यता प्राप्त स्कूलों के शिक्षकों द्वारा व्यापक रूप से प्रतिपुष्टि प्राप्त की गई थी। संदर्शिका के पहले संस्करण के प्रकाशन के बाद प्राप्त टिप्पणियों और सुझावों एवं इस क्षेत्र के विशेषज्ञों की राय को भी ध्यान में रखा गया। त्रुटियों को दूर करने के लिए सभी संदर्शिकाओं का गहन परीक्षण किया गया और लगभग हर संदर्शिका के हर पाठ मे सुधार दृष्टिगत होता है।

संशोधित संदर्शिकाएँ प्रभावी कार्यों की योजना बनाने में शिक्षकों का मार्गदर्शन करने के लिए रचनात्मक आकलन हेतु नवीन और व्यावहारिक विचार तथा नीतियां प्रस्तुत करती हैं जिन्हें कक्षा में उपयोग में लाया जा सकता है। उपलब्ध कराए गए कार्यों में विविधता है और ये कार्य बड़े एवं छोटे आकार की – दोनों कक्षाओं की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि कक्षा में किसी कार्यकलाप को पूरा करने में लगने वाला समय निर्धारित अथवा अनुबंधित समय के भीतर ही हो। स्पष्ट व्याख्याएँ और उदाहरण शिक्षकों का इस रूप में मार्गदर्शन कर सकेंगे कि वे रचनात्मक आकलन के लिए स्वयं अपने कार्यों का विकास कर सकें। प्रत्येक कार्यकलाप के अंत में दिए गए आकलन-मानदंडों को शिक्षक अपनी कक्षा की आवश्यकताओं के अनुसार संशोधित कर सकते हैं।

शिक्षार्थियों के अधिगम की व्यापक समझ के लिए जहां भी उचित हो शिक्षक आकलन के भिन्न-भिन्न साधनों का प्रयोग अवश्य करें। इसके उपरांत शिक्षकों द्वारा शिक्षार्थियों से प्रतिपुष्टि ली जा सकती है जिसके आधार पर वे यह निर्णय ले सकें कि सीखने और सिखाने में सुधार लाने के लिए क्या करना है। इस प्रकार स्वीकृत अपेक्षाओं के संबंध में वर्तमान संप्राप्ति-स्तर का निरंतर निरीक्षण करने के लिए शिक्षार्थी शिक्षकों के साझेदार बन सकते हैं। जिससे वे यह निर्धारित कर सकें कि आगे क्या सीखना है

और अपनी प्रगति को स्वयं प्रबंधित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकें। शिक्षार्थी एक–दूसरे को, अपने शिक्षकों को, और अपने परिवारों को अपने सीखने के साक्ष्यों को संप्रेषित करने में विशेष भूमिका निभाते हैं तथा वे ऐसा केवल तब नहीं करते जब सीखना पूरा हो चुका हो, बल्कि वे सफलता की पूरी यात्रा के साथ ऐसा करते हैं। संक्षेप में, सीखने के दौरान शिक्षार्थी आकलन प्रक्रिया के भीतर होते हैं, स्वयं की वृद्धि को देखते हैं, अपनी सफलता को नियंत्रित रूप से महसूस करते हैं और यह विश्वास करते हैं कि यदि वे निरंतर प्रयास करते रहें तो सफलता उनकी पहुंच के भीतर है।

संदर्शिका में दी गई उद्देश्यपूर्ण तकनीकों और कार्यकलापों के विविध रंग आकलन को सर्वत्र अनुदेशन और अधिगम में बुनते हैं। और मुझे आशा है कि शिक्षक दिए गए सुझावों और विचारों को व्यावहारिक एवं उद्देश्यपूर्ण क्रियाओं में रूपांतरित कर सकेंगे जो उनकी अपनी कक्षाओं में सीखने–सिखाने को और अधिक प्रभावी बनाएंगे। संशोधित संदर्शिका का उद्देश्य है – शिक्षकों को ऐसा मार्गदर्शन और आवश्यक तकनीक उपलब्ध कराना कि वे स्वयं अपनी सामग्री तैयार कर सकें जिसके फलस्वरूप उनकी पाठ्यचर्या–संपादन मूल्यवान बन सके।

यह संशोधित दस्तावेज़ शिक्षकों के समूह द्वारा तैयार किया गया है और मैं उनके प्रति बोर्ड का हार्दिक आभार प्रकट करता हूं। मैं डॉ. साधना पराशर, आचार्य एवं निदेशक (शैक्षणिक, शोध, प्रशिक्षण और नवाचार), के.मा.शि.बो. के मूल्यवान मार्गदर्शन और भागीदारिता के लिए और संदर्शिका के संशोधन कार्य से जुड़े समस्त शैक्षणिक अधिकारियों के प्रति आभार प्रकट करता हूं।

मुझे पूर्ण आशा है कि इस समृद्ध सामग्री की उपलब्धता के साथ के.मा.शि.बो. से मान्यता प्राप्त सभी विद्यालयों में शिक्षक और अधिक प्रभावी तरीके से आकलन को सीखने के साथ एकीकृत कर सकेंगे।

संदर्शिका को और अधिक बेहतर बनाने के लिए आपके सुझावों का सदैव स्वागत है।

विनीत जोशी

अध्यक्ष

आभार

सलाहकार

श्री विनीत जोशी, अध्यक्ष

डॉ० साधना पराशर, आचार्य एवं निदेशक (शैक्षणिक, नवाचार, शोध एवं प्रशिक्षण)

अनुवीक्षण एवं संपादकीय समिति

श्री अल हिलाल अहमद, सहायक प्राध्यापक एवं संयुक्त निदेशक

कु० अंजलि छाबड़ा, सहायक प्राध्यापक एवं उप-निदेशक

सामग्री निर्माण समूह

श्रीमति सुनीता जोशी, टी०जी०टी०, केन्द्रीय विद्यालय, पश्चिम विहार, नई दिल्ली

श्री अरविन्द झा, पी०जी०टी०, डी०ए०वी० स्कूल, श्रेष्ठ विहार, नई दिल्ली

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

विषय सूची

हिन्दी पाठ्यक्रम - ब

क्रमांक	अध्याय			पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना			
2.	आभार			
3.	विद्यालय-आधारित आकलन			1
4.	रचनात्मक आकलन-एक विहंगावलोकन			11
5.	रचनात्मक आकलन			35
	पद्य खंड			
6.	साखी	-	कबीर	38
7.	पद	-	मीरा	44
8.	दोहे	-	बिहारी	50
9.	मनुष्यता	-	मैथिलीशरण गुप्त	56
10.	पर्वत प्रदेश में पावस	-	सुमित्रानन्दन पंत	64
11.	मधुर-मधुर मेरे दीपक जल	-	महादेवी वर्मा	71
12.	तोप	-	वीरेन डंगवाल	78
13.	कर चले हम फ़िदा	-	कैफ़ी आज़मी	85
14.	आत्मत्राण	-	रवींद्रनाथ ठाकुर	92
	गद्य खंड			
15.	बडे भाई साहब	-	प्रेमचंद	99
16.	डायरी का एक पन्ना	-	सीताराम सेकसरिया	106
17.	तताँरा-वामीरो कथा	-	लीलाधर मंडलोई	112
18.	तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र	-	प्रहलाद अग्रवाल	119
19.	गिरगिट	-	अंतोन चेखव	126
20.	अब कहाँ दसरों के दुख में दुखी होने वाले	-	निदा फ़ाज़ली	133
21.	पतझर में टूटी पत्तियाँ	-	रवींद्र केलेकर	141
22.	कारतूस (एकांकी)	-	हबीब तनवीर	149

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

क्रमांक	अध्याय			पृष्ठ संख्या
	संचयन भाग - 2			
23.	हरिहर काका	-	मिथिलेश्वर	158
24.	सपनों के - से दिन	-	गुरदयाल सिंह	165
25.	टोपी शुक्ला	-	राही मासूम रज़ा	172

www.FirstRanker.com

विद्यालय–आधारित आकलन

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 शिक्षण–अधिगम–प्रक्रिया के अभिन्न हिस्से के रूप में आकलन के अभ्यास पर बल देती है जो प्रामाणिक प्रतिपुष्टि देने के माध्यम से शिक्षार्थियों और शिक्षा–व्यवस्था दोनों को लाभ पहुंचाने की क्षमता रखता है। यह इस बात को भी स्वीकार करता है कि जिस तरह की आकलन प्रक्रियाएं और अभ्यास आजकल जारी हैं वे शिक्षार्थियों के उन संकाय–समुच्चय की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं जो बहुत संकीर्ण होती हैं। इस प्रकार के आकलन अभ्यास शिक्षार्थियों की योग्यताओं की जो तस्वीर उपलब्ध कराते हैं वह अधिकतर अधूरी होती हैं और इनका प्रयोग शिक्षार्थियों के विकास में बाधा डालता है।

मूल्यांकन की **सतत और समग्र आकलन (सीसीई)** व्यवस्था को प्रारंभ करने के पार्श्व में निहित दृष्टिकोण था – शिक्षार्थियों के अधिगम और विकास में सहायता प्रदान करने के लिए आवृत्तिगत अंतरालों पर उन्हें उनकी योग्यताओं के बारे में प्रतिपुष्टि उपलब्ध कराना। विद्यालयों में प्रयोग में लाए जाने वाले आकलन–अभ्यासों की रूपरेखा को सुदृढ़ और उन्नत बनाने के लिए शिक्षण और अधिगम के उपागम में आवश्यक प्रतिमान–परिवर्तन किया जा सके जो अंततः शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने की ओर अग्रसर करेगा। इस विचार के साथ अंतर्राष्ट्रीय रूप से स्वीकृत *आधुनिक आकलन सिद्धांत और व्यवहार* को शुरू किया गया जो यह बदलाव लाने में मार्गदर्शन करेगा कि पूरे देश के विद्यालयों में किस प्रकार से शिक्षार्थियों का आकलन करने की आवश्यकता है।

सतत और समग्र आकलन (सीसीई) में आधुनिक आकलन सिद्धांत

आधुनिक आकलन सिद्धांत सीसीई की भावना से प्रत्यक्ष रूप से संबद्ध है, क्योंकि यह सीखने की प्रक्रिया में शिक्षार्थी को केंद्र में रखता है और शिक्षकों को सक्षम आकलन और प्रबंधन तकनीक के योग्य बनाता है। इसके मूल में *विकासात्मक सांतत्यक* है जो प्रत्येक विषय में शिक्षार्थियों के लिए वृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता है। प्रामाणिक और ठोस साक्ष्यों की सहायता से शिक्षिका विकासात्मक सांतत्यक पर प्रत्येक शिक्षार्थी का स्थान निर्दिष्ट करने के लिए उनके बारे में अपने *पेशेवर निर्णय* का निरूपण कर सकती है। आकलन कार्य और ग्रेडिंग स्केल इस प्रकार से बनाए जाएं जो शिक्षार्थियों को इस योग्य बना सके कि वे सीखने के उद्देश्यों के अनुरूप समुचित योग्यताओं को प्रदर्शित कर सकें। इसे यथार्थ रूप देने के लिए शिक्षार्थियों को यह ज़रूर बताया जाए कि उन्हें किन योग्यताओं का विकास करना है जिससे वे एक उद्देश्य के साथ विकासात्मक सांतत्यक से गुज़र सकें। शिक्षक सहज और सरल रूप से समझ आने वाली भाषा में शिक्षार्थियों को सीखने के उद्देश्यों को बता दें

जिससे उन्हें निरंतर यह जानकारी मिलती रहे कि उन्हें संकल्पनाओं और कौशलों पर अधिकार प्राप्त करने के लिए किस मार्ग पर चलना है। इस प्रकार इस सिद्धांत का प्रमुख आधार उस रूपरेखा से निर्मित है जो शिक्षण–अधिगम अभ्यासों का मूल है, विकासात्मक सांतत्यक है, जो शिक्षार्थियों के निष्पादन को परिभाषित करती है। सैद्धांतिक बारीकियों को सरलता से व्यवहार में क्रियान्वित किया जा सकता है जब शिक्षार्थियों की छवि को उस पर निर्मित किया जाए।

आधुनिक आकलन सिद्धांत और रचनात्मक आकलन

रचनात्मक आकलन शिक्षार्थियों की शैक्षणिक और सह–शैक्षणिक प्रगति को विकासात्मक सांतत्यक के साथ बहुत संभावना उपलब्ध कराता है। विकासात्मक सांतत्यक को एक सीढ़ी के रूप में देखा जा सकता है, जहां हर चरण शिक्षार्थी को ज्ञान, समझ और निष्पादन के उच्च से उच्चतर क्षेत्र में ले जाएगा। प्रत्येक शिक्षार्थी का निष्पादन जो वह जानता है और जो वह कर सकता है – के सदृश है जिसे विकासात्मक सांतत्यक पर निर्धारित किया जा सकता है। इसके द्वारा बच्चे की प्रगति और विकास को व्यापक रूप से देखा जा सकता है और उसे उन खंडित श्रेणियों में नहीं रखा जा सकता जिस प्रकार से एक लंबे समय तक आकलन और परीक्षण के इतिहास में किया जाता रहा है, बल्कि उसे सांतत्यक के साथ उस निरंतरता और सचेत अनुक्रम में रखा जा सकता है जो शैक्षणिक सत्र के दौरान शिक्षार्थी की वृद्धि और विकास को साकार रूप देगा।

रचनात्मक और योगात्मक आकलन की समझ

विद्यालय–आधारित आकलन का प्रतिमान आकलन को सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाती है जो सीखने की प्रक्रिया का मार्गदर्शन करता है और आगे सीखने को बढ़ाता है।

कक्षाकक्ष में आकलन जिस रूप में प्रशासित किया जाता है, उसका प्रसार असंचित, जैसे – शिक्षक–शिक्षार्थी, शिक्षार्थी–शिक्षार्थी बातचीत से उच्च संरचित, जैसे – पेपर–पेंसिल परीक्षा अथवा कार्य निष्पादन की तरह हो सकता है।

जब शिक्षार्थी अथवा उनके सहपाठी कार्य के दौरान अपने ज्ञान की साझेदारी कर रहे हों तो वे असंरचित अथवा थोड़े–से संरचित आकलन के लिए साक्ष्य के स्रोत हो सकते हैं। इस तरह के कार्यों के लिए स्व–आकलन अथवा सहपाठी – आकलन को शिक्षार्थियों को उनके उपलब्धि–स्तर के बारे में प्रतिपुष्टि देने के लिए किया जा सकता है।

www.FirstRanker.com

 www.FirstRanker.com

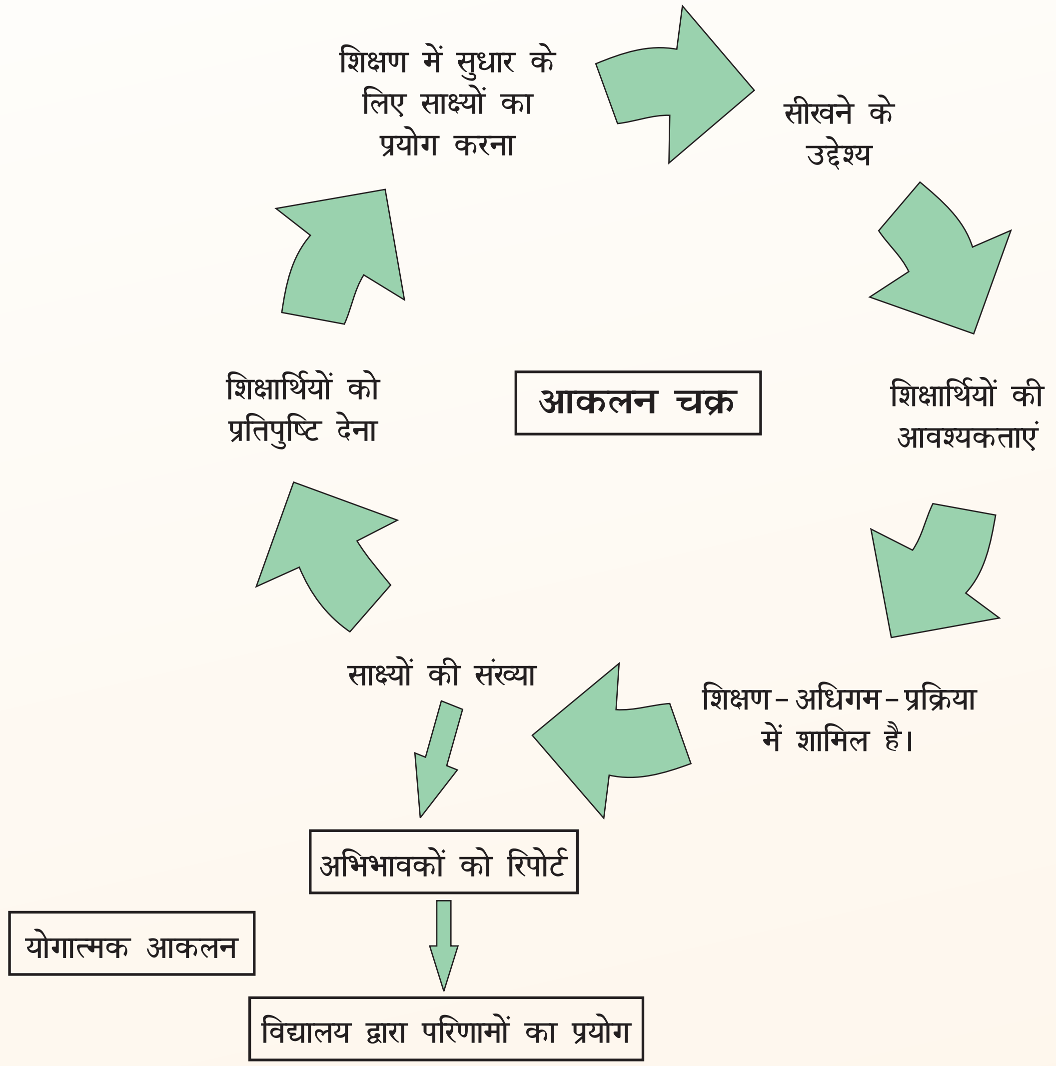

उपर्युक्त चक्र से साक्ष्य के रूप में, किसी भी आकलन को रचनात्मक अथवा योगात्मक आकलन के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। यह आकलन के उद्देश्यों और रिपोर्टिंग के भिन्न तरीकों पर निर्भर करता है। आकलन से एकत्र साक्ष्य जो आगे सीखने के आधार नहीं बनाते वे वास्तव में रचनात्मक आकलन नहीं हैं। अत: इस बात पर ध्यान किया जाना चाहिए कि यदि सिर्फ शिक्षक ही आगे की अधिगम-प्रक्रिया में शिक्षार्थियों के लिए अपनी अंत: दृष्टि और प्रतिपुष्टि शामिल करते हैं तभी उस आकलन को 'रचनात्मक आकलन' कहा जा सकता है। उपर्युक्त बताए गए सिद्धांतों से आगे जाते हुए एक बार फिर किया जाने वाला आकलन 'योगात्मक आकलन' होगा, क्योंकि यह शिक्षार्थी के निष्पादन पर आधारित शिक्षक द्वारा शिक्षण निवेश में आगे योगदान नहीं देगा और बच्चे के लिए अधिगम-चक्र चक्र को समाप्त कर देगा।

आकलन को शिक्षार्थियों के संज्ञानात्मक स्तरों के साथ जोड़ना

शिक्षक सीखने के उद्देश्यों से भली-भांति परिचित हैं कि शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया के परिणाम के रूप में शिक्षार्थियों को संप्राप्ति करनी है। इसके बाद हम पाठ-योजना, कार्यकलाप और शिक्षण-पद्धतियों की ओर बढ़ते हैं जो सीखने के संज्ञानात्मक स्तरों की संकल्पना पर केंद्रित होते हैं जिसमें से ब्लूम के संज्ञानात्मक अधिगम के छह स्तर बहुत प्रचलित हैं।

ब्लूम टेक्सोनॉमी के संज्ञानात्मक अधिगम के छह स्तर इस प्रकार हैं –

- स्मरण
- बोध
- अनुप्रयोग
- विश्लेषण
- मूल्यांकन
- सृजन

चूंकि हमारी शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया इस टेक्सोनॉमी पर आधारित है, अतः आकलन को भी संज्ञानात्मक स्तरों के साथ जोड़ना होगा। उदारहण के लिए –

स्मरण (बहुविकल्पी)

1. द्रव के अणु –

   क) अधिक व्यवस्था में होते हैं

   ख) यादृच्छिक तरीके से गति करते हैं

   ग) में अधिक आणविक स्थान होता है

   घ) एक-दूसरे पर फिसल सकते हैं

अनुप्रयोग (बहुविकल्पी)

हूपर के संदर्भ में, लेखक कहता है, "सभी कुछ उसके लिए चल रहा था।" इसका क्या तात्पर्य है?

क) उसके पास सब कुछ था जो एक आदमी की आकांक्षा होती है

ख) लोग उसकी प्रशंसा करते थे

ग) उसने वह किया जो वह करना चाहता था

घ) वह खेल खेलने के योग्य था

विश्लेषण

1. निजी क्लंच का ज्ञान कैसे उजागर हो गया जबकि सार्जेंट की कक्षाएं चल रही थीं?

मूल्यांकन और सृजन

1. क्या आप हेरोल्ड के माता-पिता के इस निर्णय से सहमत हैं कि उससे यह तथ्य छिपाया जाए कि उसके पिता बॉक्सर थे।

2. लोकतंत्र सिद्धांतों में अच्छा लगता है लेकिन व्यवहार में उतना अच्छा नहीं है। समुचित तर्क के साथ इस कथन को सिद्ध कीजिए।

बहुविकल्पी प्रश्न लिखने के दिशा-निर्देश

बहुविकल्पी प्रश्न आकलन का एक रूप है जिसमें प्रश्न उत्तरदाता को यह निर्देश देता है कि वह उपलब्ध कराए गए विकल्पों की सूची में से सही उत्तर के रूप में एक विकल्प का चयन करे। शिक्षार्थियों की अधिगम-उपलब्धि को मापने के लिए विद्यालयों द्वारा आकलन के एक उपकरण के रूप में बहुविकल्पी प्रश्नों का प्रयोग लगातार बढ़ता जा रहा है।

बहुविकल्पी प्रश्नों के लाभ

बहुविकल्पी प्रश्न वैविध्यपूर्ण प्रतिभा का स्तर उपलब्ध कराते हैं, क्योंकि ये अधिगम-परिणामों के विविध स्तरों के लिए अपनाए जाते हैं जिसमें शामिल हैं - ज्ञान का सामान्य स्मरण, प्राक्घटना का विश्लेषण, सिद्धांतों का अनुप्रयोग, कार्य-कारण संबंधों की व्याख्या आदि। इनमें उच्च स्तर की वैधता होती है, क्योंकि शिक्षार्थियों को अधिक प्रश्न दिए जा सकते हैं और इसलिए अधिक पाठ्यक्रम को शामिल किया जा सकता है। अंकन में वस्तुनिष्ठता के कारण बहुविकल्पी प्रश्नों में अधिक विश्वसनीयता होती है। साथ ही यह कार्यक्षमता को बढ़ाने में मदद करता है, क्योंकि पेपर सरलता से जांचे जा सकते हैं और उनका अंकन किया जा सकता है।

www.FirstRanker.com

बहुविकल्पी प्रश्न के अंग

बहुविकल्पी प्रश्न में एक प्रश्न या 'स्टेम' होता है, ध्यान भंग करने वाले अथवा विकर्षक (डिस्टेक्टर्स) होते हैं और कुंजी होती है यानी उत्तर। बहुविकल्पी प्रश्न में 'स्टेम' एक प्रत्यक्ष प्रश्न के रूप में हो सकता है अथवा वाक्य-पूर्ति रूप में अथवा चित्र या आरेख के रूप में हो सकता है। उदाहरण के लिए

प्रश्न 1. एक टिन फॉयल जिसकी लंबाई a है और चौड़ाई b है, को बेलन बनाने के लिए मोड़ा जाता है। इस बेलन का आयतन क्या होगा?	} 'स्टेम'
a) $ab^2/4\pi$ b) $4\pi a^2 b$ c) $\pi a^2 b^2$	} विकर्षक
d) $a^2 b/4\pi$	} कुंजी d

प्रभावी तरीके से अच्छे बहुविकल्पी प्रश्न बनाने की कई दिशा-निर्देश हैं -

- प्रश्न को सीखने के उद्देश्य के अनुरूप होना चाहिए।
- बहुविकल्पी प्रश्न को महत्वपूर्ण संकल्पना पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
- जब उच्च संज्ञानात्मक स्तर का परीक्षण किया जाना हो तो बहुविकल्पी प्रश्न एक से अधिक संकल्पना को शामिल कर सकता है।
- भाषा सरल, स्पष्ट और एकार्थी होनी चाहिए।
- उत्तर-विकल्प विश्वसनीय लगने वाले और संदर्भ, विचार एवं ध्यान-केंद्र में समान होते हैं।
- यह सुनिश्चित करें कि विकल्प एक-दूसरे के साथ व्याप्त (ओवरलैप) न करें।
- 'उपर्युक्त सभी' और 'इनमें से कोई नहीं' का प्रयोग किफायत से करना चाहिए।
- 'स्टेम' और उत्तर-विकल्प सकारात्मक शब्दावली में रचे जाने चाहिए।
- उत्तर-विकल्प में विलोम नहीं होने चाहिए।

आधुनिक आकलन सिद्धांत और निष्पादन मानक

आधुनिक आकलन सिद्धांत में अंक और ग्रेड्स शिक्षार्थियों का आकलन करने के निर्धारक कारक **नहीं** हैं। ये वर्णनात्मक मानक हैं जो विकासात्मक सांतत्यक के साथ बच्चे की स्थिति बताने में मदद करते हैं जो प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए उपलब्धि मानकों की व्याख्या करता है। इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि समूह के साथ बच्चे की तुलना न की जाए, लेकिन उसका आकलन वर्णनकों के माध्यम से किया जाए जो अपनी प्रकृति में व्यापक और गहन – दोनों होते हैं। साथ ही जो बच्चे की बनाई गई छवि को समर्थन देते हैं। किसी भी बच्चे की छवि को बनाते समय शिक्षकों को उन कारकों पर अधिक मनन करने की किया आवश्यकता है जो बनाई गई छवि को सुदृढ़ करते हैं। शिक्षक को लगातार साक्ष्यों को एकत्र करते रहना चाहिए और उसके बाद विकासात्मक सांतत्यक के साथ बच्चे को चिह्नित करना चाहिए। इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि एक बार जो छवि बन जाती है वह अंतिम **नहीं** होती। चूंकि सीखना एक प्रक्रिया है इसलिए छवि-निर्माण एक प्रक्रिया भी है। किसी भी स्थिति में शिक्षक साक्ष्यों को एकत्र करना ना छोड़े जो निरंतर बच्चे की छवि का निर्माण और समर्थन करते हैं।

आधुनिक आकलन में हम शिक्षार्थियों के निष्पादन को पूर्व-निर्धारित मानकों के संदर्भ में देखते हैं। 'पाठ्यचर्या मानक' ज्ञान, कौशल और बोध हैं जिन्हें पाठ्यक्रम पढ़ने के दौरान शिक्षार्थी को सीखना है जबकि 'निष्पादन मानक' को इस रूप में व्याख्यायित किया जाता है कि शिक्षार्थियों ने पाठ्यचर्या अथवा विषय-वस्तु मानकों को कितने अच्छे से प्राप्त किया है। निष्पादन मानक जितना उच्च होगा उतना ही अधिक शिक्षार्थी विकासात्मक सांतत्यक के साथ होगा।

आकलन के उद्देश्यों और अधिगम-उद्देश्यों के आधार पर शिक्षार्थियों के सीखने का विश्वसनीय एवं वैध माप करने के लिए आकलन की विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग करना चाहिए, न कि केवल बहुविकल्पी प्रश्नों का। उदाहरण के लिए ज्ञान और कौशलों पर शिक्षार्थी के अधिकार के बारे में सार तत्व निकालने के लिए लघुत्तर प्रश्न, निबंधात्मक प्रश्न (उच्च स्तरीय संज्ञानात्मक कौशलों का आकलन करने के लिए प्रभावी प्रयोग), निष्पादन आकलन (भूमिका-निर्वाह (रोल-प्ले), गायन, विज्ञान-प्रयोग का आयोजन) आदि का प्रयोग किया जा सकता है।

निर्देश और आधुनिक आकलन सिद्धांत

शिक्षकों को ऐसे अंकन निर्देशों का निर्माण करने की आवश्यकता है जो निष्पादन-मानकों के अनुरूप हों। केवल इसके बाद ही अंकों का वास्तविक अर्थ हो सकता है। वस्तुत: निर्देश शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक हैं जो

शिक्षार्थियों को विकासात्मक सांतत्यक के साथ चिह्नित करने में शिक्षकों की मदद करते हैं। केवल इसके बाद ही उच्च अंक उच्च संज्ञानात्मक कौशलों को प्रदर्शित करेंगे।

शिक्षार्थियों और अभिभावकों को अंकन के मानदंडों से परिचित कराना चाहिए क्योंकि तभी वे वास्तव में देख पाएंगे कि क्यों प्रत्युत्तर इतने अंकों के योग्य है। वे यह भी देख सकेंगे कि अतिरिक्त अंक लेने के लिए शिक्षार्थी को कितना और अधिक करने की आवश्यकता है। इस तरह शिक्षार्थी भी अपनी वृदधि और विकास के लिए ज़िम्मदारियों को साझा कर सकते हैं।

नीचे भौतिक-शास्त्र के कार्य के आकलन हेतु अंकन-निर्देश बनाने का उदाहरण दिया गया है –

सीखने के उद्देश्य

- शिक्षार्थी भौतिक-शास्त्र की समझ और जानकारी को संप्रेषित करने के लिए उचित शब्दावली और रिपोर्टिंग के तरीके का प्रयोग कर सकेंगे।
- शिक्षार्थी समाज और पर्यावरण पर भौतिक-शास्त्र के अनुप्रयोगों के प्रभाव का आकलन कर सकेंगे।

आकलन-कार्य- सरल कार्य

समाज और पर्यावरण पर इलैक्ट्रिकल जनरेटरर्स के विकास के प्रभाव की चर्चा कीजिए। (6 अंक)

मानदंड	अंक
कम से कम एक-एक सामाजिक और पर्यावरण संबंधी प्रभाव के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष की चर्चा करते हुए समाज और पर्यावरण पर जनरेटर्स के प्रभाव की पूर्ण समझ प्रदर्शित करना।	5-6 अंक
या मुद्दों की पूर्ण समझ की ओर संकेत करते हुए समाज और पर्यावरण- दोनों पर कम से कम एक सकारात्मक पक्ष उपलब्ध कराना। अथवा मुद्दों की पूर्ण समझ की ओर संकेत करते हुए समाज और पर्यावरण- दोनों पर कम से कम एक नकारात्मक पक्ष उपलब्ध कराना।	3-4 अंक

अथवा मुद्दों की बेहतर समझ की ओर संकेत करते हुए कम से कम एक-एक सामाजिक और पर्यावरण संबंधी प्रभाव के सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष उपलब्ध कराना।	
सामाजिक मुद्दों और पर्यावरण संबंधी मुद्दों - दोनों के एक पक्ष का उल्लेख करना। अथवा सामाजिक मुद्दे की बेहतर समझ की ओर संकेत करना। अथवा पर्यावरण संबंधी मुद्दे की बेहतर समझ की ओर संकेत करना।	2 अंक
सामाजिक मुद्दे के एक पक्ष अथवा पर्यावरण संबंधी मुद्दे के एक पक्ष का उल्लेख करना।	1 अंक

कितने अंक दिए जाएं - इसके बारे में निर्णय लेते समय केवल दो बातों का ध्यान रखना चाहिए-

1. शिक्षार्थी का निष्पादन और
2. अंकन-निर्देश में सूचीबद्ध मानदंड

निर्देशों को पारदर्शी बनाने और मानदंडों को स्पष्टत: व्यक्त करने के द्वारा हम निर्णय लेने मे विषयनिष्ठता और पक्षपात को दूर कर सकते हैं। भली प्रकार से बनाए गए निर्देशों का प्रयोग न केवल शिक्षकों को मूल्यवान प्रतिपुष्टि उपलब्ध कराने के लिए किया जा सकता है बल्कि शिक्षार्थियों को भी इस बारे में जागरूक बनाने के लिए किया जा सकता है कि ऐसा क्या है जो उसे विकासात्मक सांतत्यक के साथ बढ़ने और सुधार करने के लिए करना है।

आकलन की संभाव्यता को प्राप्त करना : समय के साथ बढ़ो

पूरे विश्व में, स्कूल बोर्ड, विश्वविद्यालय, अंतर्राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसियां, प्रश्न-लेखन कंपनियां आदि आधुनिक आकलन सिद्धांत के आधारभूत नियमों का अनुपालन करती हैं। आधुनिक आकलन सिद्धांत का लक्ष्य अनिवार्यत: यह है कि शिक्षार्थियों को इस योग्य बनाना कि वे अपनी प्रगति के बारे में ज्ञान विकसित कर सकें

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

ताकि वे अपने प्रयासों को सीखने के सभी क्षेत्रों में निपुण बनने के लिए लगा सकें। शिक्षक अपने भाग पर वास्तविक शिक्षित बच्चे के बहुमूल्य निर्माता हैं, और सिद्धांत शिक्षकों को इस संकल्पना के साथ प्रस्तुत करता है जिसके पास बहुत ठोस मनोवैज्ञानिक आधार है एवं उपकरण हैं जो बेहतर रूप से संरचित हैं और जो स्कूलों में क्रियान्वित पाठ्यचर्या के अनुरूप हैं। विद्यालय-आधारित आकलन को उन आकलन-अभ्यासों में शामिल रखने की आवश्यकता है जो उपलब्धि-स्तर को अंकित करने के स्थान पर प्रत्यक्ष रूप से शिक्षार्थी के हित में निर्देशित हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने इसके लिए जो प्रयास किया है वह सतत और समग्र मूल्यांकन था जिसके उपकरण और तकनीक को सहायता की आवश्यकता है जो उसकी दृष्टि के अनुरूप हों।

www.FirstRanker.com

रचनात्मक आकलन : एक विहंगावलोकन

रचनात्मक आकलन एक ऐसा उपकरण है जिसे भयमुक्त और सहयोगपूर्ण वातावरण में शिक्षार्थियों की प्रगति की नियमित जांच के लिए शिक्षक द्वारा उपयोग में लाया जाता है। इसमें नियमित वर्णनात्मक प्रतिपुष्टि, शिक्षार्थी द्वारा अपने निष्पादन पर मनन करने का एक अवसर, सलाह लेना और उसमें सुधार करना शामिल है। इसमें आकलन के मानदंडों का निर्माण करने से लेकर स्व-आकलन अथवा सहपाठियों का आकलन करने तक शिक्षार्थी आकलन के एक अनिवार्य हिस्से के रूप में शामिल रहते हैं। यदि इसका प्रभावी तरीके से प्रयोग किया जाए तो यह बच्चे की स्व-गरिमा को बढ़ाते हुए और शिक्षक के कार्य-भार को कम करते हुए शिक्षार्थियों के निष्पादन में सुधार कर सकता है।

क्या है रचनात्मक आकलन ?

रचनात्मक आकलन को इस रूप में परिभाषित किया जाता है – "यह शिक्षार्थियों को जानकारी संप्रेषित करता है जिसकी मूल भावना है – सीखने में सुधार करने के उद्देश्य से उनके चिंतन अथवा व्यवहार को परिमार्जित करना।" (शूट, 2008, पृ. 154) यह प्रतिपुष्टि की पक्रिया का एक हिस्सा है जिसमें शिक्षार्थी प्राप्त जानकारी के आलोक में अपनी प्रतिक्रियाओं का मूल्यांकन करता है और समायोजन करता है। इसका उपयोग इनके लिए किया जा सकता है –

क) ज्ञान में रिक्तियों की पहचान करना

ख) महत्वपूर्ण जानकारी की पहचान के लिए नए शिक्षार्थियों की मदद करना

ग) कार्यविधि संबंधी त्रुटियों अथवा भ्रांतियों को दूर करना

शिक्षक और शिक्षार्थियों दोनों को अनुदेशन के दौरान निरंतर प्रतिपुष्टि उपलब्ध कराने के लिए रचनात्मक आकलन किया जाता है। शिक्षण-पद्धतियों और सीखने संबंधी कार्यकलापों में समुचित संशोधन करने संबंधी निर्णय लेने के लिए भी रचनात्मक आकलन किया जाता है।

- '... अकसर इसका अर्थ इतना ही है कि आकलन अनेक बार किया जाता है और इसकी आयोजना शिक्षण के समय ही की जाती है।' (ब्लैक एँड विलियम,1999)
- '... प्रतिपुष्टि प्रदान करता है जिससे शिक्षार्थियों में (सीखने संबंधी) रिक्तियों को पहचानने और इन्हें दूर करने में मदद मिलती है ...यह आगे की ओर देखता है।' (हारलेन,1998)

- '... इसमें प्रतिपुष्टि और स्व-निगरानी दोनों शामिल हैं।' (सैडलर,1989)
- '... अनिवार्यत: इसका उपयोग शिक्षण और अधिगम-पक्रिया की प्रतिपुष्टि के लिए किया जाता है।' (टूंसटल और गिप्स,1996)

रचनात्मक आकलन की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

- यह निदानात्मक और उपचारात्मक होता है।
- यह प्रभावी प्रतिपुष्टि उपलब्ध कराता है।
- यह शिक्षार्थियों को उनके स्वयं के सीखने में सक्रिय भागीदारिता के लिए मंच उपलब्ध कराता है।
- यह आकलन के परिणामों को देखने के लिए शिक्षकों के शिक्षण को अनुकूल बनाने में मदद करता है।
- यह अभिप्रेरणा और शिक्षार्थियों की आत्म-गरिमा जिनका सीखने पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है - पर आकलन के गहन प्रभाव का पता लगाता है।
- शिक्षार्थियों को अपना आकलन करने की क्षमता की आवश्यकता को पहचानने और उसमें सुधार करने में मदद करता है।
- जो पढ़ाया गया है, उसकी संरचना शिक्षार्थियों के पूर्व ज्ञान और अनुभवों पर आधारित होती है।
- यह निर्धारित करने में कि क्या और कैसे पढ़ाना है - विविध अधिगम शैलियों को शामिल करता है।
- शिक्षार्थियों को वे मानदंड समझने के लिए प्रोत्साहित करता है जिन्हें उनके कार्य की जांच करने के लिए उपयोग में लाया जाएगा।
- यह शिक्षार्थियों को प्रतिपुष्टि मिलने के बाद अपने कार्य में सुधार करने का अवसर प्रदान करता है।
- यह शिक्षार्थियों को अपने सहपाठियों की मदद करने और उनसे मदद लेने में सहयोग करता है।

रचनात्मक आकलन क्यों उपलब्ध कराया जाए?

"...रचनात्मक आकलन शिक्षार्थियों के सीखने में काफी महत्वपूर्ण है। वे क्या करते हैं - इसके बारे में जानकारीपरक प्रतिपुष्टि के बिना उन्हें अपेक्षाकृत काफी कम अवसर मिलता है जिसके द्वारा वे अपने विकास को देख पाएँ।"

- सीखने के लिए अभिप्रेरणा को बढ़ावा देता है।
- ज्ञान में आई रिक्तियों की पहचान करने में शिक्षार्थियों की मदद करता है।
- स्वाध्याय को संवृद्ध करता है।
- वांछित परिणामों को स्पष्ट करता है।
- विशिष्ट भ्रांतियों का निदान करता है।

संक्षेप में, रचनात्मक आकलन शिक्षार्थियों को यह सामंजस्य बिठाने की स्वीकृति देता है कि वे क्या और कैसे सीख रहे हैं। प्रतिपुष्टि का उपयोग यह सामंजस्य बिठाने के लिए भी किया जा सकता है कि आप क्या और कैसे पढ़ाते हैं।

रचनात्मक आकलन...

- सीखने की प्रक्रिया का अंग है।
- सीखने में सुधार करने के लिए उपयोग में लाया जाता है।
- शिक्षार्थियों की आंतरिक अभिप्रेरणा को बढ़ाता है।
- शिक्षण में सुधार करने के लिए उपयोग में लाया जाता है।

रचनात्मक आकलन प्रतिपुष्टि है!

'प्रतिपुष्टि के बिना सीखना एक प्रकार से अंधेरे कमरे में तीर चलाना सीखना है। *(क्रॉस, 1998)*

1. स्पष्ट करता है कि बेहतर निष्पादन क्या है।
2. सीखने में स्व-आकलन(मनन) को सुगम बनाता है।
3. शिक्षार्थियों को उनके सीखने के बारे में उच्च स्तरीय जानकारी देता है।
4. सीखने के बारे में शिक्षक और सहपाठियों के संवाद को प्रोत्साहित करता है।
5. सकारात्मक अभिप्रेरणात्मक विश्वास और आत्म-गरिमा को प्रोत्साहित करता है।
6. वर्तमान और वांछित निष्पादन के बीच के अंतर को समाप्त करने के अवसर उपलब्ध कराता है।
7. शिक्षण में सुधार के लिए शिक्षकों को जानकारी उपलब्ध कराता है।

रचनात्मक आकलन योजना

रचनात्मक आकलन पर बल

↓

शिक्षार्थियों के साथ अधिगम-परिणामों और वांछित अपेक्षाओं की साझेदार

↓

स्पष्टतः परिभाषित मानदंड

↓

उदाहरण और दृष्टांत का उपयोग

↓

विशिष्ट प्रतिपुष्टि देना (जो मदद करेगी)

↓

शिक्षार्थी के स्व-आकलन को शामिल करने में

↓

शिक्षार्थी अपनी प्रगति का रिकॉर्ड रखते हैं

↓

शिक्षक शिक्षार्थियों की प्रगति का रिकॉर्ड रखते हैं।

रचनात्मक आकलन के लिए विशिष्ट अनुशंसाएँ

रचनात्मक आकलन के उद्देश्य को पूरा करने और शिक्षार्थियों को अपने निष्पादन में सुधार करने के योग्य बनाने के लिए शिक्षक को अपने शिक्षण-कार्य के दौरान विविध आकलन-उपकरणों का उपयोग करने की आवश्यकता होती है। यह अनिवार्य है कि शिक्षक प्रत्येक सत्र के दौरान कम से कम तीन से चार आकलन उपकरणों का प्रयोग करें। शिक्षक एक रचनात्मक आकलन में एक लिखित आकलन और दो कार्यकलापों (एक समूह कार्यकलाप और एक व्यक्तिगत कार्यकलाप) का प्रयोग कर सकते हैं। सहयोगी अधिगम को बढ़ावा देने के लिए दो कार्यकलापों में से एक कार्यकलाप सामूहिक कार्यकलाप होना चाहिए शिक्षक को प्रत्येक सत्र के दौरान अपने शिक्षकों को एक सामूहिक परियोजना कार्य देना चाहिए ।

रचनात्मक आकलन के अवयव

प्रत्येक रचनात्मक आकलन में शामिल होना चाहिए –

1. **एक व्यक्तिगत कार्यकलाप** मौखिक/लिखित

   (कार्यपत्रक, वाद–विवाद **आदि**)

2. **एक सामूहिक कार्यकलाप (परियोजना, 'रोल प्ले', समूह–चर्चा, सर्वेक्षण आदि)**

3. **लिखित आकलन**

   - गतिविधियों में प्रश्नोत्तरी, वाद–विवाद, परियोजना, रंगमंच आदि जैसी विविध गतिविधियों को शामिल करना चाहिए।
   - कार्यकलाप में प्रति आकलन एक सामूहिक कार्यकलाप को शामिल करना चाहिए।
   - प्रत्येक सत्र में शिक्षार्थियों को एक बहु–विषयक/अंत:अंतर्विषयक सामूहिक परियोजना को शामिल करना चाहिए।
   - आकलन के उद्देश्य के लिए एक व्यक्तिगत कार्यकलाप और एक सामूहिक कार्यकलाप के सर्वश्रेष्ठ अंकों को लिया जाना चाहिए।
   - अंतिम रचनात्मक आकलन की गणना सर्वश्रेष्ठ अंक (एक व्यक्तिगत कार्यकलाप अथवा एक सामूहिक कार्यकलाप) और लिखित आकलन के अंकों के औसत के रूप में की जानी चाहिए।

आकलन के बहु साधनों, जैसे – दत्त कार्य, प्रश्नोत्तरी, वाद–विवाद, सामूहिक चर्चा, परियोजना आदि के माध्यम से रचनात्मक आकलन किया जाना चाहिए यह बिंदु सभी शिक्षकों तक संप्रेषित किया जाना चाहिए कि सामूहिक कार्यकलाप के रूप में परियोजना कार्य और दत्त कार्य कक्षा में और विद्यालय–समय में ही किए जाने चाहिए रचनात्मक आकलन के अंतर्गत प्रत्येक विषय में केवल एक पेपर–पेंसिल परीक्षा होनी चाहिए आकलन के अन्य तरीके कक्षाकक्षीय अंत:क्रियात्मक कार्यकलापों का हिस्सा होने चाहिए।

विभिन्न विषयों के लिए सुझाव के रूप में कार्यकलापों की सूची नीचे दी गई है। यह सूची पूर्ण नही है, यह केवल संभावित विविधता का अंदाज़ा देने के लिए है –

भाषा

- मौखिक और सुनना – ये श्रवण अवबोधन, भाषण तैयार करना, बातचीत अथवा संवाद हो सकते हैं।

- लिखित दत्त कार्य – लघु और दीर्घ उत्तर वाले प्रश्न, सृजनात्मक लेखन, प्रतिवेदन (रिपोर्ट), समाचार-पत्र में लेख, डायरी लिखना, कविताएँ आदि।
- भाषण – वाद-विवाद, वक्तृत्व कला, पाठ, आशु भाषण आदि।
- शोध-परियोजनाएँ – जानकारी एकत्र करना, निगमनात्मक तर्कणा,
- विश्लेषण और संश्लेषण एवं सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के उपयोग को शामिल करते हुए विभिन्न प्रकारों का प्रयोग करते हुए प्रस्तुति।
- युग्म-कार्य/ सामूहिक कार्य
- सहपाठियों द्वारा आकलन
- पीएसए – भाषा-परम्परा

भाषा में यह सुझाव दिया जाता है कि वार्तालाप के कौशल का आकलन करने के लिए कम से कम कुछ आकलन अवश्य होने चाहिए।

गणित

- समस्या-समाधान, बहुविकल्पी प्रश्न
- आंकड़ा प्रबंधन और विश्लेषण
- जांच-पड़तालपरक परियोजनाएँ
- गणित प्रयोगशाला के कार्यकलाप
- ऑरिगेमी को शामिल करते हुए मॉडल्स
- शोध परियोजनाएँ और प्रस्तुति
- सामूहिक परियोजना कार्य
- सहपाठियों द्वारा आकलन
- सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के उपयोग को शामिल करते हुए प्रस्तुतियां।
- पीएसए – मात्रात्मक तर्कणा

गणित के लिए यह सुझाव है कि कम से कम कुछ रचनात्मक आकलन कार्य गणित प्रयोगशाला-कार्यकलापों पर आधारित होने चाहिए।

विज्ञान

- लिखित दत्त कार्य, बहुविकल्पी प्रश्न-'एमसीक्यूज़'
- प्रयोगात्मक कार्य जिसमें एक या एक से अधिक स्थिति वाले प्रयोग शामिल हो सकते हैं, अवलोकन करना, आंकड़ा प्रबंधन, निगमन करना (मेकिंग डिडक्शन), सुरक्षित रूप से कार्य करना।
- आंकड़े प्राप्त करने के लिए अथवा गुणों की पड़ताल, नियमों, तथ्यों आदि के लिए योजना या रूपरेखा बनाना।
- शोध कार्य जिसमें जाँच करना अथवा सूचना एकत्रित करना और तार्किक अनुमान शामिल हो।
- समूह कार्य- शोध अथवा प्रयोगात्मक
- संदर्भगत शोध परियोजनाएँ
- सहपाठियों द्वारा आकलन करना
- सूचना और संचार तकनीक का प्रयोग करते हुए प्रस्तुति करना
- विज्ञान-प्रश्नोत्तरी
- संगोष्ठी
- सिंपोज़ियम
- क्षेत्र भ्रमण
- वर्ग प्रतिक्रिया
- मॉडल बनाना
- पीएसए - गुणात्मक तर्कणा

विज्ञान के लिए यह सुझाव दिया जाता है कि कम से कम कुछ रचनात्मक आकलन प्रयोग और हस्तपरक गतिविधियों पर आधारित होने चाहिए।

सामाजिक विज्ञान

- लिखित दत्त कार्य – लघु और दीर्घ उत्तर वाले
- कमेंटरी
- स्रोत–आधारित विश्लेषण
- परियोजनाएँ – जांच–पड़तालपरक, जानकारीपरक, निगमनात्मक और विश्लेषणात्मक
- शोध
- समूह कार्य – परियोजनाएँ और प्रस्तुति
- मॉडल्स और चार्ट्स
- सूचना और संचार तकनीक का प्रयोग करते हुए प्रस्तुति करना
- प्रामाणिक स्रोतों और प्राथमिक पाठ्य–वस्तु का प्रयोग
- खुली–पुस्तक परीक्षा
- गौण स्रोत
- तुलना और अंतर
- पीएसए – गुणात्मक तर्कणा

सामाजिक विज्ञान में यह सुझाव दिया जाता है कि कम से कम कुछ आकलन परियोजनाओं पर आधारित होने चाहिए जो शिक्षक के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण में कक्षागत कार्यकलापों के रूप में समूह में की जानी चाहिए।

> ‘एक ऐसी शिक्षा एवं परीक्षा पद्धति आज की ज़रूरत है जो उन अलाभान्वित वर्ग के लोगों में समस्या निराकरण एवं विश्लेषण क्षमता का विकास करे, जो कि रोज़गार उन्मुख बाज़ार के लिए आवश्यक है। पाठ्यपुस्तक को रटना एवं रटे हुए को उगलना, रोजगार उन्मुख बाज़ार के लिए आवश्यक दक्षता नहीं है। इस प्रकार की शिक्षा को बढ़ावा देने वाली परीक्षा पद्धति, रचनात्मकता को समाप्त कर देती है। कौशलों के शिक्षण और उत्कृष्टता की रचना का संभवत: एक ही चिरस्थायी तरीका है – पठन–समता की ओर।’
>
> परीक्षा सुधार, एनसीएफ 2005, एनसीईआरटी

रचनात्मक आकलन के बारे में मिथक

1. **"रचनात्मक आकलन की गिनती नहीं होती।"**

   हो सकता है! रचनात्मक आकलन करते समय ग्रेडिंग नहीं होनी चाहिए, लेकिन शिक्षक के पास ग्रेड के अंग के रूप में रचनात्मक आकलन में शामिल करने के लिए राय या विचार होता है जिन्हें शिक्षार्थी इकाई अथवा कोर्स में अपने अंतिम ग्रेड में जोड़ सकते हैं।

2. **"शिक्षार्थी के सीखने अथवा उपलब्धि पर रचनात्मक आकलन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।"**

   इसका प्रभाव पड़ता है। अध्ययन बताते हैं कि रचनात्मक आकलन को सुदृढ़ करने से सार्थक अधिगम परिणाम प्राप्त होते हैं। साथ ही रचनात्मक आकलन शिक्षार्थियों को अपने अधिगम की निगरानी में मदद करने के माध्यम से आजीवन अधिगम कौशलों को संवृद्ध करता है। (ब्लैक एँड विलियम, 1998, निकोल एँड मैकफारलेन-डिक, 2006)

3. **रचनात्मक आकलन अधिक शिक्षण-समय और श्रम लेता है।**

   यह ज़रूरी नहीं है। रचनात्मक आकलन की तकनीकें अकसर केवल बेहतर शिक्षण तकनीकें हैं। उदाहरण के लिए इसमें शामिल हैं – नियोजित प्रश्न-उत्तर सत्र, संकेतों के माध्यम से शिक्षार्थियों के उत्तरों का अंदाज़ा लगाना अथवा कक्षागत सत्रों से जोड़ते हुए 'ऑन-लाइन मॉड्यूल्स' और स्वाध्याय प्रश्नोत्तर उपलब्ध कराना।

4. **रचनात्मक आकलन = बहुविकल्पी परीक्षाएँ**

   वास्तव में बहुविकल्पी मद या प्रश्न रचनात्मक आकलन के लिए आधार रच सकते हैं। फिर भी, शिक्षार्थियों को स्व-संशोधन और स्वाध्याय के अवसर उपलब्ध कराना रचनात्मक आकलन का एक महत्वपूर्ण अवयव है। अत: 'परीक्षा देना' परीक्षा में हिस्सा लेने जितना अनिवार्य है।

5. **शिक्षार्थी रचनात्मक आकलन से सहमत होंगे।**

   सीखने की अभिप्रेरणा तब वास्तव में बढ़ जाती है जब वे यह देखते हैं कि जो वे सोचते हैं, जो वे जानते हैं और वे वस्तुत: क्या जानते हैं – इनमें अंतर है। इसलिए रचनात्मक परीक्षण से प्राप्त प्रतिपुष्टि सीखने में संवर्धन कर सकती है। (परीक्षण बहुत अधिक बार नहीं होना चाहिए) (इवर्ज़न एवं सहयोगी, 1994, बेंगर्ट डॉन्स एवं सहयोगी, 2005)।

6. **जितना अधिक रचनात्मक आकलन उतना अधिक बेहतर सीखना**

   सही उपकरण और तकनीक के साथ कुछ रचनात्मक आकलन बच्चे की इस रूप में सहायता कर सकते हैं कि वे अपने निष्पादन में सुधार कर सकें।

7. **प्रत्येक रचनात्मक आकलन के दस्तावेज़ीकरण और रिकॉर्ड करने की आवश्यकता है।**

   यह अनिवार्य नहीं है कि रचनात्मक आकलन केवल सुधार करने में बच्चे की मदद के लिए है।

विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग करने के कारण

1. विकास के विभिन्न विषय–क्षेत्रों में अधिगम होता है और विकास के विभिन्न पक्षों का आकलन किया जाना है।
2. हो सकता है कि शिक्षार्थी एक पद्धति की तुलना में दूसरी पद्धति में अपेक्षाकृत बेहतर प्रतिक्रिया कर सकते हैं।
3. शिक्षार्थी के सीखने के बारे में शिक्षकों की समझ बनाने में प्रत्येक पद्धति अपने तरीके से योगदान देती है।

अपने निष्पादन–स्तर में सुधार करने के लिए शिक्षार्थी की मदद करने के लिए विद्यालय शैक्षणिक सत्र के बिल्कुल प्रारंभ से ही रचनात्मक आकलन के माध्यम से उनकी सीखने संबंधी कठिनाइयों का निदान करेंगे और समुचित समय के अंतराल पर अभिभावकों को इसके बारे में बताएँगे। वे शिक्षार्थियों की अधिगम क्षमता को संवर्धित करने के लिए उचित उपचारात्मक उपाय सुझाएँगे। इसी प्रकार अतिरिक्त दत्त कार्य देकर, समृद्ध सामग्री और परामर्श उपलब्ध कराकर प्रतिभाशाली बच्चों को भी और अधिक पुनर्बलन उपलब्ध कराना चाहिए आवश्यक परामर्श और विभिन्न प्रकार के शिक्षार्थियों को संबोधित करने के लिए कक्षा की समय–सारिणी में आवश्यक प्रावधान करने चाहिए शिक्षकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपनी कक्षा के भिन्न तरीके से सक्षम शिक्षार्थियों के लिए रणनीतियों को शामिल करना चाहिए।

कक्षा–अध्यापिका अथवा विषय–अध्यापिका द्वारा व्यवस्थित रूप से रखे जाने वाले कथा–वृत्तांत– अभिलेखों पर आधारित रिकॉर्ड किए गए साक्ष्यों पर रचनात्मक आकलन किया जाना चाहिए।

यह उचित होगा कि शैक्षणिक सत्र के दौरान शिक्षार्थियों और अभिभावकों को संप्राप्ति–स्तर के बारे में बताया जाए जिससे शिक्षार्थियों के निष्पादन में संवृद्धि करने के लिए उनके सहयोग से समय रहते उपचारात्मक उपाय अपनाए जा सकें। **संपूर्ण आकलन के बाद में कक्षा–अध्यापिका द्वारा नकारात्मक आकलन से बचते हुए सकारात्मक और महत्वपूर्ण उपलब्धियों के बारे में विस्तृत टिप्पणी दी जानी चाहिए**

www.FirstRanker.com

इसका तात्पर्य है –

1. शिक्षार्थियों के साथ अधिगम–लक्ष्यों की साझेदारी
2. स्व–आकलन मे शिक्षार्थियों की भागीदारी
3. प्रतिपुष्टि उपलब्ध कराना जिससे शिक्षार्थियों की पहचान हो सकेगी और अगला कदम उठाने का मार्ग बनेगा।
4. आत्मविश्वासी होते हुए, प्रत्येक शिक्षार्थी सुधार कर सकेगा।

रचनात्मक आकलन क्या है?

आइए, दिए गए कार्य को देखें –

विषय : सामाजिक विज्ञान **कक्षा :** VIII

प्रकरण : स्त्री ,जाति और सुधार

कार्य : नाटकीकरण

प्रक्रिया :

1. शिक्षार्थियों को समूहों में विभाजित किया जाएगा। वे अपने समूहों में विभिन्न समय–अवधि में भारतीय समाजों में प्रचलित सामाजिक बुराई में से किसी एक पर लघु नाटिका तैयार करेंगे।
2. सामाजिक बुराई में शामिल हो सकते हैं – सती प्रथा, बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या, स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखना और जेंडर विसंगति (लिंग भेदभाव)।
3. प्रत्येक समूह एक लघु नाटिका तैयार करेगा और उसकी प्रस्तुति करेगा। प्रत्येक शिक्षार्थी को कुछ संवाद बोलने के लिए कहा जाएगा।
4. प्रस्तुति के बाद शिक्षार्थी चर्चा करेंगे।

अधिगम–परिणाम – शिक्षार्थी इस योग्य बन सकेंगे कि वे

- विभिन्न समय–अवधियों में भारत में प्रचलित सामाजिक बुराइयों की अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकें।
- सामाजिक बुराइयों पर मनन कर सकेंगे और अपनी भावनाओं को शब्दों में अभिव्यक्त कर सकें।

अभीष्ट समय

- चर्चा और आलेख लिखना : 2 कालांश
- प्रस्तुति : 1 कालांश

कौशल : शिक्षार्थियों में म्निलिखित की योग्यता का विकास करना –

- आलेख लिखना
- संवाद बोलना
- अभिनय
- समूह (टीम) में कार्य करना

आकलन के मानदंड

समूहों के प्रदर्शन का आकलन विषय-वस्तु, संवाद अदायगी और संकल्पना के स्पष्टीकरण के आधार पर किया जाएगा।

अनुवर्तन/प्रतिपुष्टि

कक्षा द्वारा प्रस्तुतियों पर चर्चा की जा सकती है। जहां भी संकल्पना स्पष्ट न हो, वहां शिक्षक शिक्षार्थियों को अपनी टिप्पणी देने के लिए कह सकते हैं। शिक्षक पाठ के किसी भी भाग को दुबारा समझा सकते हैं जो शिक्षार्थियों द्वारा स्पष्ट रूप से न समझे गए हों।

यह रचनात्मक आकलन कार्य है अथवा योगात्मक आकलन कार्य?

इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं –

- इसका मुख्य उद्देश्य है – शिक्षार्थियों को विभिन्न समय-अवधियों में भारत में बालिका और स्त्रियों के विरुद्ध सामाजिक बुराइयों की संकल्पना को समझने के योग्य बनाना।
- यह कार्यकलाप स्त्री, जाति और सुधार पर आधारित प्रकरण की शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया का हिस्सा है।
- यह कार्यकलाप शिक्षार्थियों को सामूहिक अंत:क्रिया और प्रस्तुति में शामिल करता है।
- कार्यकलाप समाप्त होने के बाद शिक्षक सुधार के लिए प्रतिपुष्टि देते हैं। यदि आवश्यक हो तो पाठ पर पुनर्विचार भी किया जा सकता है।

- स्पष्ट रूप से परिभाषित मानदंडों के आधार पर आकलन किया जाता है।
- यह कार्यकलाप पाठ के एक भाग के रूप में कक्षा में किया जाता है।
- कार्य का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों के ज्ञान का मापन करना नहीं है। कार्य का लक्ष्य है–आनुभविक अधिगम के माध्यम से शिक्षार्थियों को संकल्पनात्मक स्पष्टता उपलब्ध कराना।
- यह अधिगम को और अधिक प्रोत्साहित करता है।

ये विशेषताएँ रचनात्मक आकलन का मूल हैं।

आइए, परीक्षा में दिए गए निम्नलिखित प्रश्नों को देखें –

विभिन्न समय-अवधि में भारतीय समाज में प्रचलित सामाजिक बुराइयां कौन-सी हैं? इन्होंने स्त्रियों और बालिकाओं को किस प्रकार प्रभावित किया है? अपना उत्तर कम से कम 200 शब्दों में लिखिए।

यह एक ठेठ सवाल है जिसे योगात्मक परीक्षण अथवा परीक्षा में दिया गया है। यहां मुख्य उद्देश्य है – परीक्षा में दिए गए पाठ में शिक्षार्थियों के ज्ञान की सीमा का मापन करना। मूल्य-बिंदुओं और अंक-योजना के आधार पर शिक्षार्थियों के उत्तरों को अंक अथवा ग्रेड दिए जाएँगे। शिक्षक द्वारा एकत्र की गई जानकारी को उन समस्याओं के निदान के लिए प्रयोग में नहीं लाया जा सकता जिनका सामना शिक्षार्थियों द्वारा किया गया अथवा उपचार के लिए भी नहीं इस जानकारी का प्रयोग किया जा सकता, क्योंकि परीक्षा का आयोजन प्राय: इकाई अथवा पाठ पूरा करने के बाद किया जाता है।

लेकिन यदि पाठ के दौरान प्रकरण पर आधारित लघु प्रश्नोत्तरी अथवा परीक्षा का आयोजन किया जाता है, यह जांचने अथवा सुनिश्चित करने के लिए कि सीखने में कौन-सी रिक्तियां रह गई हैं और जिसका उद्देश्य शिक्षार्थियों की मदद करना है तो यह अपनी प्रकृति में रचनात्मक होगा। अत: एक प्रकार से उपकरण का जिस प्रकार से प्रयोग किया गया है, जैसे – सीखने को संवर्धित करने के लिए, सीखने की मात्रा को सुनिश्चित करने अथवा मापने के लिए, यह निर्णय करने के लिए कि यह रचनात्मक आकलन के लिए है या योगात्मक आकलन के लिए ।

क्या नहीं है रचनात्मक आकलन ?

यह देखा गया है कि सतत मूल्यांकन के नाम पर विद्यालय 'परीक्षाओं' की एक श्रृंखला का आयोजन करते हैं। ये परीक्षाएँ शैक्षणिक सत्र के लगभग सप्ताह के हर दिन अथवा लगभग हर महीने आयोजित की जाती हैं। इसके बारे में यह तर्क दिया जाता है कि केवल निरंतर परीक्षाओं के आयोजन के द्वारा ही सतत आकलन सुनिश्चित

किया जा सकता है। लेकिन इस प्रकार की परीक्षाओं को रचनात्मक आकलन नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ये शिक्षण–अधिगम–प्रक्रिया के साथ एकीकृत नहीं हैं। ना ही इस प्रकार की परीक्षाओं से शिक्षक द्वारा एकत्रित जानकारी को शिक्षण–अधिगम–प्रक्रिया को संवर्धित करने के लिए प्रभावी और व्यवस्थित तरीके से उपयोग में लाया जा सकता है।

केस अध्ययन

कक्षा IX के शिक्षार्थियों को विज्ञान में निम्नलिखित परियोजना कार्य दिया गया –

संचारी रोगों पर आधारित परियोजना कार्य

- पुस्तकों और शोध पत्रिकाओं (जरनल्स) का अध्ययन कर और इंटरनेट पर सर्फिंग कर संचारी रोगों के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए।
- चित्रांकन, पिक्चरर्स और फोटोग्राफ्स के साथ जानकारी को एक फोल्डर में प्रस्तुत कीजिए।
- फोल्डर्स 15 दिनों में मूल्यांकन के लिए जमा कर दिए जाने चाहिए।

निम्नलिखित मानदंडों के आधार पर फोल्डर्स का मूल्यांकन किया जाएगा –

विषय–वस्तु, प्रस्तुति और चित्रांकन की सफाई।

शिक्षार्थी व्यक्तिगत रूप से कार्यकलाप पूरा करके तय अवधि तक फोल्डर्स जमा कर देते हैं। शिक्षिका आकलन मानदंड के अनुसार शिक्षार्थियों के कार्य को ग्रेड देती है।

प्रश्न :

- क्या यह एक अच्छा रचनात्मक कार्यकलाप है?
- इस कार्यकलाप को करने में शिक्षार्थियों को शिक्षक और सहपाठी–समूह की मदद किस प्रकार मिलती है।
- इस परियोजना कार्य के क्या उद्देश्य हैं?
  - जानकारी एकत्र करने और उन्हें प्रस्तुत संबंधी शिक्षार्थियों की योग्यता का आकलन करना?

    अथवा

  - शिक्षार्थियों को अपने अधिगम को गहनता प्रदान करने योग्य बनाना।

www.FirstRanker.com

यदि परियोजना का उद्देश्य शिक्षार्थियों की इस रूप में मदद करना है कि वे प्रकरण की गहन समझ अर्जित कर सकें तब परियोजना को भिन्न तरीके से संरचित करना चाहिए

- शिक्षक को शिक्षार्थियों के साथ परियोजना के बारे में चर्चा करनी चाहिए।
- वे उन तरीकों की खोज करेंगे कि जिनसे जानकारी को एकत्र किया जा सकता है, समझा जा सकता है और उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जा सकता है।
- समूह कार्य के लिए अवसर उपलब्ध कराना जिससे शिक्षार्थी सहयोगात्मक रूप से प्रकरण का अध्ययन कर सकें और एक-दूसरे की मदद एवं सहयोग कर सकें।
- शिक्षक नियमित अंतरालों पर संपूर्ण प्रक्रिया की निगरानी करता है, सुधार, संशोधन और परिमार्जन के लिए प्रतिपुष्टि देता है।
- फोल्डर जमा कराने के अतिरिक्त शिक्षार्थियों को कक्षा के समक्ष प्रस्तुति अथवा मौखिक परीक्षा देने की आवश्यकता होगी।
- सहपाठी-आकलन में शिक्षार्थियों को शामिल करते हुए आकलन किया जाता है।
- शिक्षक और शिक्षार्थियों द्वारा एकत्र की गई जानकारी आगे शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया में और अधिक सुधार करने के लिए उपयोग लाया जाता है।

इस प्रकार की परियोजनाओं और दत्त कार्यों से संबंधित एक मुख्य मुद्दा यह है कि शिक्षक के पास यह सुनिश्चित करने की गुंजाइश बहुत कम होती है कि ये कार्य स्वयं शिक्षार्थियों द्वारा किए गए हैं। अब यह एक सामान्य बात है कि परियोजनाओं और दत्त कार्यों को दुकानों से 'खरीदा' भी जा सकता है। अभिभावकों द्वारा परियोजना कार्य किए जाने के उदाहरण भी अब सामान्य हैं। इसके अलावा इंटरनेट से जानकारी डाउनलोड करने से भी अधिगम बहुत कम होता है।

अतः रचनात्मक आकलन के प्रभावी उपकरण के रूप में परियेजना कार्य और दत्त कार्य का प्रयोग करने के लिए शिक्षक कुछ सावधानियां बरतें -

- शिक्षक के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण में शिक्षार्थी विद्यालय में ही कार्य को पूरा करें।
- शिक्षार्थियों के साथ परियोजना कार्य पर चर्चा करें और प्रत्येक चरण पर उनकी प्रगति की निगरानी करें।
- स्व और सहपाठी-आकलन के माध्यम से उन्हें आकलन-प्रक्रिया में शामिल करें।

www.FirstRanker.com

- अनुदेशनात्मक रणनीति के रूप में वर्णनात्मक प्रतिपुष्टि दें जिससे शिक्षार्थी अपने अधिगम में और उन्नति कर सकें।
- कार्य और अपने अनुभवों के साथ अपने कक्षागत अधिगम को जोड़ने में शिक्षार्थियों की मदद करना।
- कार्यकलापों के साथ अनुवर्तन करना, जैसे – कुछ संकल्पनाओं पर दुबारा चर्चा करना, व्याख्या करना आदि।

इस संदर्शिका में क्या है?

सत्र 2009–10 में कक्षा IX में के.मा.शि.बो. से मान्यता प्राप्त विद्यालयों में सतत और समग्र आकलन की शुरुआत करने के बाद बोर्ड ने यह अनुभव किया कि यह ज़रूरी है कि सभी हितधारियों (स्टेकहोल्डर्स), विशेषत: शिक्षकों को सतत और समग्र आकलन की एक समग्र तस्वीर उपलब्ध कराई जाए। अत: सतत और समग्र आकलन – कक्षा IX और X की शिक्षक संदर्शिका लाई गई। सीसीई योजना के बारे में विस्तृत जानकारी देने के अतिरिक्त शैक्षिक और सह–शैक्षिक क्षेत्रों में आकलन के आधारभूत तत्वों, आकलन के विद्यालय–आधारित आकलन के आयाम और रचनात्मक एवं योगात्मक प्रयोजनों के लिए मूल्यांकन के उपकरण और तकनीकों को भी इस संदर्शिका में शामिल किया गया है। रचनात्मक और योगात्मक आकलन के लिए भारांक का सत्रानुसार आबंटन को भी इसमें शामिल किया गया है।

इस प्रकाशन के अनुक्रम में बोर्ड ने कक्षा IX और X के लिए भाषाओं, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में रचनात्मक आकलन पर उदाहरणपरक और व्याख्यात्मक सामग्री उपलब्ध कराने के लिए संदर्शिका की एक शृंखला निकालने का निर्णय लिया। बोर्ड ने इसके प्रकाशन के बाद से हितधारियों (स्टेकहोल्डर्स) से रचनात्मक आकलन संदर्शिकाओं पर अनेक टिप्पणियां और सुझाव प्राप्त किए और इसलिए उन्हें संशोधित करने का निर्णय लिया। बोर्ड से मान्यता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों से प्रत्येक कार्यकलाप/कार्य पर व्यापक प्रतिपुष्टि प्राप्त की गई और उसके प्रकाश में संशोधित संस्करण आया।

हमारा लक्ष्य है – इस संदर्शिका के माध्यम से रचनात्मक आकलन को सुदृढ़ करना और शिक्षकों को रचनात्मक आकलन के लिए विस्तृत दिशा–निर्देश एवं सहायक सामग्री उपलब्ध कराना।

रचनात्मक आकलन पर शिक्षक संदर्शिका के उद्देश्य

1. सतत और व्यापक आकलन की व्यापक रूपरेखा में रचनात्मक आकलन की संकल्पना को स्पष्ट करना।

2. निर्धारित सामग्री और कक्षा-पद्धतियों के साथ रचनात्मक आकलनों (एफए 1, एफए 2, एफए 3, और एफए 4) को एकीकृत करना।

3. शिक्षण-अधिगम-पक्रिया में संवर्धन के लिए रचनात्मक आकलन का उपयोग करने के लिए शिक्षकों और शिक्षार्थियों की मदद करना।

4. कक्षा IX और X के लिए भाषाओं, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में इकाई/पाठ के लिए रचनात्मक आकलन के कार्यकलापों के समृद्ध स्रोत उलब्ध कराना।

5. संदर्शिका में दिए गए रचनात्मक आकलन संबंधी कार्यों का उपयोग करने में शिक्षकों की मदद करना जिससे वे स्वयं अन्य कार्यों का निर्माण कर सकें।

6. रचनात्मक और योगात्मक आकलन संबंधी संकल्पना का स्पष्टीकरण प्राप्त करने में शिक्षकों की मदद करना।

7. सामग्री और पद्धतियों को बेहतर बनाने के लिए शिक्षकों को क्षमता-वृद्धि के लिए प्रेरित करना।

8. प्रभावी समय-प्रबंधन में शिक्षकों की मदद करना।

9. रचनात्मक और योगात्मक आकलन को व्यवस्थित ढंग से अभिलेखन (रिकॉर्ड) के लिए विद्यालयों को आवश्यक दिशा-निर्देश उपलब्ध कराना।

10. आकलन के साथ-साथ परामर्श और संवर्धन के लिए शिक्षकों के विकास हेतु अवसर उपलब्ध कराना।

11. विभिन्न हितधारकों के बीच सतत और समग्र आकलन तथा इस योजना में रचनात्मक आकलन के स्थान पर स्वस्थ एवं सार्थक अंत:क्रिया आरंभ करना।

12. शिक्षकों और शिक्षार्थियों - दोनों के लिए शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया को आनंददायक बनाना।

इस संदर्शिका का उपयोग कैसे करें?

जैसा कि पहले स्पष्ट किया गया है कि इस संदर्शिका में सभी मुख्य शैक्षिक विषयों में कक्षा IX और X के लिए रचनात्मक आकलन के अनेक कार्यकलाप शामिल हैं। शिक्षक न केवल अधिगम का आकलन करने के लिए बल्कि स्वयं अपने शिक्षण की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए भी योजनाबद्ध तरीके से इनका उपयोग कर सकते हैं। रचनात्मक कार्यों के प्रभावी प्रयोग के लिए नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं -

www.FirstRanker.com

क. योजना

शैक्षिक सत्र के प्रारंभ में एक ही विषय के शिक्षक आपस में विचार-विमर्श कर सकते हैं और पूरे सत्र के लिए रचनात्मक आकलन की योजना बना सकते हैं। इस संदर्शिका में प्रत्येक विषय के लिए सुझाव के तौर पर वार्षिक योजना दी गई है। प्रत्येक विद्यालय द्वारा बनाई गई वार्षिक योजना में निम्नलिखित विवरण होने चाहिए -

- एफए 1, एफए 2, एफए 3 और एफए 4 के लिए कितने रचनात्मक कार्यों का प्रयोग किया जाएगा? (कार्यों की संख्या सुझाई गई न्यूनतम संख्या से कम नहीं होनी चाहिए)
- संदर्शिका में से निर्धारित कार्य (शिक्षक संदर्शिका में दिए गए कार्यों के अतिरिक्त स्वयं अपने कार्यों को जोड़ने के लिए स्वतंत्र हैं।)
- कार्यों को निर्धारित/चुनते समय वैविध्यपूर्ण चयन की सावधानी बरतनी चाहिए जिससे ज्ञान और कौशलों को व्यापक रूप से शामिल किया जा सके तथा इसमें एकरसता की स्थिति न हो। उदाहरण के लिए, भाषाओं में पढ़ने, लिखने, बोलने और सुनने जैसे विभिन्न कौशलों एवं भाषा-क्षेत्र, जैसे-साहित्य तथा व्याकरण को रचनात्मक आकलन में शामिल किया जाना चाहिए इस योजना में चार रचनात्मक कार्यों में कार्यों को इस प्रकार बांटा जाना चाहिए कि इन सभी पक्षों का आकलन सत्र के दौरान कम से कम दो या तीन बार किया जा सके। इसी प्रकार अन्य विषयों में भी कार्यों का चयन इस प्रकार किया जाना चाहिए जिससे वे आकलन के विविध माध्यमों का प्रयोग करते हुए विभिन्न कौशलों और दक्षताओं का आकलन कर सकें।

ख. कक्षाकक्षीय रणनीतियां

चूंकि कार्यों को कक्षागत अनुदेशों के साथ एकीकृत किया जाना है, अत: शिक्षकों को अपनी पाठ-योजना में उन्हें अंत:स्थापित करना होगा। संदर्शिका में दी गई कार्य-विशिष्टियों का प्रयोग शिक्षकों द्वारा निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है -

अधिगम-परिणाम - ये प्रत्येक कार्य के लिए अधिगम-परिणामों को निर्दिष्ट करते हैं और इस प्रकार ये ध्यानकेंद्रित करने में शिक्षकों और शिक्षार्थियों की मदद करते हैं।

आकलन करने समय इन्हें ध्यान में रखना ज़रूरी है।

अभीष्ट समय - शिक्षक के लिए यह जानना ज़रूरी है कि एक कार्य को पूराकरने में कितने समय की

आवश्यकता है, क्योंकि यह योजना बनाने और एक क्षण व्यर्थ किए बिना कार्य की क्रियान्विति में मदद करता है।

प्रक्रिया – प्रदत्त कार्य के लिए शिक्षक को भी कुछ तैयारी की आवश्यकता हो सकती है। इन्हें 'प्रक्रिया' के अंतर्गत शामिल किया गया है। इस शीर्षक के अंतर्गत लिए जाने वाले विभिन्न चरणों, बरती जाने वाली सावधानियों और जानकारी एकत्र करने के लिए सुझावों को भी उपलब्ध कराना गया है।

आकलन के मानदंड

आकलन को वस्तुनिष्ठ और व्यवस्थित बनाने के लिए प्रत्येक कार्य के लिए प्रस्तावित अंकों के साथ विशिष्ट मानदंड उपलब्ध कराए गए हैं। यह अनिवार्य है कि शिक्षक कार्य शुरू करने से पहले इन मानदंडों को प्रस्तुत करे अथवा कक्षा में पढ़कर सुनाए। शिक्षार्थियों को यह जानना चाहिए कि किन आधारों पर उनका आकलन किया जाएगा। इससे उन्हें कार्य की स्पष्टता भी होगी। शिक्षार्थियों द्वारा प्रत्येक कार्य में प्राप्त किए गए अंकों का अभिलेखन (रिकॉर्ड)किया जाना चाहिए आकलन-अभिलेख (रिकॉर्ड) का रख-रखाव भी होना चाहिए जब भी लिखित सामग्री तैयार होती है तो उसे शिक्षार्थी के पोर्टफोलियो का हिस्सा बनाया जा सकता है।

प्रतिपुष्टि/अनुवर्तन

यह रचनात्मक आकलन का महत्वपूर्ण चरण है। शिक्षार्थियों का निष्पादन उनकी समझ, संकल्पनात्मक स्पष्टता, समस्याओं और अधिगम-रिक्तियों(गैप्स) के बारे में मूल्यवान जानकारी देता है। इस जानकारी के आधार पर शिक्षक प्रतिपुष्टि दे सकते हैं और उपचार एवं संवर्धन के लिए अनुवर्ती कार्यकलाप आयोजित कर सकते हैं। यह जानकारी शिक्षकों को इस रूप में समर्थ भी बनाएगी कि वे सीखने की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए अपने शिक्षण-अभ्यासों में संशोधन कर सकें।

ग. कुछ चुनौतियां

शिक्षकों के समक्ष रचनात्मक आकलन को अपने शिक्षण में समेकित करने में कुछ चुनौतियां आ सकती हैं। ये चुनौतियां इनके कारण हो सकती हैं –

- कक्षा में शिक्षार्थियों की अधिक संख्या
- समय की कमी

- प्रचालन-तंत्र (लोजिस्टिक्स) के कारण बाधाएँ
- समूह/जोड़ों में कार्य का आकलन करने की रणनीतियां

समुचित योजना की सहायता से इन चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं-

- ऐसे कार्य चुनें जिसमें समूह में और जोड़ों में कार्य करना शामिल हो।
- ऐसे कार्य जिनमें शिक्षार्थियों की ओर से लिखित उत्तर की आवश्यकता है, उनका आकलन सहपाठियों द्वारा किया जा सकता है।
- बहुविकल्पी और अन्य वस्तुनिष्ठ प्रकार वाले प्रश्नों के उत्तरों को शिक्षार्थियों द्वारा परस्पर कार्य-पत्रकों का आदान-प्रदान करते हुए स्वयं जांचा जा सकता है और शिक्षक सही उत्तर बताएँगे।
- एक कालांश में सभी शिक्षार्थियों का आकलन करने की आवश्यकता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि कार्य को शिक्षार्थियों के समूहों में बांटा जा सकता है जिससे शिक्षक विभिन्न कालांशों में उनका आकलन कर सकेंगे। इसका एक निहितार्थ यह है कि बड़ी संख्या वाली कक्षाओं में सभी कार्यों में सभी शिक्षार्थियों का आकलन करना ज़रूरी नहीं है। कार्यों की ध्यानपूर्वक बनाई गई योजना से शिक्षार्थियों के समूहों में बारी-बारी से कार्यों को बांटते हुए सभी कौशलों को शामिल किया जा सकता है।
- इससे पता लगता है कि एक समय में समान कार्य में सभी शिक्षार्थियों को शामिल नहीं किया जाना चाहिए बहुबुद्धि की आवश्यकता को पूरा करने के लिए शिक्षक शिक्षार्थियों को दिए जाने वाले कार्यों के प्रति लचीले उपागम को अपना सकते हैं। उदाहरण के लिए, जो शिक्षार्थी लिखित कार्य में बेहतर हैं उन्हें उन शिक्षार्थियों से अलग कार्य दिया जा सकता है जो व्यावहारिक कार्यों में बेहतर हैं।
- समय-सारिणी बनाते समय प्रत्येक विषय में दो कालांशों को एक साथ भी दिया जा सकता है। इन कालांशों में ऐसे कार्य करवाए जा सकते हैं जिनमें वाद-विवाद, प्रस्तुतीकरण, समूह-चर्चा, नाटकीकरण, भूमिका-निर्वाह(रोल प्ले) आदि शामिल हों।

समय-प्रबंधन

चूंकि प्रत्येक विषय के लिए कालांशों की संख्या पूर्व निर्धारित होती है, अत: शिक्षकों को ऐसा महसूस हो सकता है कि आबंटित कालांशों में रचनात्मक आकलन-कार्यों को आयोजित करना कठिन हो सकता है। फिर भी यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि रचनात्मक आकलन शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया में ही निर्मित

किया जाए और यह केवल पाठ्यचर्या-संपादन के लिए अपनाई गई पद्धति में बदलाव को प्रदर्शित करता है। व्ययख्याओं और शिक्षक-केंद्रित शिक्षण को कम करते हुए कार्यों और कार्यकलापों के लिए पर्याप्त समय निकाला जा सकता है। कुछ अन्य सुझाव इस प्रकार हैं –

- उचित योजना से दक्ष समय-प्रबंधन किया जा सकेगा।
- कक्षा आरंभ करने से पहले प्रत्येक कार्य के लिए तैयारी पहले ही पूरी कर ली जाए जिससे समय व्यर्थ ना हो।
- स्व और सहपाठी-आकलन का युक्तिसंगत रूप से प्रयोग करें।
- सत्र के शुरुआती भाग में शिक्षार्थियों को एक-दूसरे और शिक्षक के साथ सहयोग करने के लिए प्रशिक्षित करें। कुछ समय बाद वे दक्षता और तेज़ गति को बनाए रख सकेंगे।
- यह अनिवार्य है कि शैक्षणिक सत्र की शुरुआत में ही शिक्षार्थियों के नाम के साथ अंक पत्र वार्षिक योजना के अनुसार तैयार कर लिए जाएँ। प्रत्येक आकलन के लिए चुने गए एफए 1, एफए 2, एफए 3 और एफए 4 के लिए कार्यों के विवरण सा कॉलम में दिए जाएँ और अधिकतम अंक लिखे जाएँ जिससे अंकों को दर्ज़ करने में बहुत अधिक समय ना लगे।
- शिक्षार्थियों को अपने पोर्टफोलियो बनाने के लिए प्रशिक्षित करें। प्रत्येक विषय के लिए एक फोल्डर बनाया जा सकता है जिसमें प्रत्येक शिक्षार्थी द्वारा अपने सर्वश्रेष्ठ लिखित कार्य को रखा जा सकता है। जब रिकॉर्ड रखने की ज़िम्मेदारी उठाने में शिक्षार्थियों को मदद मिलती है तो वे बेहतर समय-प्रबंधन के अलावा शिक्षक का कुछ भार भी कम कर सकते हैं।

प्रचालन-तंत्र (लोजिस्टिक्स)

सभी विद्यालयों में कार्य-पत्रकों की फोटोकॉपी करना संभव न हो। शिक्षकों को इस समस्या से उबरने के लिए कुछ रणनीतियों को अपनाना होगा।

सुझाव

- केवल विस्तृत कार्य-पत्रक और वे कार्य-पत्रक जिनमें आरेख और चित्र हैं, उन्हीं की फोटोकॉपी करवाने की ज़रूरत होती है। जब भी संभव हो, कार्य-पत्रक को ब्लैकबोर्ड पर लगाया जा सकता है। यदि तकनीक उपलब्ध है तो कार्य-पत्रक को एलसीडी की सहायता से प्रदर्शित किया जा सकता है।

www.FirstRanker.com

- बहुविकल्पी और वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को पढ़ा जा सकता है और शिक्षार्थियों को पेपर पर केवल उत्तर लिखने का निर्देश दिया जा सकता है।
- जोड़ों में कार्य करने, समूह-कार्य और पूरी कक्षा द्वारा कार्य करने के लिए निर्देशों को एक या दो बार पढ़ा जा सकता है।
- अग्रिम रूप में ही फोटोकॉपी की आवश्यकताओं को प्राचार्य और विद्यालय-प्रशासन को बता दें जिससे विद्यालय समुचित प्रबंध कर सके।
- फोटोकॉपी के लिए हमेशा कागज़ के दोनों तरफ का प्रयोग करें। इसका अर्थ है कि एक कागज़ पर एक से अधिक कार्य फोटोकॉपी होगी। जब शिक्षार्थी एक कार्य को पूरा कर लें तब इन कार्य-पत्रकों को ले लिया जाए और दूसरे कार्य के लिए दुबारा से कार्य-पत्रक बांट दिए जाएँ।
- जब भी संभव हो, एक कार्य-पत्रक को दो शिक्षार्थियों द्वारा बांटा जा सकता है।
- शिक्षार्थियों को कागज़/कार्य-पत्रक को किफायत से बरतने के लिए प्रशिक्षित करें।

घ. समूह/जोड़ों में कार्य करने के आकलन की रणनीतियां

प्रारंभ में शिक्षकों के लिए समूह/जोड़ों में कार्यों का आकलन करना कुछ कठिन हो सकता है, क्योंकि इसका परिणाम एक से अधिक शिक्षार्थियों को मिलता है। इस संबंध में शिक्षकों की मदद करने के लिए नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं-

- जब भी संभव हो, समूह-कार्य और जोड़े में किए जाने वाले कार्यों को छोटे भागों में बांट सकते हैं और समूह के प्रत्येक सदस्य को एक भाग पर कार्य करने के लिए कहा जा सकता है।
- जहां उपयुक्त तरीका संभव न हो, वहां समूह के प्रत्येक सदस्य के योगदान का अवलोकन और निगरानी की जाए।
- अकसर समूह-चर्चा के बाद प्रत्येक समूह द्वारा प्रस्तुति की जाए यह ध्यान रखा जाए कि प्रस्तुतीकरण की ज़िम्मेदारी बारी-बारी से सभी शिक्षार्थियों के पास आए जिससे एक समय के बाद सभी को अपने समूह के विचार प्रस्तुत करने का अवसर मिल सके।
- सामूहिक कार्य का आकलन पूरे समूह/जोड़ों के लिए किया जा सकता है। इसका अर्थ यह है कि समूह के प्रत्येक सदस्य को समान अंक या ग्रेड मिलेंगे। जबकि जोड़ों में करने वाले कार्यों में व्यक्तिगत निष्पादन का आकलन करना आसान होता है।

www.FirstRanker.com

- चूंकि रचनात्मक कार्य अनौपचारिक होता है अत: समूह-कार्य का आकलन व्यापक मानदंडों पर किया जा सकता है, जैसे – भागीदारिता, योगदान और समूह के प्रत्येक सदस्य की प्रभावशीलता।
- यह आवश्यक है कि शिक्षक समूह-कार्य की निगरानी समुचित रूप से करें जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रत्येक शिक्षार्थी कार्य में हिस्सा ले रहा है और कोई शिक्षार्थी अपना प्रभुत्व नहीं बना रहा।

निष्कर्ष

इस संदर्शिका में शिक्षक की तैयारी, योजना और समन्वय पर बल दिया गया है। यह सुझाव दिया जाता है कि वार्षिक योजना बनाते समय प्राचार्य प्रत्येक विषय-समिति से बातचीत करें और कार्य-योजना बनाने में शिक्षकों की मदद करें ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि आकलन को शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया में एकीकृत किया गया है।

यह भी अनिवार्य हो सकता है कि पहले और दूसरे सत्रों के अतिरिक्त प्रत्येक इकाई/पाठ के लिए विस्तृत पाठ-योजनाओं को तैयार किया जाए जबकि पाठ-योजना प्रत्येक शिक्षक द्वारा विकसित नवाचारी उपकरण के रूप में हो जो पढ़ाई जाने वाली संकल्पनाओं, शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं और अन्य समाज-सांस्कृतिक कारकों पर आधारित होगी। शायद यह उपयुक्त होगा कि पाठ-योजना में सतत और समग्र आकलन को समेकित करने के लिए इसमें कुछ व्यापक क्षेत्रों को शामिल किया जाए पाठ-योजना के प्रारूप के साथ इन व्यापक क्षेत्रों का निर्धारण प्रत्येक विद्यालय द्वारा किया जा सकता है, समग्र योजना को सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित तत्वों को शामिल किया जा सकता है-

- विषय-वस्तु/प्रकरण/पाठ
- संकल्पनाएँ/कौशल
- स्तर- प्रवेश, प्रक्रिया, समेकन, बहिर्गमन
- उपचार

यह भी सुझाव दिया गया है कि रचनात्मक कार्य का आकलन दस अंकों या दस के गुणकों में किया जा सकता है जिससे भारोक की गणना में आसानी हो सके। इसी प्रकार सूचना और संचार तकनीक (आईसीटी) को समेकित करते हुए तथा शिक्षार्थी स्व-अभिगम्य उपकरणों के विकास के माध्यम से शिक्षार्थियों द्वारा स्व-आकलन को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए इससे शिक्षार्थियों को स्वायत्ता के भरपूर अवसर मिलेंगे और

शिक्षकों का भार भी कम होगा। अंत में परियोजनाओं के बारे में कुछ बातें। यह दस्तावेज़ यह बताता है कि जहां तक संभव हो परियोजनाओं को विद्यालय में ही किया जाना चाहिए लेकिन कुछ परियोजनाएँ ऐसी होती हैं जिनमें गहन शोध और स्वयं कार्य करने तथा विभिन्न सामग्रियों का प्रयोग करने की आवश्यकता होती है जिन्हें विद्यालयी समय में पूरा करना कठिन होता है। चूंकि यहां मुख्य सरोकार शिक्षार्थियों द्वारा आकलन के लिए जमा किए गए कार्य की वास्तविकता और साख है। यदि शिक्षक द्वारा परियोजना-कार्य की निगरानी में पर्याप्त सावधानी बरती जाए जो परियोजना कार्य का कुछ भाग विद्यालय से बाहर करने के लिए शिक्षार्थियों को अनुमति दी जा सकती है। इस संदर्शिका में इस विषय से संबंधित बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में विस्तृत दिशा-निर्देश दिए गए हैं। परियोजनाओं को यथार्थवादी और सरल बनाते हुए शिक्षक शिक्षार्थियों के कार्य की प्रामाणिकता को सुनिश्चित कर सकते हैं।

रचनात्मक आकलन

महत्वपूर्ण नोट्स

- यह अनुशंसित किया जाता है कि शिक्षक न्यायपूर्ण तरीके से प्रति इकाई अथवा पाठ के अनुसार रचनात्मक कार्यों और कई कार्यों का चयन करते हैं जिससे विभिन्न कौशलों और अधिगम–परिणामों को शामिल किया जा सके।
- यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक पाठ/इकाई के लिए सुझाए गए सभी कार्यों को कक्षा में आयोजित किया जाए और ना ही यह आवश्यक है कि सभी कार्यों/कार्यकलापों का आकलन या अंकित किया जाए फिर भी, शिक्षार्थी उन कार्यकलापों/कार्यों से परिचित होने चाहिए जिन्हें आकलन के लिए ध्यान में रखा जाएगा।
- कार्यकलाप शिक्षण–अधिगम–प्रक्रिया में ही शामिल होने चाहिए और कक्षागत प्रक्रियाओं का अभिन्न हिस्सा होने चाहिए।
- प्रत्येक कार्य के अंकों का निर्धारण शिक्षकों द्वारा किया जा सकता है, लेकिन प्रत्येक रचनात्मक आकलन के भारांक की गणना दस प्रतिशत के लिए की होनी चाहिए।
- रचनात्मक आकलन से संबंधित सभी कार्यकलाप, जैसे – प्रश्नोत्तरी, परियोजनाएँ, भूमिका–निर्वाह (रोल प्ले), आलेख (स्क्रिप्ट) लिखना आदि 'कक्षा में' और 'विद्यालय में' ही की जानी चाहिए और शिक्षक द्वारा इनका अवलोकन किया जाना चाहिए

पोर्टफोलियो में शामिल हो सकते हैं –

- फोटोग्राफ्स – शिक्षार्थियों के विकास के संवेगात्मक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पक्षों के बारे में अंतर्दृष्टि उपलब्ध कराते हैं।
- पेंटिंग्स और कलात्मक उद्यमों के अन्य उदाहरण – शिक्षार्थियों की योग्यताओं, विचारों और अभिवृत्तियों के साक्ष्य उपलब्ध कराते हैं।
- दृश्य–श्रव्य (ऑडियो–वीडियो) रिकॉर्डिंग्स – स्थिति विशेष अथवा एक लंबे समय तक महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं और पक्षों को रिकॉर्ड किया जा सकता है और बाद में उनका विश्लेषण किया जा सकता है।
- स्व–आकलन पत्रक – शिक्षार्थियों के स्व–मूल्यांकन के साक्ष्य उपलब्ध कराने के लिए पोर्टफोलियो।

- सहपाठी–आकलन पत्रक – टीम में और समूह–आधारित कार्यकलापों, सामाजिक परियोजानाओं और सहपाठियों से संबंधित व्यवहार का आकलन करने के लिए अति उत्तम। शिक्षार्थियों के सामाजिक जीवन–कौशलों के साक्ष्य उपलब्ध कराने के लिए इन्हें उनके पोर्टफालियो में शामिल किया जा सकता है।
- अभिभावक आकलन पत्रक – अभिभावकों द्वारा किए गए मूल्यांकन के साक्ष्य उपलब्ध कराने के लिए इन्हें शिक्षार्थियों के पोर्टफोलियो में शामिल किया जा सकता है।

पोर्टफोलियो अधिक जानकारी के लिए सीसीई संदर्शिका देखिए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

हिन्दी पाठ्यक्रम
'ब'

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

साखी

कबीर

प्रदत्त कार्य–1 : दोहों का संकलन एवं गायन।

विषय : दोहा–गायन (पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त दोहों का संकलन एवं गायन)

उद्देश्य :

- सस्वर वाचन कर सकेंगे।
- दोहे में निहित भावों को समझ सकेंगे।
- निहित संदेश पर सोच सकेंगे।
- विचारों को व्यक्त कर सकेंगे।
- ज्ञान का विस्तार होगा।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य / व्यक्तिगत कार्य।
2. अध्यापक दोहों का सस्वर वाचन विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करें।
3. विद्यार्थियों को कबीर के पाँच दोहों को छाँटकर सस्वर गायन के लिए उत्साहित करें।
4. एक या समूह में गायन करायें।
5. तैयारी के लिए 5 मिनट का समय दिया जाए।
6. प्रत्येक छात्र समूह को प्रस्तुति के लिए 2 मिनट का समय दिया जाए।
7. मूल्यांकन आधार बिंदु कार्य से पूर्व ही छात्रों को बता दिए जाएँ।
8. एक छात्र समूह की प्रस्तुति के समय अध्यापक व अन्य समूह–मूल्यांकन का कार्य करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- दोहा चयन
- सस्वर वाचन

www.FirstRanker.com

- उच्चारण
- आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु का भी मूल्यांकन का आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- अशुद्ध उच्चारण का सही उच्चारण बताएं।
- जो ठीक से गा नहीं पाए हैं शिक्षक उनकी सहायता करें।

प्रदत्त कार्य–2 : "कबीर के ईश्वर प्रेम संबंधी दोहे / पद का संकलन एवं प्रदर्शन"

उद्देश्य :

- कबीर के अनेक दोहे तथा पद को पढ़ सकेंगे।
- दोहे पर विचार कर सकेंगे।
- निहित भावों को समझ सकेंगे।
- रचनात्मक प्रस्तुति को समझ सकेंगे।
- मानवीय मूल्यों तथा जीवन कौशल को समझेंगे।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक मूल्यांकन के लिए समय निश्चित करेंगे।
3. उपरोक्त कार्य के विषय में विस्तार से छात्रों को समझाएंगे।
4. सम्पूर्ण कक्षा को अगले दिन के एक निश्चित पीरियड के बारे में बताएंगे।
5. एक कैलेण्डर आकार की चार्ट शीट लाने के लिए कहा जाएगा।
6. पद और दोहे से चार्ट तैयार करने के लिए कहा जाएगा।
7. 30 मिनट के बाद सभी चार्ट पेपर को एकत्रित कर लिया जाएगा।
8. शिक्षक सभी को देखकर मूल्यांकित कर अगले दिन कक्षा में प्रदर्शित करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- ईश्वर संबंधी दोहे / पद
- भाषा और प्रस्तुति
- सुलेख

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- उत्कृष्ट विचाराभिव्यक्ति की सराहना की जाए।
- विचाराभिव्यक्ति में कमी होने पर अन्य विद्यार्थियों की सहायता से उसे दूर करने का प्रयास किया जाए।
- उच्चारण की शुद्धता के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें।

प्रदत्त कार्य-3 : अनुभव प्रस्तुतीकरण

विषय : किसी ऐसी घटना का वर्णन जिसमें अपनी आलोचना सुनने के पश्चात् आपने स्वयं को बदला।

उद्देश्य :

- अपनी स्मृतियों को प्रस्तुत कर सकेंगे।
- जीवन से जुड़ी घटनाओं पर विचार कर सकेंगे।
- आदर्श एवं व्यावहारिक जीवन को समझ सकेंगे।
- लिखने-बोलने की क्षमता विकसित होगी।
- भावों को भाषा में व्यक्त कर सकेंगे।

निर्धारित समय : 2 कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम अध्यापक अपने जीवन की किसी ऐसी घटना का वर्णन करे जब अपनी आलोचना सुनने के पश्चात् उसने अपने व्यवहार को बदला हो। (अगर ऐसी घटना न हो तो कल्पना कर सुनायें)
3. कार्य से पूर्व विद्यार्थियों को गतिविधि के विषय में विस्तार से बताएँ।
4. निजी अनुभवों को लिपिबद्ध करने के लिए विद्यार्थियों को 20 मिनट का समय दिया जाए।

www.FirstRanker.com

5. अनुभव प्रस्तुतीकरण के लिए प्रत्येक छात्र को 1–2 मिनट का समय दिया जाए।
6. प्रस्तुति के समय अध्यापक और अन्य छात्र ध्यान से सुनेंगे और मूल्यांकन करेंगे।
7. कार्य से पूर्व ही मूल्यांकन के आधार से छात्रों को परिचित करवाया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु (विषयानुकूल व भावानुकूल)
- प्रस्तुति (लिखने व बोलने)
- आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- उत्कृष्ट प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- अध्यापक ध्यान दें कि प्रत्येक विद्यार्थी रुचिपूर्वक गतिविधि में हिस्सा लें।
- विद्यार्थियों को स्वमूल्यांकन के लिए प्रेरित किया जाए।
- सामान्य अशुद्धियों को छात्रों की सहायता से दूर करने का प्रयास किया जाए।

प्रदत्त कार्य-4 : विचाराभिव्यक्ति

विषय : "निदंक को दुश्मन नहीं दोस्त समझना चाहिए।"

उद्देश्य :

- सोचने की क्षमता का विकास।
- विद्यार्थी सोच को विचार में ढाल सकेंगे।
- विचारों को व्यक्त कर सकेंगे।
- भाषा और भाव विकसित होंगे।
- तर्क-वितर्क कर सकेंगे।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।

2. सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों को विषय से अवगत करायेंगे।
3. विद्यार्थियों को चार–पाँच समूह के बाँट देंगे।
4. विषय के सापेक्ष में परिचर्चा आरंभ करवा दिए जाएंगे।
5. चर्चा के दौरान शिक्षक सावधान रहकर बातचीत को आगे बढ़ाएंगे।
6. गलत तर्क को रोककर सही की ओर प्रोत्साहित करेंगे।
7. प्रस्तुति के समय शिक्षक व अन्य छात्र वक्ता का मूल्यांकन करेंगे।
8. ध्यान रहे समूह के प्रत्येक विद्यार्थी को समान अवसर मिले।
9. मूल्यांकन के आधार कार्य से पूर्व ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- भाषा
- प्रस्तुति
- तर्क
- आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ समूह की सराहना की जाए।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन दिया जाए।
- सामान्य बातों को शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- परिचर्चा के लिए आवश्यक बिन्दु बोर्ड पर लिख दिए जाएं।

प्रदत्त कार्य–5 : अनुच्छेद लेखन एवं प्रस्तुतीकरण

विषय : 'मीठी वाणी का जीवन में महत्व'

उद्देश्य :

- विचार विश्लेषण क्षमता का विकास।

- नैतिक मूल्यों का विकास।
- बौद्धिक क्षमता का विकास।
- व्यवहार–सुधार की प्रेरणा।
- वाचन कौशल का विकास।
- शब्द भंडार में अभिवृद्धि।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक आसपास के वातावरण से ऐसे लोगों का उदाहरण देगा जिनकी मीठी वाणी के कारण सभी लोग उन्हें पसंद करते हैं।
3. कार्य संबंधी जानकारी विस्तार से दी जाए।
4. विद्यार्थियों को लिखने के लिए 20 मिनट का समय दिया जाए।
5. विद्यार्थी को विषय की प्रस्तुति के लिए 1–2 मिनट का समय दिया जाए।
6. प्रत्येक वक्ता के प्रस्तुतीकरण के समय अन्य छात्र एवं शिक्षक वक्ता की प्रस्तुति का मूल्यांकन करेंगे।
7. मूल्यांकन के आधार कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- प्रस्तुतिकरण
- आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- उत्कृष्ट विषय वस्तु व प्रस्तुति की सराहना।
- सामान्य उच्चारण व अन्य अशुद्धियों को अध्यापक द्वारा शुद्ध करना।
- कार्य पूरा न करने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहन और सहायता दी जाए।

पद

मीरा

प्रदत्त कार्य-1 : कार्य-प्रपत्र

विषय : राजस्थान से संबंधित जानकारियों पर आधारित कार्य-प्रपत्र।

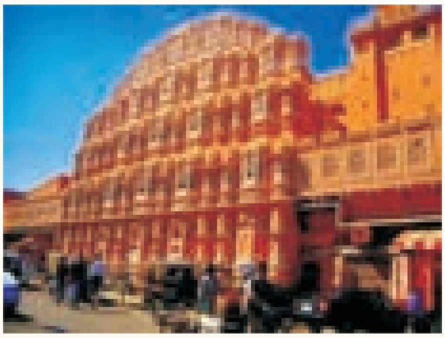

उद्देश्य :

- देश के विभिन्न हिस्सों से जोड़ना।
- राजस्थान के बारे में विशिष्ट जानकारियाँ देना।
- ज्ञान का विस्तार।
- चिंतन-मनन की प्रवृत्ति का विकास।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति व स्वाध्याय का विकास।
- लेखन-पठन कौशल का विकास।
- पर्यटन के प्रति अभिरुचि जगाना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. शिक्षक विद्यार्थियों को निम्नलिखित विषय से संबंधित जानकारी एकत्रित करने के लिए समय देंगे।

- राजस्थान के चार प्रमुख पर्यटन स्थलों के नाम
- लोक कलाएं
- कुछ प्रमुख बोलियां (कम से कम 2)
- प्रमुख पशुओं के नाम
- ऐतिहासिक किलों के नाम (कम से कम चार)
- परंपरागत वेशभूषा
- लोकगीत व लोकनृत्य
- खान-पान
- पर्यावरण

3. राजस्थान की पृष्ठभूमि पर आधारित लोकप्रिय धारावाहिक (कोई 2)
4. शिक्षक सर्वप्रथम निर्धारित कालांश में मूल्यांकन के आधार तथा कार्य के स्वरूप से विद्यार्थियों को परिचित करवाएँगे।

5. निर्धारित कालांश में प्रस्तुत कार्य करवाया जाए। इसके लिए 'कार्य प्रपत्र' भी दिया जा सकता है अथवा कार्य–प्रपत्र को श्याम–पट्ट पर लिखकर कार्य करवाया जा सकता हैं।
6. कार्य–प्रपत्र पूर्ण करने के लिए छात्रों को 10–15 मिनट का समय दिया जाए। इस दौरान शिक्षक प्रत्येक छात्र की गतिविधियों पर दृष्टि रखें।
7. मूल्यांकन के आधार बिंदु तथा अंक पूर्व में ही छात्रों को बताए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विद्यार्थियों के प्रदर्शन के आधार पर मूल्यांकन कीजिए।

टिप्पणी :

- शिक्षक आवश्यकतानुसार राजस्थान पर आधारित कोई अन्य प्रश्न भी दे सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य पूर्ण करने के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- कार्य प्रपत्र एकत्रित करने के पश्चात् छात्रों की सहायता से सभी जानकारियां श्याम–पट्ट पर लिख दी जाएं।
- छात्रों को राजस्थान के जन–जीवन, लोक–संस्कृति तथा प्रसिद्ध स्थलों से संबधित चित्र एकत्रित करने की प्रेरणा दें।

प्रदत्त कार्य–2 : पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त पद गायन।

विषय : मीरा के किसी एक पद का गायन।

उद्देश्य :

- सस्वर वाचन कर सकेंगे।
- कविता के भाव को समझ सकेंगे।
- ज्ञान में अभिवृद्धि होगी।
- मीरा की कविता से परिचित हो सकेंगे।
- हिंदी की विविध बोलियों से परिचय होगा।

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य / व्यक्तिगत कार्य।
2. शिक्षक मीरा के पद का आदर्श सस्वर वाचन करेंगे।

3. विद्यार्थी शिक्षक का अनुकरण कर सस्वर वाचन करेंगे।
4. विद्यार्थियों के संकोच तथा गलतियों को सुधार कर वाचन के लिए प्रोत्साहित करेंगे।
5. सस्वर वाचन के दौरान शिक्षक भाव बताएंगे।
6. मूल्यांकन के आधार कार्य से पूर्व ही छात्रों को बता दिए जाएं।
7. प्रत्येक समूह / वैयक्तिक प्रस्तुति के समय शिक्षक एवं अन्य समूह मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- सस्वर वाचन
- भावबोध
- प्रस्तुति
- भाषा

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- शिक्षक ध्यान दें कि प्रत्येक छात्र इस गतिविधि में हिस्सा लें।
- प्रत्येक वाचन एवं प्रस्तुतीकरण की सराहना।
- विद्यार्थियों को स्वमूल्यांकन के लिए प्रेरित किया जाए।
- शिक्षक कविता का सस्वर वाचन पर विद्यार्थी का मनोबल बढ़ाएं।

प्रदत्त कार्य-3 : श्रीकृष्ण के जीवन से संबंधित कोई एक प्रसंग सुनाना।

उद्देश्य :

- कृष्ण जीवन से परिचय।
- ज्ञान का विस्तार।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति एवं स्वाध्याय को प्रोत्साहन।
- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास।

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम अध्यापक 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्' उक्ति सुनाकर कर्मयोगी श्रीकृष्ण के जीवन का कोई एक प्रसंग कक्षा में सुनाएं।
3. विद्यार्थियों को श्री कृष्ण के जीवन का कोई भी एक प्रसंग जानकर कक्षा में सुनाने का निर्देश दें।
4. तैयारी के लिए विद्यार्थियों को दो-तीन दिन का समय दिया जाए।
5. प्रस्तुति के लिए प्रत्येक विद्यार्थी को 1-2 मिनट का समय दिया जाए।
6. मूल्यांकन के आधार बिंदु कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- प्रसंग का चयन (विषय व भाव के अनुरूप)
- शब्द चयन व सटीक वाक्य
- शुद्ध उच्चारण, स्वर की स्पष्टता
- प्रस्तुतीकरण (हाव-भाव, आत्मविश्वास व आरोह-अवरोह)

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन दिया जाए।
- उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को छात्रों की सहायता से दूर करने का प्रयास किया जाए।

प्रदत्त कार्य-4 : चित्र देखकर वर्णन।

विषय : भगवान विष्णु के दस अवतारों के चित्र देखकर नाम एवं संदर्भ लिखिए।

उद्देश्य :

- संकलन करने की प्रवृत्ति।
- स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास।
- बौद्धिक विकास।
- दशावतार से परिचय।

- शब्द ज्ञान में अभिवृद्धि।
- कलात्मक अभिरुचि का विकास।
- लेखन एवं पठन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. 5-6 छात्रों का एक समूह बनाकर समस्त कक्षा को समूहों में विभक्त कर दिया जाए।
3. विद्यार्थियों को विष्णु के दस अवतारों के चित्र दिखएगा।
4. विद्यार्थी पहचान करके नाम बताएंगे।
5. सबसे अधिक नाम बताने वाला समूह विजेता घोषित होगा।
6. प्रत्येक समूह विष्णु के हर अवतार से संबंधित कोई कहानी सुनाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- सही पहचान।
- रोचक कथा-प्रस्तुति
- शब्द चयन, सटीक वाक्य और शुद्ध वर्तनी

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ कार्य की सराहना की जाए।
- औसत व अपूर्ण कार्य करने वालों को प्रोत्साहन दिया जाए।

प्रदत्त कार्य-5 : श्रीकृष्ण की किसी एक लीला का मंचन।

उद्देश्य :

- कर्मयोगी कृष्ण के जीवन से परिचय।
- भारतीय संस्कृति से जुड़ाव।
- अभिनय क्षमता व संवाद प्रस्तुतीकरण का विकास।

www.FirstRanker.com

- पटकथा लेखन का ज्ञान।
- श्रवण, वाचन, पठन, लेखन कौशल का विकास।
- मंच भय से मुक्ति।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति व स्वाध्याय का विकास।

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य (5-6 छात्रों का एक समूह)
2. सर्वप्रथम शिक्षक कृष्ण लीला से संबंधित धारावाहिक का उल्लेख करते हुए छात्रों से चर्चा करेंगे।
3. कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित कराते हुए विभिन्न लीलाओं के विषय में पूछेंगे तथा उसकी एक सूची श्यामपट्ट पर बनाएंगे। जैसे - माखन चुराना, कालिया मर्दन, कंस वध,.... गोवर्धन प्रसंग, कृष्ण-सुदामा चरित्र, शिशुपाल वध, पांडवों की ओर से संधि प्रस्ताव, विदुर के घर भोजन, दुर्योधन व अर्जुन का सहायता मांगना, कर्मयोग का अर्जुन को संदेश आदि....।
4. मंचन की तैयारी हेतु छात्रों को एक सप्ताह का समय दिया जाए।
5. सप्ताह के बीच-बीच में कार्य की प्रगति के विषय में पूछकर छात्रों को प्रोत्साहित करें।
6. मंचन हेतु प्रत्येक समूह को 10-15 मिनट का समय दिया जाए।
7. मूल्यांकन के आधार बिंदु तथा अंक पूर्व में ही छात्रों को बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- पटकथा
- अभिनय व संवाद शैली
- हाव-भाव, आरोह-अवरोह
- सहभागिता व आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की पूर्णता तथा समूह में सक्रिय योगदान के लिए प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- कार्य में कमी रह जाने पर सुधारात्मक सुझाव दें।
- प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ समूह का चयन कर उनकी प्रशंसा की जाए।

www.FirstRanker.com

दोहे

बिहारी

प्रदत्त कार्य-1 : कविता संकलन

विषय : ग्रीष्म ऋतु पर आधारित कविताओं का संकलन।

उद्देश्य :

- काव्य विधा के प्रति रुझान।
- कविता की पहचान।
- ग्रीष्म ऋतु के गुणों की पहचान।
- संकलन एवं प्रस्तुति का ज्ञान।
- आपसी सहयोग की भावना का विकास।

निर्धारित समय : अवकाश कार्य

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत तथा सामूहिक कराया जा सकता है।
2. सर्वप्रथम शिक्षक छात्रों से विभिन्न ऋतुओं के विषय में चर्चा करते हुए ग्रीष्म ऋतु को विस्तार से समझाएंगे।
3. ग्रीष्म ऋतु पर आधारित किसी कविता को अध्यापक कक्षा में सुनाएं।
4. विद्यार्थियों की सहायता से कुछ शब्द श्यामपट्ट पर लिखकर अध्यापक ग्रीष्म ऋतु की प्रचण्डता का चित्रण करने के लिए छात्रों को निर्देश दें तथा निर्धारित समय पर कार्य जमा करें।
5. मूल्यांकन के आधार बिंदु तथा अंकों से छात्रों को पूर्व में ही परिचित करवा दिया जाए।
6. कविता संकलन के लिए कुछ कवियों के नाम विद्यार्थियों को अवश्य बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विद्यार्थियों द्वारा संकलित कवियों की कविताओं को ध्यान में रखते हुए मूल्यांकन।

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

www.FirstRanker.com

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की पूर्णता तथा समूह में सक्रिय योगदान के लिए छात्रों की सराहना की जाए।
- सर्वश्रेष्ठ संकलन चयन किया जाए।
- पाँच उत्तम प्रस्तुति का प्रदर्शन करें।
- कुछ कविताओं का वाचन भी कराया जाए तो अच्छा।

प्रदत्त कार्य-2 : दोहा गायन

विषय : नीति, भक्ति और मित्रता से संबंधित दोहों का गायन।

उद्देश्य :

- दोहों के स्वरूप को समझना।
- व्यावहारिक जीवन का ज्ञान।
- दोहों की विशेषता को समझना।
- जीवन के विविध रंगों को समझना।
- साहित्यिक अभिरुचि।
- चिंतन कौशल का विकास।
- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य (6-6 विद्यार्थियों का एक समूह बनाया जाए)
2. सर्वप्रथम शिक्षक किसी भाव विशेष से संबंधित दोहे के माध्यम से कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित कराए, जैसे –

   "साधु ऐसा चाहिए जैसे सूप सुभाय

   सार-सार को गहि लहै, थोथा देई उड़ाय"।
3. प्रत्येक समूह को दो-दो मित्रता नीति तथा भक्ति के दोहे गाने के लिए कहा जाए।
4. तैयारी के लिए दो-तीन दिन का समय दिया जाए।
5. निर्धारित दिन प्रत्येक समूह को एक-एक कर प्रस्तुति देने के लिए कहें।
6. कार्य से पूर्व अध्यापक मूल्यांकन के आधार छात्रों को बताएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- सभी विषयों से संबंधित दोहों की सस्वर प्रस्तुति तथा प्रभाव के आधार पर मूल्यांकन करें।

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं तथा अपनी सुविधानुसार अंक निर्धारित किया जा सकता है।
- अध्यापक दोहा संकलन के लिए अन्य विषय भी दे सकते हैं।

प्रतिपुष्टि:

- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन दिया जाए।
- सभी कार्यों को कक्षा में प्रदर्शित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-3 : परिचर्चा

विषय : नयी पीढ़ी की दृष्टि में सामाजिक बदलाव के क्षेत्र।

उद्देश्य :

- सामाजिक बदलाव को समझेंगे।
- जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास।
- समाज के प्रति नैतिक दायित्व बोध।
- चिंतन एवं वैचारिक कौशल का विकास।
- वाचन एवं श्रवण कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. अध्यापक समाज में होने वाले बदलाव पर विद्यार्थियों से बातचीत करेंगे।
3. अध्यापक छात्रों से प्राप्त जानकारियों को श्यामपट्ट पर लिखें।
4. 5-6 छात्रों का एक समूह तैयार किया जाए और सम्पूर्ण कक्षा को समूहों में बाँट दिया जाए।
5. प्रत्येक समूह कक्षा के समय में दिए गए विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करें।

www.FirstRanker.com

6. छात्रों को तैयारी के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
7. विद्यार्थियों को प्रस्तुति के लिए 1-2 मिनट का समय दिया जाएगा।
8. विद्यार्थियों को मूल्यांकन का आधार कार्य से पूर्व ही बता दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- शब्द-चयन व सटीक वाक्य रचना
- शुद्ध उच्चारण
- वैचारिक स्तर
- आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सशक्त विचार प्रस्तुति की सराहना।
- मुख्य विचार बिंदुओं का श्यामपट्ट पर लेखन।
- औसत व कमजोर प्रस्तुति के लिए सुझाव एवं प्रोत्साहन।

प्रदत्त कार्य-4 : एलबम बनाना

विषय : भारतीय वाद्य यंत्रों की चित्र सहित जानकारी।

उद्देश्य :

- भारतीय वाद्ययंत्रों की जानकारी।
- संगीत के प्रति अभिरुचि।
- ज्ञान का विस्तार।
- स्वाध्याय की प्रेरणा।
- खोजी प्रवृत्ति का विकास।
- समायोजन शक्ति का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

www.FirstRanker.com

प्रक्रिया:

1. व्यक्तिगत कार्य तथा सामूहिक कार्य।
2. सर्वप्रथम अध्यापक भारतीय शास्त्रीय संगीत की लोकप्रियता तथा विभिन्न दृष्टियों से महत्व पर चर्चा करें, जैसे – चिकित्सा के क्षेत्र में, मानसिक तनाव को दूर करने के संदर्भ में, अकेलेपन को दूर करने के लिए आदि।
3. छात्रों को कार्य के स्वरूप से परिचित करवाते हुए विभिन्न भारतीय वाद्ययंत्रों के विषयों में चर्चा करेंगे। साथ ही छात्रों को निर्देश दिया जाए कि वे पुस्तकालय, इंटरनेट, संगीत अध्यापक आदि की सहायता से वाद्ययंत्रों के विषय में जानकारी प्राप्त करें तथा संबंधित चित्रों का संग्रह करें।
4. इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को एक सप्ताह का समय दिया जाए।
5. निर्धारित दिन छात्र कक्षा में ही समूह के साथ मिलकर परियोजना पुस्तिका में यह कार्य करें।
6. इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को 25-30 मिनट का समय दिया जाए।
7. सप्ताह के मध्य में शिक्षक कार्य के विषय में पूछकर विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें।
8. मूल्यांकन के आधार बिंदु कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- एलबम के विषय तथा स्वरूप पर विचार करते हुए मूल्यांकन।

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- समूह में सक्रिय योगदान के लिए प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- सर्वश्रेष्ठ एलबम का चयन कर उसकी प्रशंसा की जाए।
- सभी एलबम का कक्षा में प्रदर्शन किया जाए।

प्रदत्त कार्य-5 : विचाराभिव्यक्ति

विषय : "व्यावहारिक जीवन तथा आत्मिक गुणों के विकास में दोहों का महत्व"

उद्देश्य :

- स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास।
- वैचारिक मंथन, चिंतन-मनन की प्रवृत्ति का विकास।

- श्रवण-वाचन कौशल का विकास।
- आत्मविश्वास।

निर्धारित समय : एक या दो कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य (4-4 छात्रों का एक समूह)
2. सर्वप्रथम अध्यापक किसी दोहे का उदाहरण देकर बताएं कि वे किस प्रकार व्यावहारिक जीवन में शिक्षा देकर आत्मिक दृढ़ता प्रदान करते हैं जैसे –

   कहत रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।

   बिपति कसौटी जे कसे, ते ही सांचे मीत।।
3. छात्रों को कार्य से परिचित करवाते हुए प्रस्तुत विषय पर समूह में चर्चा करने का निर्देश दें। इस कार्य के लिए छात्रों को 10-12 मिनट का समय दिया जाए।
4. कार्य के दौरान शिक्षक छात्र के कार्यों पर दृष्टि रखें तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन भी करें।
5. प्रत्येक समूह से एक विद्यार्थी विचाराभिव्यक्ति करें इस कार्य के लिए उन्हें 1-2 मिनट का समय दिया जाए।
6. छात्र व शिक्षक मिलकर कार्य का मूल्यांकन करें।
7. मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही छात्रों को बताए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- भावानुरूप विषय की प्रस्तुति
- मौलिकता
- दोहों द्वारा पुष्टि
- शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना, शुद्ध उच्चारण
- समूह में योगदान

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- समूह में सक्रिय योगदान के लिए प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- छात्रों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति का चयन करें।
- कार्य में कमी रहने पर उसे दूर करने के लिए अन्य समूहों से सहायता लेने की प्रेरणा दें।

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

मनुष्यता

मैथिलीशरण गुप्त

प्रदत्त कार्य-1 : नाट्य मंचन

विषय : कविता से संबंधित पौराणिक प्रसंगों व व्यक्तियों से संबंधित नाट्य मंचन (रति देव, दधीचि, राजा शिबि व कर्ण)

उद्देश्य :

- भारत की पौराणिक संस्कृति से परिचय।
- आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यों का विकास।
- ज्ञान का विस्तार।
- स्मरण शक्ति का विकास।
- संवाद लेखन व अभिनय कला का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. शिक्षक द्वारा यह कार्य कविता पढ़ाने व समझाने के बाद किया जाएगा।
3. पूरी कक्षा को विभिन्न समूहों में बाँटा जाएगा व प्रत्येक समूह में चार-पांच विद्यार्थी हो सकते हैं।
4. विद्यार्थियों को उपरोक्त चरित्रों के जीवन के विषय में और अधिक जानकारी एकत्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
5. विभिन्न समूहों को एक-एक चरित्र पर नाट्य मंचन तैयार करने के लिए कम से कम तीन-चार दिनों का समय दिया जाए व प्रत्येक प्रस्तुति के लिए 3-4 मिनट का समय दिया जाए।
6. मूल्यांकन का आधार पहले से ही विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिए जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- नाट्य लेखन
- अभिनय कला
- भाषा

www.FirstRanker.com

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सभी की प्रस्तुतियों की सराहना।
- सर्वश्रेष्ठ अभिनय व प्रस्तुति की विशेष सराहना।
- नाट्य मंचन संबंधी/संवाद उच्चारण संबंधी सामान्य कमियों के विषय में शिक्षक विद्यार्थियों को अवगत करवाएँगे।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत करवाना।

प्रदत्त कार्य–2 : कविता गायन

विषय : 'त्याग', 'बलिदान', सहयोग अथवा परोपकार – विषय से संबंधित किसी अन्य कविता का गायन।

उद्देश्य :

- नैतिक व मानवीय मूल्यों का विकास।
- कलात्मक अभिरुचि का विकास।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास।
- चिंतन मनन प्रवृत्ति का विकास।
- प्रस्तुतीकरण शैली का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. विद्यार्थियों को यह कार्य कविता पाठन के पश्चात् करवाया जाए।
3. प्रत्येक विद्यार्थी को परोपकार, त्याग, बलिदान, सहयोग, समर्पण जैसे विषयों में से किसी एक विषय से संबंधित कोई एक कविता ढूंढकर गायन संबंधी कार्य दिया जाएगा।
4. इस कार्य के लिए दो दिनों का समय दिया जाएगा।
5. मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाए।
6. एक प्रस्तुति के समय वक्ता के गायन का मूल्यांकन अन्य विद्यार्थियों व शिक्षक द्वारा किया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- कविता का चयन
- उच्चारण क्षमता
- लयबद्ध प्रस्तुति
- स्वर की स्पष्टता
- आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- शिक्षक ध्यान दें कि सभी विद्यार्थी इस कार्य में सक्रिय भाग लें।
- सामान्य अशुद्धियों का शिक्षक द्वारा निवारण किया जाएगा।
- सर्वश्रेष्ठ गायन की सराहना व विद्यालय के मंच पर प्रस्तुति करवाई जाएगी।

प्रदत्त कार्य–3 : कविता लेखन

विषय : कविता की अधूरी पंक्तियों को पूरा करना।

उद्देश्य :

- ज्ञान का विस्तार।
- रचनात्मकता/सृजनात्मकता का विकास।
- कल्पनाशीलता का विकास।
- कविता विधा से परिचय।
- कविता लेखन को प्रोत्साहन।
- वाचन क्षमता का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम शिक्षक कक्षा को कविता लेखन में तुकबंदी व उसके महत्व के विषय में समझाकर उनके समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत करेंगे। जैसे –

''दया करुणा, क्षमा को जिसने धारण किया
अपने गुणों के बल पर धरा को वश में किया
युगों-युगों तक उसके गौरव की जलती रही ज्वाला
मनुष्य जन्म लेकर जिसने मानवता को मन में पाला।''

2. शिक्षक द्वारा कविता की एक पंक्ति श्यामपट्ट पर लिखी जाएगी व छात्रों को अधूरी पंक्तियों को पूरा करने के लिए कहा जाएगा।

जहाँ नदियों में जीवन बहता है।

....

....

....

सबके हित के लिए जो निज स्वार्थ को तजता है।

....

....

....

मुश्किलों की आंधी से जब हुआ सामना।

....

....

....

3. छात्रों को चार-चार के समूहों में बांटा जाएगा।
4. प्रत्येक समूह किसी एक पद्यांश की पंक्तियां पूरी करेगा।
5. मूल्यांकन का आधार श्यामपट्ट पर लिख दिया जाएगा।
6. प्रत्येक समूह को कार्य पूरा करने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा। प्रत्येक समूह से एक वक्ता कविता वाचन करेगा।
7. जब छात्र अपना कार्य कर रहे होंगे तब शिक्षक घूम-घूमकर छात्रों का निरीक्षण करेंगे व आवश्यकता पड़ने पर छात्रों की सहायता भी करेंगे।
8. एक समूह की प्रस्तुति के समय शिक्षक व अन्य छात्र मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना
- काव्य के अनुसार लयबद्धता
- प्रवाहशील अभिव्यक्ति
- उच्चारण की शुद्धता
- आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी अध्यापक मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।
- अध्यापक पंक्तियाँ पूरी करने के लिए अन्य कोई पंक्तियां भी दे सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतीकरण की सराहना की जाए।
- सभी छात्रों द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतीकरण अपनी कॉपी में लिखा जाए।
- सामान्य अशुद्धियों को अध्यापक द्वारा शुद्ध किया जाएगा।

प्रदत्त कार्य-4 : 'कार्य प्रपत्र' महात्मा बुद्ध से संबंधित।

उद्देश्य :

- महात्मा बुद्ध के जीवन व मूल्यों से परिचय।
- अहिंसा व करुणा के मूल्यों का विकास।
- ज्ञान का विस्तार।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों से अहिंसा, त्याग, परोपकार व शांति जैसे मूल्यों के विषय में बातचीत करें।
3. विद्यार्थियों को कार्य देने से पहले (कम से कम 10 दिन) महात्मा बुद्ध के विषय में पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाएगा।

www.FirstRanker.com

4. विद्यार्थियों को यह कार्य प्रपत्र करने के लिए 10–15 मिनट का समय दिया जाए।
5. जब विद्यार्थी यह कार्य करेंगे तब शिक्षक घूम–घूमकर कक्षा में निरीक्षण करेंगे।
6. विद्यार्थियों को मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाए।

कार्य प्रपत्र

क) महात्मा बुद्ध का वास्तविक नाम	....
ख) जन्म स्थल	....
ग) माता–पिता का नाम	....
घ) पत्नी व संतान का नाम	....
ङ) संवेग उत्पत्ति के कारण	....
च) निर्वाण प्राप्ति का स्थान	....
छ) सर्वप्रथम शिक्षा किसे दी	....
ज) किस धर्म के प्रवर्तक थे	....
झ) सुदत्त ने उपहार स्वरूप क्या दिया	....
ञ) प्रिय शिष्य का नाम	....

टिप्पणी : शिक्षक इच्छानुसार अन्य प्रश्न भी शामिल कर सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- उत्तर/जानकारी

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- शिक्षक द्वारा सर्वप्रथम व सही कार्य पूरा करने वाले विद्यार्थियों की विशेष सराहना।
- सभी सही उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- विद्यार्थियों को महात्मा बुद्ध के जीवन से संबंधित अन्य प्रसंगों को भी सुनाना।

www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य-5 : भाषण

विषय : व्यक्ति व समाज परस्परावलंबी है।

उद्देश्य :

- चिंतन-मनन प्रवृत्ति का विकास।
- स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास।
- पूर्व ज्ञान की परख व अनुप्रयोग।
- वाचन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. यह कार्य शिक्षक कविता पाठन के पश्चात् ही करवाएँगे।
3. शिक्षक 'व्यक्ति व समाज एक दूसरे के पूरक हैं' विषय पर विद्यार्थियों से विचार विमर्श करेंगे।
4. विद्यार्थियों को सोचने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
5. प्रत्येक विद्यार्थी को विषय पर अपना मत प्रस्तुत करने के लिए 1.5-2 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. मूल्यांकन के आधार पहले ही विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- भाषा
- उच्चारण
- उदाहरणों का प्रयोग
- प्रस्तुति

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

www.FirstRanker.com

प्रतिपुष्टि :

- शिक्षक ध्यान रखें कि सभी विद्यार्थी इस कार्य में सक्रिय रूप से हिस्सा लें।
- सभी विद्यार्थियों के विचार सुनते समय मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- सर्वश्रेष्ठ विचारों व प्रस्तुति की सराहना व विद्यालय के मंच पर प्रस्तुति करवाई जाए।

पर्वत प्रदेश में पावस

सुमित्रानंदन पंत

प्रदत्त कार्य– 1 : कविता पाठ

विषय : छात्रों द्वारा वर्षा ऋतु पर लिखी गई अन्य कविताओं के संग्रह पर आधारित कविता पाठ।

उद्देश्य :

- काव्य विधा के प्रति रुझान।
- विभिन्न ऋतुओं का ज्ञान।
- स्वाध्याय की प्रेरणा।
- श्रवण व वाचन कौशल का विकास।
- प्रकृति का मानव जीवन पर प्रभाव का ज्ञान।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप में दिया जा सकता है।
2. सर्वप्रथम अध्यापक कार्य को समझाएं तथा विद्यार्थियों को उदाहरण देकर बताएं।
3. दो दिन पूर्व छात्रों को कविता का चयन करने का निर्देश दिया जाए। कविता ढूंढने के संदर्भ में छात्रों का मार्गदर्शन भी शिक्षक करें।
4. विद्यार्थियों को कविता संग्रह करने के लिए समय दिया जाए।
5. शिक्षक ध्यान दें कि प्रत्येक छात्र कार्य में रुचि पूर्वक हिस्सा लें। छात्र तथा शिक्षक दोनों मिलकर मूल्यांकन करें।
6. मूल्यांकन के आधार विद्यार्थियों को समझा दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विद्यार्थियों द्वारा संग्रह तथा प्रस्तुतिकरण के आधार पर मूल्यांकन

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य प्रस्तुति के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- संग्रह के तरीके में होने वाली कमी के संदर्भ में सुझाव।
- प्रमुख कवियों तथा उनकी कविताओं के शीर्षक श्याम-पट्ट पर लिखें।
- सर्वश्रेष्ठ संग्रह करने वाले विद्यार्थियों की सराहना।

प्रदत्त कार्य-2 : स्वरचित कविता

विषय : प्रकृति पर आधारित।

उद्देश्य :

- काव्य विधा का ज्ञान व उसके प्रति अभिरुचि जगाना।
- भावुकता व संवेदनशीलता जगाना।
- प्रकृति व मानव के मध्य संबंधों को स्पष्ट करना।
- कल्पनाशीलता व रचनात्मक क्षमता का विकास
- वाचन व लेखन, श्रवण कौशल का विकास।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति व स्वाध्याय का विकास।
- सहभागिता का विकास।

सावन,	बादल,	मेघ,	किरन,	पर्वत,	झमझम,	काले,	पेड़ सूर्य,
शोर,	बिंदु,	मोती,	डाल,	शोर,	बूँद,	आना,	रिमझिम,
हरियाली,	फूल,	कजरारे,	धरती,	कुहासा,	प्यासी,	सरोवर,	पत्तें, नदी

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य (6 विद्यार्थियों का एक समूह)
2. सर्वप्रथम अध्यापक ग्रीष्म ऋतु से संबधित कुछ शब्द छात्रों से पूछकर श्यामपट्ट पर लिखें तथा चार पंक्तियां शब्दों के आधार पर बनाकर छात्रों को सुनाएँ।
3. छात्रों को निर्देश दिया जाए कि ऊपर दिए गए चित्र तथा शब्दों की सहायता से स्वरचित कविता लिखने के लिए समूह में चर्चा करें। इसके उपरांत कम से कम 10 पंक्तियों की कविता लिखें। इस कार्य के लिए छात्रों को 25-30 मिनट का समय दिया जाए।

4. काव्य रचना के दौरान शिक्षक निरीक्षण करें तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।
5. कविता लेखन के पश्चात् प्रत्येक समूह से एक विद्यार्थी कविता पाठ करे। इसके लिए प्रत्येक समूह को 2 मिनट का समय दिया जाए। छात्र तथा शिक्षक मिलकर मूल्यांकन करें।
6. समूह के कार्य के आधार पर प्रत्येक छात्र को अंक दिए जाएं।
7. मूल्यांकन के आधार पूर्व में ही श्याम-पट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय व भावानुरूप कविता लेखन
- मौलिकता
- शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना
- क्रमबद्धता, सुसंबद्धता
- उच्चारण की शुद्धता, स्वर की स्पष्टता, आरोह-अवरोह, आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं तथा उपयुक्त अंक दे सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- समूह में सक्रिय योगदान तथा कार्य पूर्ण करने के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- छात्रों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ कविता का चयन करें।
- समूह में सक्रिय भूमिका न देने वाले छात्रों को प्रोत्साहित किया जाए।
- कविताओं को लघु पत्रिका में स्थान दिया जाए।

प्रदत्त कार्य-3 : संस्मरण लेखन

विषय : जब अचानक मुझे गांव जाने का मौका मिला......

उद्देश्य :

- भारतीय संस्कृति से परिचय।
- आंचलिक परिवेश से परिचय।

- ज्ञान का विस्तार।
- कल्पनाशक्ति का विकास।
- अभिव्यक्ति कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को संस्मरण के बारे में बताया जाएगा।
3. विद्यार्थियों को इस कार्य के लिए 20 मिनट का समय दिया जाएगा।
4. इस दौरान शिक्षक कक्षा में घूम-घूमकर निरीक्षण करेंगे और यथासंभव सहायता करेंगे।
5. मूल्यांकन के आधार बिंदु कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएंगे।
6. अध्यापक अन्य छात्रों की सहायता से मूल्यांकन करेंगे।
7. विद्यार्थियों की सहायता के लिए शिक्षक द्वारा कुछ संबंधित शब्द दिए जाएंगे। जैसे –

गोधूलि गाय, मिट्टी, झोंपड़ी, पगडंडी,
पोखर, खेत, कुम्हार, पेड़, बैल, पाठशाला,
पनघट पटरी झूला, कुआँ, मटके, हल,
चक्की, ट्रैक्टर, चूल्हा, आँगनबाड़ी

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- शब्द चयन एवं सटीक वाक्य रचना
- क्रमबद्धता एवं प्रवाहमयता
- उच्चारण की शुद्धता
- आत्मविश्वास (हाव-भाव)

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- उत्कृष्ट अभिव्यक्ति की सराहना की जाए।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन दिया जाए।
- सामान्य अशुद्धियों को अध्यापक द्वारा शुद्ध किया जाए।

प्रदत्त कार्य–4 : पर्वतीय प्रदेशों की सामान्य जानकारियों पर आधारित कार्य प्रपत्र।

उद्देश्य :

- विभिन्न पर्वतीय स्थलों से परिचय।
- देश के विभिन्न हिस्सों से जोड़ना।
- पर्यटन के प्रति अभिरुचि जगाना।
- ज्ञान का विस्तार।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास।
- लेखन क्षमता का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक सम्पूर्ण भारत में स्थित पर्वतीय प्रदेशों की सामान्य जानकारी के विषय में कुछ सामान्य जानकारी देते हुए कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित करवाएं।
3. उपरोक्त कार्य प्रपत्र द्वारा या श्याम–पट्ट पर लिखवाकर करवाया जा सकता है। एक अलग पृष्ठ पर यह कार्य करवाया जाए।
4. जब छात्र कार्य करेंगे तब शिक्षक घूम–घूम कर निरीक्षण करेंगे तथा आवश्यकतानुसार छात्रों का मार्गदर्शन करेंगे।
5. विद्यार्थियों को कार्य–प्रपत्र भरने के लिए 20 मिनट का समय दिया जाए।

www.FirstRanker.com

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

10 जानकारियां देने पर	5 अंक
8-9 जानकारियां देने पर	4 अंक
6-7 जानकारियां देने पर	3 अंक
4-5 जानकारियां देने पर	2 अंक
2-3 जानकारियां देने पर	1 अंक

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य पूर्ण करने के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- पूर्ण जानकारी न दे पाने वाले छात्रों का मार्गदर्शन करें ताकि वह कार्य पूर्ण कर सकें।
- कार्य प्रपत्र एकत्रित करने के पश्चात् छात्रों से चर्चा कर पूर्ण जानकारी श्यामपट्ट पर लिख दें।

कार्य प्रपत्र

1. पर्यटन की दृष्टि से प्रसिद्ध तीन पर्वतीय स्थलों के नाम ....
2. पर्वतीय प्रदेशों के प्राकृतिक सौंदर्य से संबंधित दो विशेषताएं ....
3. वृक्षों की विशेषताएं ....
4. दो प्रमुख पशुओं के नाम ....
5. पहाड़ों में बोली जाने वाली दो बोलियों के नाम ....
6. पर्वतीय प्रदेशों के घरों की विशेषताएं ....
7. खेत किस प्रकार के होते हैं? ....
8. पर्वतीय प्रदेशों में पाए जाने वाले प्रमुख फलों के नाम? ....
9. पर्यावरण की विशिष्टता ....
10. पर्वतीय प्रदेशों के लोगों की वेशभूषा (परंपरागत पोशाक) ....

प्रदत्त कार्य–5 : सार लेखन

विषय : सुमित्रानंदन पंत की किसी भी कविता का सार लेखन।

उद्देश्य :

- काव्य विधा के प्रति अभिरुचि जगाना।
- भावुकता व संवेदनशीलता का विकास।
- कविता की समझ विकसित करना।
- सार लेखन समझना तथा सीखना।
- लेखन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम अध्यापक स्वयं सुमित्रानंदन पंत की किसी अन्य रचना का आदर्श पाठ करें तथा कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित कराएं।
3. 3–4 दिन पूर्व ही छात्रों को निर्देश दिया जाए कि वे पुस्तकालय अथवा इंटरनरेट से पंत की अन्य कोई कविता ढूँढ कर लाएं।
4. निर्धारित कालांश में छात्रों से कविता का सार लिखवाया जाए।
5. विद्यार्थियों के काम को संग्रह कर उसका मूल्यांकन कर उन्हें बताएं।
6. मूल्यांकन के आधार बिंदु तथा अंक पूर्व में ही छात्रों को बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- लेखन के आधार पर अंक

टिप्पणी:

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- छात्रों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ लेखन करने वाले विद्यार्थी का चयन कर उसकी प्रशंसा करें।
- उपयुक्त कार्य नहीं करने वाले विद्यार्थियों की मदद कर कार्य पूरा करवाएं।

www.FirstRanker.com

मधुर-मधुर मेरे दीपक जल

महादेवी वर्मा

प्रदत्त कार्य-1 : समीक्षा लेखन

विषय : महादेवी वर्मा के किसी एक संस्मरण/रेखाचित्र को पढ़कर उसकी संक्षेप में समीक्षा प्रस्तुत करना।

उद्देश्य :

- समीक्षा विधा से परिचय।
- ज्ञान का विस्तार।
- स्वाध्याय की प्रेरणा।
- स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास।
- वाचन कौशल, पठन कौशल, लेखन कौशल, श्रवण कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य/सामूहिक कार्य।
2. शिक्षक किसी संस्मरण/रेखाचित्र की समीक्षा कक्षा में सुनाकर कार्य व मूल्यांकन के आधार बिंदु को समझाएँगे।
3. शिक्षक विद्यार्थियों को महादेवी वर्मा के संस्मरण/रेखाचित्र पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। संबंधित पुस्तकों की जानकारी दें।
4. पढ़ने व समीक्षा तैयार करने हेतु विद्यार्थियों को 4-5 दिन का समय अवश्य दें।
5. कक्षा में कुछ पुस्तकें उपलब्ध करवाकर, कुछ समूहों में बांटकर भी कार्य कराया जा सकता हैं।
6. प्रत्येक समूह में 3-4 विद्यार्थी मिलकर एक समीक्षा तैयार करें और एक प्रतिभागी उसे प्रस्तुत करे।
7. इस दौरान शिक्षक आवश्यकतानुसार उनकी सहायता करें।
8. प्रत्येक को समीक्षा प्रस्तुति हेतु 3-4 मिनट का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु के चयन
- विषय वस्तु (संस्मरण/रेखाचित्र) के स्तर
- शब्द चयन व वाक्य रचना
- उच्चारण एवं स्वर की स्पष्टता
- समीक्षा (समग्र प्रस्तुति) तथ्यों का संकलन

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली समीक्षा की सराहना की जाए।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन देकर अच्छा कार्य करने के लिए प्रेरित करना।

प्रदत्त कार्य-2 : कविता का गायन।

विषय : महादेवी वर्मा की अन्य कविता।

उद्देश्य :

- काव्य विधा के प्रति आकर्षण।
- स्वाध्याय की प्रेरणा।
- ज्ञान का विस्तार।
- वाचन व श्रवण कौशल का विकास।
- भावुकता व संवेदनशीलता का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक/व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक महादेवी वर्मा की किसी कविता को कक्षा में सुनाएगा।
3. शिक्षक कार्य व मूल्यांकन के विषय में पहले ही विद्यार्थियों को बताएंगे।

4. 3-4 विद्यार्थियों का एक समूह बनाकर भी कार्य किया जा सकता है।
5. महादेवी वर्मा की कविताओं को विद्यार्थी कहाँ से पढ़ सकते हैं यह शिक्षक बताएंगे। अगर संभव हो तो कुछ पुस्तकें उपलब्ध कराई जाएं।
6. कविता चयन के लिए विद्यार्थियों को दो दिन का समय अवश्य दिया जाए।
7. निर्धारित दिन सभी विद्यार्थी/समूह का एक प्रतिभागी कविता पाठ करेगा।
8. इस समय शिक्षक व अन्य विद्यार्थी मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- कविता का चयन
- उच्चारण क्षमता
- लयबद्धता
- स्वर की स्पष्टता
- आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे कार्य की सराहना की जाए।
- उच्चारण व लय संबंधी कमियों को सुझाव देकर ठीक करने का प्रयास किया जाए।
- कविता चयन न हो पाने व सही कविता चयन न होने पर अतिरिक्त समय दिया जाए ताकि वह कार्य पूरा कर सके।

प्रदत्तकार्य-3 : कार्य-प्रपत्र

विषय : जीव-जंतुओं पर प्रकृति का प्रभाव।

उद्देश्य :

- प्रकृति तथा प्राणी मात्र के संबंधों की जानकारी।
- ज्ञान का विस्तार।

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास।
- चिंतन-मनन प्रवृत्ति का विकास।
- लेखन कौशल का विकास।
- प्रकृति के प्रति भावुक व संवेदनशील बनाना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. कविता समाप्त होने के बाद यह कार्य करवाया जाए।
3. सर्वप्रथम शिक्षक छात्रों को बताएं कि विभिन्न ऋतुओं का मनुष्य पर क्या मानसिक प्रभाव पड़ता है?
4. कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित कराते हुए उपरोक्त विषय से संबंधित कार्य-प्रपत्र पूर्ण करने के लिए दिया जाएगा।
5. उपरोक्त कार्य 'कार्य-प्रपत्र' के माध्यम से अथवा श्याम-पट्ट पर लिखाकर भी करवाया जा सकता हैं।
6. छात्रों को कार्य-प्रपत्र पूर्ण करने के लिए 10-15 मिनट का समय दिया जाए।
7. मूल्यांकन के आधार तथा अंक कार्य से पूर्व श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

कार्य-प्रपत्र

प्रकृति के विभिन्न उपादानों का अथवा स्थिति विशेष में किस पक्षी, जीव-जंतु पर क्या प्रभाव पड़ता है?

- काले बादलों के घिरने पर ....
- पूर्ण चांद को देखकर ....
- बसंत ऋतु के आगमन पर ....
- जलती लौ को देखकर ....
- आम तथा अमरूद के पकने पर ....
- फूलों के खिलने पर ....
- सर्दियों के आगमन पर गहरी नींद सो जाते हैं ....
- वर्षा ऋतु प्रारंभ होते ही स्वर सुनाई देते हैं ....
- फसल के पकने पर धावा बोलते है ....

www.FirstRanker.com

सूरज निकलते ही वातावरण मुखरित हो जाता है	....
स्वाति नक्षत्र में बरसी बूंद को पाकर	....
गोधूलि बेला होते ही	....

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- सही जानकारियां

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- शिक्षक की सहायता के लिए उत्तर-कोयल, भौंरा, चातक,चकोर, चीटियाँ, छिपकली, मेंढक, तितली, टिड्डे, गाय, मोर, पतंगा, तोते।
- कार्य पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- कार्य-प्रपत्र एकत्रित करने के पश्चात् सभी जानकारियां छात्रों की सहायता से श्यामपट्ट पर लिखें।
- कार्य पूर्ण न कर पाने वाले छात्रों को प्रेरणा देकर कार्य पूरा करवाएं।

प्रदत्त कार्य-4 : कैलेण्डर निर्माण

विषय : महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय।

उद्देश्य :

- कवयित्री को जानना।
- उनके योगदान को समझना।
- कलात्मक अभिरुचि।
- चित्रकला का ज्ञान।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक साहित्य में कवयित्री के योगदान पर कक्षा में चर्चा करेगा।

3. गतिविधियों के स्वरूप को समझाएंगे।
4. गतिविधि के लिए आवश्यक सामग्री के बारे में बताएंगे।
5. निर्धारित दिन सभी सामान लेकर बच्चे आएंगे तथा एक कालांश में कैलेण्डर का निर्माण करेंगे।
6. कार्य करते समय अध्यापक बच्चों के बीच अनुशासन बनाकर रखेंगे।
7. कार्य के दौरान शिक्षक आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों की सहायता करें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- संपूर्ण प्रभाव के आधार पर मूल्यांकन बिन्दु तय किया जाए।

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली कैलेण्डर की सराहना।
- अधूरे कार्य को मार्गदर्शन देकर पूरा करवाया जाए।
- कमियों को दूर करने हेतु प्रयास किया जाए।
- सर्वश्रेष्ठ कैलेण्डर को विद्यालय के सूचना पट पर प्रदर्शित किया जाए।
- अच्छा कार्य करने वाले विद्यार्थी की सराहना की जाए।

प्रदत्त कार्य–5 : चित्र वर्णन

विषय : चित्र देखकर भाव व्यक्त करना।

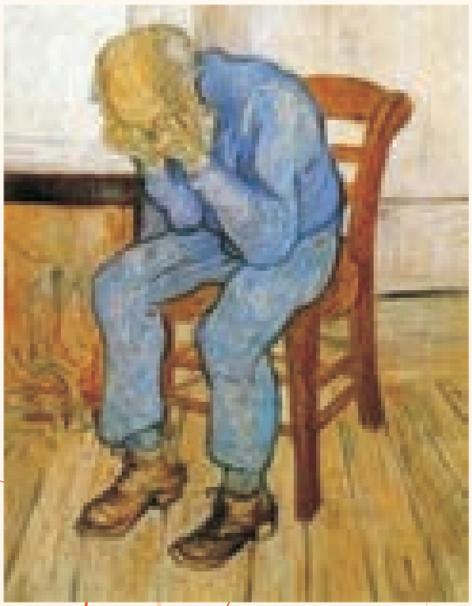

उद्देश्य :

- भावुकता व संवेदनशीलता का विकास।
- कल्पनाशीलता का विकास।
- शब्द भंडार में वृद्धि।
- श्रवण–वाचन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. अध्यापक चित्र वर्णन के स्वरूप से विद्यार्थी को परिचित कराएं।
3. छात्रों को विचार करने तथा मुख्य बिंदु लिखने हेतु 10 मिनट का समय दिया जाए।
4. प्रत्येक छात्र को अभिव्यक्ति हेतु 1–2 मिनट का समय दिया जाए।
5. अध्यापक ध्यान रखें कि प्रत्येक छात्र ध्यानपूर्वक कार्य में हिस्सा ले रहा है।
6. छात्र तथा अध्यापक मिलकर कार्य का मूल्यांकन करें।
7. मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषयानुकूल
- अभिव्यक्ति
- भाषा
- भाव एवं आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य पूर्ण करने के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- कार्य में कमी रहने पर छात्र की कमी दूर करने के लिए प्रेरित करें।
- उच्चारण संबंधी त्रुटियों को दूर करने के लिए सामान्य रूप से सुझाव दें।

तोप

वीरेन डंगवाल

प्रदत्त कार्य–1 : कार्यप्रपत्र 'ऐतिहासिक इमारतों संबंधी'

उद्देश्य :

- भारतीय विरासत की जानकारी।
- ज्ञान का विस्तार।
- स्मरण शक्ति का विस्तार।
- सामान्य ज्ञान में वृद्धि।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक भारत में विभिन्न स्थलों पर हुए स्वतंत्रता संग्रामों व इतिहास पर चर्चा करेंगे।
3. कविता पढ़ाने के बाद ही यह कार्य प्रपत्र दिया जाएगा।
4. कार्य करने से पूर्व मूल्यांकन का आधार विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।

कार्य प्रपत्र

	ऐतिहासिक इमारत	क्षेत्र
1.	लालकिला	....
2.	गेटवे ऑफ इंडिया	....
3.	चारमीनार	....
4.	इंडिया गेट	....
5.	ताजमहल	....
6.	हवा महल	....
7.	विक्टोरिया पैलेस	....

8.	चित्तौड़ का किला	....
9.	आमेर का किला	....
10.	महाराजा पैलेस	....

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- सही उत्तर

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- शिक्षक ध्यान रखें कि सभी विद्यार्थी सक्रिय रूप से कार्य करें।
- सर्वप्रथम सही कार्य के लिए सराहना की जाएगी।
- सही उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।

प्रदत्त कार्य–2 : कोलॉज बनाना।

विषय : ऐतिहासिक इमारतें

उद्देश्य :

- देशभक्ति की भावना का विकास।
- ज्ञान में अभिवृद्धि।
- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास।
- आत्मविश्वास में अभिवृद्धि।
- मंच भय से मुक्ति।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. अध्यापक गतिविधियों के बारे में समझाएंगे।

www.FirstRanker.com

3. गतिविधियों के लिए कक्षा को समूह में बाँटेंगे।
4. सभी विद्यार्थियों को गतिविधि के लिए आवश्यक सामान लेकर आने के लिए कहा जाएगा।
5. कार्य करने के लिए 20 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. मूल्यांकन के आधार बिंदु कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विद्यार्थियों द्वारा किए गए कार्य के आधार पर

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन के आधार स्वयं तय कर विद्यार्थियों को बताएं।
- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- श्रेष्ठ कोलॉज की सराहना की जाए।
- औसत/कमजोर कोलॉज को प्रोत्साहित किया जाए।
- श्रेष्ठ कोलॉज को विद्यालय के प्रदर्शन पट्ट पर लगाएं।

प्रदत्त कार्य–3 : क्रांतिकारियों के जीवन पर आधारित परियोजना कार्य।

विषय : भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, लाला लाजपत राय में से किसी एक पर।

उद्देश्य :

- देशभक्ति की भावना का विकास।
- क्रांतिकारियों के त्याग को समझेंगे।
- ज्ञान का विस्तार।
- प्रस्तुतीकरण शैली का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. 'तोप' कविता पढ़ाने के पश्चात् शिक्षक स्वतंत्रता संग्राम पर चर्चा करेंगे।

www.FirstRanker.com

3. पूरी कक्षा को विभिन्न समूहों में बांटा जाए।
4. प्रत्येक समूह में चार-पांच विद्यार्थी हो सकते हैं।
5. क्रांतिकारियों में से हर वर्ग को एक-एक क्रांतिकारी देकर उस पर परियोजना कार्य दिया जाए।
6. क्रांतिकारियों के जीवन को तीन-चार भागों में बाँटकर चित्र सहित जानकारी को प्रस्तुत करना।
7. इस कार्य को पूरा करने के लिए एक सप्ताह का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- भाषा
- प्रस्तुति की शैली

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- शिक्षक सभी के प्रयासों को सराहें।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतियों की विशेष सराहना।
- अपूर्ण व कम अच्छे स्तर के कार्य को सहयोग व प्रोत्साहन।
- सभी के कार्यों की कक्षा में प्रदर्शनी लगवाई जाए।

प्रदत्त कार्य-4 : संस्मरण लेखन/वाचन।

विषय : किसी ऐतिहासिक स्थल/इमारत के बारे में लिखकर बताएं जिसे आपने देखा हो।

उद्देश्य :

- संस्मरण लेखन/वाचन का अभ्यास।
- ऐतिहासिक स्थल/इमारतों की ओर ध्यान आकर्षित करना।
- स्थान विशेष के संबंध में जानकारी।
- लेखन/वाचन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक किसी ऐसे ऐतिहासिक स्थल/इमारत के विषय में संक्षेप में बताएं जिसे उन्होंने स्वयं देखा है।
3. कार्य व मूल्यांकन की सम्पूर्ण जानकारी पहले ही दे दी जाए।
4. पाठ को समझा लेने के पश्चात् यह कार्य कराया जाए।
5. लिखित या मौखिक दोनों रूपों में कार्य कराया जा सकता है। मुख्य बिंदु लिखकर विद्यार्थी कक्षा में अपने विचार प्रस्तुत कर सकता है।
6. इस कार्य के लिए 10-15 मिनट का समय अवश्य दिया जाए।
7. इस दौरान शिक्षक आवश्यकता अनुसार विद्यार्थियों की सहायता करें।
8. प्रत्येक छात्र अपना संस्मरण प्रस्तुत करेगा।
9. विद्यार्थी व शिक्षक दोनों मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- क्रमबद्ध एवं प्रभावशाली अभिव्यक्ति
- विषयवस्तु
- भाषा, वर्तनी, उच्चारण

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वाधिक सटीक जानकारी देने वाले व प्रभावशाली अभिव्यक्ति करने वाले विद्यार्थियों की सराहना।
- औसत कार्य को प्रोत्साहन देकर अच्छा कार्य करने के लिए अभिप्रेरित करें।
- जो कार्य पूरा नहीं कर पाए उन्हें अतिरिक्त समय दिया जाए।

www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य-5 : नुक्कड़ नाटक का लेखन एवं प्रस्तुति।

विषय : 'ऐतिहासिक इमारतों की सुरक्षा जरूरी'

उद्देश्य :

- भारतीय ऐतिहासिक इमारतों का परिचय।
- ऐतिहासिक इमारतों के प्रति संवेदनशीलता।
- संवाद शैली का विकास।
- नुक्कड़ नाटक की विधा का परिचय।
- कलात्मक अभिरूचि का विकास।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा कविता का पाठन करवाने के पश्चात् विद्यार्थियों से विभिन्न ऐतिहासिक इमारतों व उनकी वर्तमान स्थिति के बारे में बात की जाएगी।
3. शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाए कि ऐतिहासिक इमारतों का संरक्षण आवश्यक है। इसी दिशा में लोगों में चेतना लाने हेतु पूरी कक्षा को विभिन्न समूहों में बाँटा जाए।
4. प्रत्येक समूह में छः-सात विद्यार्थी हो सकते है।
5. प्रत्येक समूह को "ऐतिहासिक इमारतों की सुरक्षा जरूरी" शीर्षक के अन्तर्गत एक नुक्कड़ नाटक लिखने व प्रस्तुत करने के लिए एक सप्ताह का समय दिया जाए।
6. विद्यार्थियों को मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जए।
7. सप्ताह के दौरान शिक्षक विद्यार्थियों से उनकी कार्य संबंधी प्रगति के विषय में बातचीत करते रहेंगे व यथासंभव सहायता भी करेंगे।
8. प्रत्येक प्रस्तुति को 5-6 मिनट का समय दिया जाए।
9. जब एक समूह प्रस्तुति करेगा तब अन्य विद्यार्थी व शिक्षक उसका मूल्यांकन कर सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु

- संवाद शैली
- अभिनय क्षमता
- शब्द चयन व वाक्य प्रयोग
- प्रस्तुतीकरण

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सभी प्रस्तुतियों की सराहना।
- सर्वश्रेष्ठ अभिनय व प्रस्तुति की विशेष सराहना।
- सामान्य वाक्य रचना, संवाद लेखन व नुक्कड़ नाटक प्रस्तुति संबंधी कमियों से विद्यार्थियों को परिचित करवाना।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के मंच पर अभिनीत करवाया जाए।

कर चले हम फ़िदा

कैफ़ी आज़मी

प्रदत्त कार्य-1 : गीत चयन एवं गायन।

विषय : देशभक्ति से संबंधित गीत को लिखना एवं प्रस्तुत करना।

उद्देश्य :

- देशभक्ति की भावना।
- ज्ञान का विस्तार।
- संगीत के प्रति रुचि।
- वाचन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. कार्य से परिचित करवाते हुए अध्यापक विद्यार्थियों के समक्ष कुछ मुखड़े लिखेगा – जैसे –

   मेरे देश की धरती सोना उगले,

   मेरा रंग दे बसंती चोला,

   ये मंदिरों का देश है, ये मस्जिदों की सरज़मी
3. संपूर्ण कक्षा को समूहों में विभक्त किया जाएगा।
4. कार्य करने के लिए विद्यार्थियों को 2-3 दिन का समय दिया जाएगा।
5. प्रस्तुति के लिए प्रत्येक समूह को 2-3 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. मूल्यांकन के आधार बिंदु कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- गीत का उत्तर
- सस्वर गायन (लय, आरोह-अवरोह)

www.FirstRanker.com

- सक्रिय योगदान
- उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की पूर्णता पर प्रत्येक समूह की सराहना की जाए।
- सर्वश्रेष्ठ समूह गायन को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत किया जाए।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन दिया जाएगा।

प्रदत्त कार्य–2 : निबंध लेखन

विषय : 'फिल्मों का समाज के विकास में योगदान'

उद्देश्य :

- आसपास के वातावरण के प्रति जागरुकता।
- चिंतन–मनन प्रवृत्ति का विकास।
- ज्ञान का विस्तार।
- अभिव्यक्ति कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा किसी भी फिल्म के माध्यम से विद्यार्थियों व समाज पर उसके प्रभाव के विषय पर बातचीत की जाएगी।
3. तैयार के लिए 'विषय' पहले बता दिया जाएगा।
4. निर्धारित कालांश में निबंध लेखन कराया जाए।
5. मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- भूमिका
- विषय
- भाषा

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रत्येक विद्यार्थी को निबंध 250-300 शब्दों में लिखना चाहिए।
- फिल्मों का उदाहरण दें तो अच्छा है।
- मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- सर्वश्रेष्ठ लेखन की सराहना की जाए।

प्रदत्त कार्य-3 : परियोजना कार्य

विषय : 'देश की जल, थल, वायु सेना व सैनिकों के विषय में जानकारी व चित्र एकत्रित करना'

उद्देश्य :

- सैनिकों के प्रति गौरव भाव जगाना।
- भावुकता व संवेदनशीलता का विकास।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति व स्वाध्याय का विकास।
- तथ्य संकलन की प्रेरणा।
- लेखन क्षमता का विकास।
- ज्ञान का विस्तार।
- शब्द भंडार में वृद्धि व अनुप्रयोग।

निर्धारित समय : एक कालांश

www.FirstRanker.com

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य/सामूहिक कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक 1962 में चीन द्वारा आक्रमण, 1965 में पाकिस्तान द्वारा, 1971 में बांग्लादेश के आक्रमण तथा 1999 के कारगिल युद्ध का उल्लेख करते हुए देश की सीमाओं की सुरक्षा के संदर्भ में सैनिकों की वीरता के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित करवाएँगे।
3. यह कार्य कविता आरंभ करने से पूर्व करवाया जाए।
4. छात्रों को पुस्तकालय/इंटरनेट/अध्यापक/माता-पिता से जानकारी एकत्र करने का निर्देश दें साथ ही चित्र इकट्ठे करने की प्रेरणा दें।
5. इस कार्य के लिए छात्रों को एक सप्ताह का समय दिया जाए।
6. छात्र परियोजना पुस्तिका में एकत्रित किए हुए चित्र चिपकाएं तथा प्राप्त जानकारी लिखें।
7. मूल्यांकन के आधार तथा अंक छात्रों को पूर्व में ही बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- अधिकतम जानकारी एकत्रित करना
- प्रस्तुतीकरण (चित्रों का समावेश, कलात्मकता सौंदर्य)
- शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना, शुद्ध वर्तनी

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की समग्रता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना।
- कार्य पूर्ण न कर पाने पर छात्रों को पूरा करने की प्रेरणा।
- किसी भी दृष्टि से कमी रहने पर दूर करने के लिए सुझाव।
- सर्वश्रेष्ठ परियोजना कार्य का चयन व प्रदर्शन।

www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य-4 : एकांकी मंचन

विषय : देशभक्ति/देशरक्षा

उद्देश्य :

- देश प्रेम एवं गौरव भाव जागृत करना।
- देश के प्रति दायित्व बोध जागृत करना।
- एकांकी विद्या से परिचय।
- पटकथा लेखन कौशल तथा संवाद शैली का विकास।
- अभिनय क्षमता का विकास।
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. शिक्षक किसी देशभक्ति पर आधारित फिल्म, धारावाहिक, उपन्यास का उल्लेख करते हुए कार्य के स्वरूप छात्रों को स्पष्ट करेंगे।
3. कक्षा को कुछ समूहों में बांटा जाएगा।
4. एकांकी की तैयारी के लिए विद्यार्थियों को कम से कम एक सप्ताह का समय अवश्य दिया जाए।
5. नियत दिन सभी समूह एकांकी प्रस्तुत करेंगे। शिक्षक व विद्यार्थी सभी प्रस्तुतियों का मूल्यांकन करेंगे।
6. मूल्यांकन के आधार पहले ही बता दिए जाएँ।
7. एकांकी प्रस्तुति हेतु 5-7 मिनट का समय निर्धारित किया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- पटकथा लेखन
- मौलिकता
- अभिनय व संवाद शैली
- सहभागिता व सक्रिय योगदान
- समग्र प्रस्तुति

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति की सराहना।
- छात्रों के सामूहिक प्रयासों की सराहना।
- अभिनय विशेष की सराहना।
- कमी रहने पर सुधार हेतु सुझाव।
- सर्वश्रेष्ठ एकांकी की विद्यालय मंच पर प्रस्तुति।

प्रदत्त कार्य–5 : साक्षात्कार

विषय: सैनिक से

उद्देश्य :

- साक्षात्कार विधा से परिचय।
- वाचन एवं लेखन कौशल का विकास।
- देशभक्ति की भावना।
- ज्ञान में अभिवृद्धि।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक साक्षात्कार विधा से विद्यार्थियों को परिचित करवाएंगे।
2. विद्याथियों को किसी एक सैनिक / सेवानिवृत सैनिक का साक्षात्कारी करने को कहा जाएगा।
3. अध्यापक साक्षात्कार हेतु कुछ प्रश्न देगा जैसे –
   - सैनिक का नाम –
   - आयु –
   - रुचि –
   - परिवार के सदस्य –

- सेना में भर्ती होने का निर्णय क्यों लिया –
- सीमा पर व्यक्तिगत अनुभव –
- सैनिक की विशेष इच्छा –
- मेरी अपेक्षाएं –
- युद्ध के विषय में विस्तार –

3. विद्यार्थी साक्षात्कार के लिए प्रश्नावली तैयार करेंगे।
4. साक्षात्कार के लिए विद्यार्थियों को एक सप्ताह का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- एकत्रित जानकारी
- प्रश्नों का उत्तर

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अधिक जानकारी लाने वाले छात्रों की प्रशंसा की जाए।
- कार्य पूर्ण न करने वाले छात्रों को प्रोत्साहित किया जाए।
- श्रेष्ठ जानकारी को सूचनापट्ट पर लगाया जाए।

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

आत्मत्राण

रवींद्रनाथ ठाकुर

प्रदत्त कार्य–1 : प्रार्थना गीतों का संकलन।

विषय : प्रार्थना गीतों का संकलन तैयार करना।

उद्देश्य :

- भावाभिव्यक्ति की क्षमता का विकास।
- प्रार्थना गीतों की समझ।
- सहभागी प्रवृत्ति का विकास।
- प्रार्थना में प्रयुक्त मूल्यों की समझ।
- मंच भय से मुक्ति।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. कार्य के बारे में विद्यार्थियों को बताएंगे।
3. कार्य व मूल्यांकन से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी पहले ही दे दी जाए।
4. विद्यार्थियों को कुछ समूहों में बांटकर 3–4 दिन तैयारी हेतु अवश्य दिए जाएं। तैयारी में शिक्षक उनकी सहायता करेंगे।
5. तय दिवस को सभी समूह अपना संकलन प्रस्तुत करेंगे।
6. शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों मूल्यांकन करेंगे।
7. विद्यार्थी चित्रों का, रंगों का प्रयोग कर सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- संकलित प्रार्थना

www.FirstRanker.com

- संपूर्ण प्रभाव
- प्रस्तुति

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली संकलन की सराहना।
- औसत संकलन को प्रोत्साहन देकर अच्छा करने की प्रेरणा दी जाएगी।
- कमियों के सुधार हेतु सुझाव दिया जाएगा।
- सर्वश्रेष्ठ संकलन का प्रदर्शन किया जाए।

प्रदत्त कार्य-2 : सूची तैयार करना ।

विषय : नोबेल पुरस्कार प्राप्त भारतीयों की सूची तैयार करना।

उद्देश्य :

- नोबेल पुरस्कार प्राप्त भारतीयों को जानना।
- उनके कार्य क्षेत्र तथा योगदान को समझना।
- पढ़ने तथा समझने की शक्ति का विकास।
- लेखन तथा समझ के कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम शिक्षक कार्य के बारे में विद्यार्थियों को समझाएं।
2. उन्हें गतिविधि की तैयारी के लिए उचित समय दें।
3. गतिविधि के लिए निर्धारित कालांश में गतिविधि कराएं।
4. इस कार्य के लिए उन्हें 10-20 मिनट का समय अवश्य दिया जाए।
5. मूल्यांकन के आधार पहले बता दिए जाएं।
6. इस दौरान शिक्षक प्रत्येक छात्र की गतिविधि पर ध्यान रखें और आवश्यकता अनुसार उनकी सहायता करें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- नोबेल पुरस्कार प्राप्त भारतीय के नाम तथा क्षेत्र
- क्रमबद्धता
- प्रस्तुति

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी सूची की सराहना की जाएगी।
- कमियों को बताकर सुधार हेतु सुझाव दिए जाएंगे।

प्रदत्त कार्य-3 : कहानी संकलन

विषय : सुख-दुख जीवन के दो पहिये।

उद्देश्य :

- कहानी में रुचि उत्पन्न करना।
- कथ्य की समझ।
- पढ़ने तथा समझने के कौशल का विकास।
- कथ्य के आधार पर कहानी को संकलित करना।
- लेखन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक इस गतिविधि को समझाएंगे।
3. विद्यार्थी को दिए गए विषय पर संकलन के लिए दो दिन का समय दिया जाएगा।
4. अध्यापक विद्यार्थियों को पुस्तकालय, इंटरनेट व अन्य स्त्रोतों का उपयोग करने को प्रेरित करेगा।
5. निश्चित कालांश में सभी विद्यार्थियों कार्यों का संग्रह प्रदर्शित करेंगे।

6. मूल्यांकन के आधार बता दिए जाएंगे।
7. अध्यापक कार्य का मूल्यांकन कर विद्यार्थियों को उनका संकलन वापस करेंगे।
8. मूल्यांकन का आधार पहले ही स्पष्ट कर दिए जाएं।

नोट – अन्य शब्द भी दिए जा सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- कथा संकलन का स्तर
- प्रभावशाली कथा
- संकलन
- प्रस्तुति

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली संकलन की सराहना की जाए।
- औसत संकलन को सुधारने के लिए प्रोत्साहन।

प्रदत्त कार्य-4 : गायन/वाचन

विषय : रवींद्रनाथ ठाकुर की किसी अन्य रचना का गायन/वाचन।

उद्देश्य :

- काव्य के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना।
- संगीतात्मक अभिरुचि का विकास।
- रवींद्रनाथ की अन्य रचनाओं का ज्ञान।
- सहभागिता का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत/सामूहिक कार्य।

2. सर्वप्रथम शिक्षक रवींद्रनाथ की कुछ रचनाओं के बारे में कक्षा में चर्चा करें।
3. इन रचनाओं को पढ़ने के लिए मार्गदर्शन करें।
4. कार्य से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी पहले ही दे दी जाए।
5. मूल्यांकन के आधार भी पहले ही समझा दिए जाएं।
6. सामूहिक कार्य हेतु कक्षा को कुछ समूहों में बांट दिया जाए।
7. तैयारी हेतु विद्यार्थियों को 5-7 दिन का समय अवश्य दिया जाए।
8. इस दौरान शिक्षक छात्रों की सहायता करें ताकि वे रचनाओं का चयन एवं गायन का अभ्यास कर सकें।
9. पूर्व निश्चित दिन प्रत्येक समूह गायन करेंगे।
10. वाद्य यंत्रों का उपयोग भी किया जा सकता है।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- रचना का स्तर
- स्वर (लय, आरोह-अवरोह, गेयता)
- उच्चारण की शुद्धता
- भावाभिव्यक्ति
- आत्मविश्वास/समग्र प्रस्तुति

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- मधुर व प्रभावशाली वाचन/गायन के लिए सराहना की जाए।
- औसत प्रस्तुतियों को प्रोत्साहन दिया जाए। अच्छी प्रस्तुति हेतु सुझाव दिए जाएं।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाए।

www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य–5 : परियोजना कार्य

विषय : शांति निकेतन के बारे में जानकारी एकत्रित कर प्रस्तुत करना।

उद्देश्य :

- जिज्ञासु प्रवृत्ति व स्वाध्याय का विकास।
- देश के महत्वपूर्ण स्थानों के प्रति गौरव भाव जगाना।
- बौद्धिक विकास।
- लेखन क्षमता का विकास।
- ज्ञान का विस्तार।
- शब्द भंडार में वृद्धि व अनुप्रयोग।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. शिक्षक कुछ प्राचीन व महत्वपूर्ण शिक्षा केंद्रों के विषय में बताते हुए कार्य से छात्रों को परिचित करवाएँ जैसे – नालंदा विश्वविद्यालय, तक्षशिला इत्यादि....।
3. यह कार्य कविता पढ़ाने के पश्चात् करवाया जाए।
4. छात्रों को पुस्तकालय अथवा इंटरनेट से जानकारी तथा चित्र एकत्रित करने के लिए कहा जाए। जानकारी एकत्रित करने के संदर्भ में छात्रों का कुछ प्रश्नों के माध्यम से मार्गदर्शन करें – जैसे
   - शांति निकेतन की स्थापना किसने की?
   - कब की?
   - शांति निकेतन कहां स्थित है?
   - वर्तमान काल में उसका स्वरूप व महत्व........?
   - यहां से शिक्षा प्राप्त कुछ महान व्यक्तियों का नाम.....इत्यादि........।
5. छात्रों को शन्तिनिकेतन एवं अपने विद्यालय पर 100 शब्दों में तुलनात्मक टिप्पणी लिखने को कहें।
6. मूल्यांकन के आधार बिंदु तथा अंक विभाजन पूर्व में ही छात्रों को बता दिए जाएं।
7. इस कार्य के लिए छात्रों को एक सप्ताह का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- अधिकतम जानकारी एकत्रित करने पर
- प्रस्तुतीकरण (कलात्मकता, चित्र, सुंदरता)
- शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना, शुद्ध वर्तनी

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की समग्रता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- कार्य पूर्ण न कर पाने पर छात्रों को प्रोत्साहित करें तथा अन्य विद्यार्थियों के सहयोग से पूरा करने के लिए प्रेरित करें।
- लेखन संबंधी अशुद्धियों को दूर करने के लिए सुझाव दें।
- सर्वश्रेष्ठ परियोजना कार्य का चयन कर कक्षा में उसका प्रदर्शन करें।

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

बड़े भाई साहब

प्रेमचंद

प्रदत्त कार्य–1 : वाद–विवाद

विषय : बड़े भाई साहब छोटे भाई से समझदार हैं।

उद्देश्य :

- विषय की समझ।
- तर्क–वितर्क की क्षमता।
- व्यक्तिगत दृष्टिकोण का विकास।
- चिंतन कौशल का विकास।
- समानुभूति तथा सहानुभूति की क्षमता में वृद्धि।

निर्धारित समय : 2 मिनट प्रति विद्यार्थी (तीन कालांश)

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. शिक्षक विद्यार्थियों को दो–दो के वर्ग में बाँट कर विषय के संदर्भ में संक्षेप में समझाएँ।
3. प्रत्येक वर्ग से एक विद्यार्थी पक्ष में और एक विपक्ष में अपने–अपने विचार प्रस्तुत करेगा।
4. मूल्यांकन के आधार बिंदुओं को पूर्व में ही बता दिया जाएगा।
5. विद्यार्थियों को तैयारी के लिए एक दिन का समय दिया जाएगा।
6. शिक्षक श्यामपट्ट पर मूल्यांकन प्रपत्र तैयार कर स्तरानुसार अंक देंगे–

क्र०	नाम	विषय	प्रस्तुति	भाषा	कुल अंक
1.					
2.					
3.					
4.					
5.					

7. पक्ष व विपक्ष के मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।

www.FirstRanker.com

टिप्पणी :

- अध्यापक अन्य बिन्दुओं के आधार पर भी मूल्यांकित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रत्येक वक्ता को अभिप्रेरित एवं प्रोत्साहित करना।
- अच्छे प्रस्तुतीकरण की सराहना।
- कमजोर प्रस्तुतीकरण में सुधार तथा सराहना।
- मुख्य तार्किक बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखना।
- शिक्षक को विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित करना चाहिए।

प्रदत्त कार्य–2 : विचार विमर्श

विषय : 'जीवन में समय नियोजन की आवश्यकता'

उद्देश्य :

- विषय को समझना।
- समय के महत्व को समझना।
- समय का उचित उपयोग।
- चिंतन कौशल का विकास।
- आत्मविश्वास एवं अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित करना।

निर्धारित समय : (दो मिनट प्रति विद्यार्थी)– तीन कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक छात्रों के समक्ष पाठ में निहित समय नियोजन के संदर्भ में बात करेंगे। चर्चा में विद्यार्थियों को शामिल करेंगे।
3. चर्चा के बाद विद्यार्थियों को गतिविधि के बारे में बता कर समय दिया जाएगा।
4. मूल्यांकन के आधार छात्रों को पहले ही बता दिए जायेंगे।
5. प्रत्येक को बोलने के लिए दो मिनट का समय दिया जाएगा।

www.FirstRanker.com

6. शिक्षक निर्णायक की भूमिका में रहेंगे।

7. एक वक्ता की प्रस्तुति के समय अध्यापक एवं अन्य छात्र उनका मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

क्र०	नाम	विषय (2)	प्रस्तुति (2)	आत्मविश्वास (1)	कुल
1.					
2.					
3.					
4.					
5.					

टिप्पणी :

- शिक्षक आवश्यकतानुसार अन्य मूल्यांकन बिन्दुओं को भी मूल्यांकन का आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- विषय से संबंधित विचार बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- शिक्षक प्रोत्साहन के साथ आदर्श विचार व्यक्त कर बताएँ।
- समय नियोजन के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- अच्छी प्रस्तुति की सराहना की जाए।

प्रदत्त कार्य-3 : मुहावरों की पहचान।

विषय : पाठ पर आधारित मुहावरे छाँटकर वाक्य में प्रयोग।

उद्देश्य :

- मुहावरों की पहचान।
- वाक्य प्रयोग द्वारा अनुप्रयोग की क्षमता का विकास।
- शब्द भंडार में वृद्धि।
- स्वाध्याय की प्रेरणा।
- मानवीय मूल्यों को समझाना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. अध्यापक छात्रों से कुछ मुहावरे पूछकर श्यामपट्ट पर लिखेंगे।
3. श्यामपट्ट पर लिखे मुहावरों का छात्रों से वाक्य-प्रयोग करवाया जाएगा।
4. अध्यापक छात्रों को पाठ में से मुहावरे छाँटकर लिखने तथा उनसे सार्थक वाक्य बनाने का निर्देश देंगे।
5. इस कार्य के लिए छात्रों को 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. अध्यापक विद्यार्थियों की गतिविधियों का ध्यान रखेंगे तथा आवश्यकतानुसार उनका मार्गदर्शन करेंगे।
7. विद्यार्थियों को पूर्व में ही मूल्यांकन के आधार व अंकों के विषय में सूचित किया जाएगा

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- सार्थक वाक्य रचना
- भाषा की शुद्धता - वाक्य स्तर पर, वर्तनी स्तर पर, विराम चिह्न
- वाक्य रचना का स्तर
- कार्य की पूर्णता

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से किसी अन्य उपयुक्त मूल्यांकन बिन्दु को आधार बनाकर अंक विभाजन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- समय पर कार्य पूर्ण करने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- कार्य पूर्ण न कर पाने वाले विद्यार्थियों को प्रेरणा व सहयोग दिया जाए।

प्रदत्त कार्य-4 : स्वानुभव लेखन

विषय : "जब मेरे कम अंक आए तो….."

उद्देश्य :

- चिंतन-मनन की क्षमता का विकास।

www.FirstRanker.com

- विचारों को व्यक्त करने की क्षमता का विकास।
- लेखन कौशल का विकास।
- सत्य को स्वीकारने की शक्ति का विकास।
- स्वमूल्यांकन की क्षमता का विकास।
- आत्मविश्लेषण की क्षमता का विकास।
- अंको से हटकर सोचना।
- सीखने पर बल।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक स्वानुभव छात्रों को सुनाएंगे 'जब बचपन में उनकी कमियों पर उन्हें नसीहतें दी गई।' तब उन पर क्या प्रभाव पड़ा।
3. प्रत्येक विद्यार्थी को लिखने के लिए 20 मिनट का समय दिया जाएगा।
4. लिखने के बाद उत्तर पत्रक शिक्षक समेट लेंगे।
5. शिक्षक विद्यार्थियों के लेखन को ध्यानपूर्वक देखकर अगले दिन परिणाम बताने की बात कहेंगे।
6. मूल्यांकन का आधार विद्यार्थियों को पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- मौलिकता
- भाषायी शुद्धता
- विचारों की क्रमबद्धता
- आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- शिक्षक आवश्यकतानुसार अन्य उपयोगी बिन्दुओं को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे लेख की सराहना।
- कमजोर/औसत प्रस्तुतीकरण को प्रोत्साहन तथा सशक्त बनाने के उपाय।
- भाषा संबंधी अशुद्धियों को दूर करने का प्रयास किया जाए।

प्रदत्त कार्य-5 : 'बड़े भाई साहब' पाठ का नाट्य मंचन

उद्देश्य :

- विद्यार्थी विषय को समझ सकेंगे।
- अभिनय कला विकसित होगी।
- सहानुभूति तथा समानुभूति के भाव पुष्ट होंगे।
- संवाद बोलने तथा लिखने की क्षमता विकसित होगी।
- समझ एवं प्रस्तुति विकसित होगी।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. समूह कार्य (प्रत्येक समूह में सात-आठ छात्र हो सकते हैं)
2. यह कार्य पूरा पाठ पढ़ाने और समझाने के पश्चात् दिया जाएगा।
3. अध्यापक कहानी को नाटक के रूप में बदलना सिखाएंगे।
4. विद्यार्थियों द्वारा लिखे गए संवाद को बीच-बीच में देखना आवश्यक।
5. मूल्यांकन के आधार बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखना (प्रत्येक नाटक की प्रस्तुति का समय 5-7 मिनट)
6. तैयारी के लिए एक सप्ताह का समय दिया जाएगा।
7. अध्यापक सप्ताह के बीच-बीच में छात्रों से उनके कार्य की प्रगति पर बातचीत करके प्रोत्साहित करते रहेंगे।
8. नियत दिन पर प्रत्येक समूह की प्रस्तुति के समय अध्यापक व कक्षा के अन्य समूह उसका मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषयवस्तु
- संवाद शैली

www.FirstRanker.com

- अभिनय शैली
- सहभागिता व सक्रिय योगदान
- आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयोगी बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- छात्रों के सामूहिक प्रयासों की सराहना।
- अभिनय विशेष की सराहना।
- कमजोर अभिनय व प्रस्तुति को प्रोत्साहन।
- अभिनय के लिए आवश्यक निर्देश देना।

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

डायरी का एक पन्ना

सीताराम सेकसरिया

प्रदत्त कार्य-1 : डायरी-लेखन

उद्देश्य :

- डायरी लेखन विधा से परिचय।
- आत्मविश्लेषण क्षमता का विकास।
- लेखन कौशल का विकास।
- निरीक्षण एवं स्मरण शक्ति का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. शिक्षक सर्वप्रथम विद्यार्थियों को डायरी-लेखन विधा के विषय में बताएँ।
3. डायरी-लेखन के लिए आवश्यक तथ्यों को समझाया जाए। जैसे- दिन, दिनांक, समय, विवरण, मौलिकता, निष्पक्षता, स्पष्टता एवं सत्यता आदि।
4. मूल्यांकन के आधार बिंदु पहले ही बता दिए जाएँ।
5. इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को कम से कम दो दिन पूर्व ही सूचित कर दिया जाए।
6. विद्यार्थी अपने पूरे दिन की दिनचर्या को संक्षेप में लिखें।
7. शिक्षक लिखित पत्र की जांच कर मूल्यांकन कर सकते हैं अथवा लिखित पत्र को विद्यार्थी कक्षा में सुना भी सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- डायरी लेखन प्रारूप
- विषय वस्तु
- भाषा, वर्तनी
- समग्र प्रस्तुति

www.FirstRanker.com

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयोगी बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली कार्य की सराहना की जाए।
- अधूरे कार्य को पूर्ण करने हेतु थोड़ा और समय दिया जाए।
- महत्वपूर्ण बिन्दुओं के चयन हेतु मार्गदर्शन किया जाए।
- अशुद्धियों का सुधार कर शुद्ध लेखन के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य–2 : परिचर्चा

विषय : स्वाधीनता संग्राम और कोलकाता का योगदान।

उद्देश्य :

- पाठ को पढ़ना, समझना तथा बोलना।
- सामाजिक एवं भावनात्मक कौशल का विकास।
- देशभक्ति के मूल्यों का विकास।
- तर्क–वितर्क एवं आत्मविश्वास की शक्ति का विकास।
- स्वाध्याय की प्रेरणा।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. अध्यापक सुभाष बाबू तथा सहयोगियों के योगदान को रेखांकित करें।
3. कोलकाता के सामने क्या चुनौती थी? जैसे प्रश्न से परिचर्चा आरंभ करवाएंगे।
4. तीन या चार विद्यार्थियों को समूह में बाँट देंगे ताकि परिचर्चा में सभी विद्यार्थी भाग ले सकें।
5. कार्य का मूल्यांकन छात्र व अध्यापक दोनों मिलकर कर सकते हैं।
6. कार्य से पूर्व मूल्यांकन के आधार व अंक श्याम–पट्ट पर लिख दिए जाएंगे।

www.FirstRanker.com

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- तर्क के साथ बात
- भाषा और आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- परिचर्चा के दौरान शिक्षक विषय से जोड़ रखने में विद्यार्थियों की मदद कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- उत्कृष्ट वक्तव्य की प्रशंसा की जाए।
- कार्य में कमी होने पर विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें तथा सुधार हेतु सुझाव दें।
- परिचर्चा के दौरान स्वतंत्रता संग्राम में कोलकाता के उल्लेखनीय योगदान को क्रमशः बोर्ड पर लिखा जाए।
- छात्रों के सहयोग से सर्वश्रेष्ठ वक्ता का चयन किया जा सकता है।

प्रदत्त कार्य–3 : परियोजना कार्य

विषय : सुभाष बाबू के सहयोगी महिला सेनानियों की भूमिका।

उद्देश्य :

- पाठ के संदर्भ में ऐतिहासिकता को समझना।
- स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं के योगदान का ज्ञान।
- संगठनात्मक शक्ति को समझना।
- देशभक्ति की भावना का संचार।
- महिलाओं के संघर्ष तथा साहस को समझना।
- स्वाध्याय की प्रेरणा।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. सर्वप्रथम अध्यापक लक्ष्मीबाई, चेन्नमा, सरोजिनी नायडू आदि महिला स्वतंत्रता सेनानियों का उदाहरण देते हुए पाठ को समझाएँगे।

3. अध्यापक विद्यार्थियों को पाँच-छः के समूह में बाँटकर 25 मिनट का समय देकर कार्य आरंभ करवाएंगे।
4. अध्यापक बीच-बीच में विद्यार्थियों को समझाते रहें।
5. स्मारक पर झंडा फहराने में शामिल सभी महिला समाज तथा नेताओं का नाम तथा उसके कार्य सभी अपनी कॉपी में लिखेंगे।
6. कार्य समाप्त होने पर शिक्षक आदर्श कार्य बोर्ड पर लिखकर मिलाने के लिए कहेंगे।
7. मूल्यांकन बिन्दु पहले बता दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- भाषा
- प्रस्तुति

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की पूर्णता पर छात्रों की सराहना की जाए।
- उत्कृष्ट कार्य की प्रशंसा की जाए।
- सभी कार्यों की सराहना करते हुए सुधार कार्य कराया जाए।

प्रदत्त कार्य-4 :

विषय : शब्द से पद तथा पद से शब्द बनाना - पाठ के आधार पर।

उद्देश्य :

- व्याकरण की समझ।
- भाषा का विकास।
- चिंतन एवं लेखन क्षमता का विकास।
- निरीक्षण एवं विश्लेषण क्षमता का विकास।
- लेखन व वाचन क्षमता का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक पाठ से एक उदाहरण लेकर बोर्ड पर बच्चों को समझाएँगे।
3. पुन: बच्चों से उदाहरण के अनुसार कार्य आरंभ करने के लिए कहेंगे।
4. इस कार्य के लिए कक्षा–कार्य की कॉपी का उपयोग किया जाएगा।
5. इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को 20 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. मूल्यांकन के आधार पहले बता दिए जाएँगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- अधिक शब्द – पद बनाने वाले

टिप्पणी :

- शिक्षक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सफलतापूर्वक कार्य करने के संदर्भ में छात्रों की सराहना की जाए।
- कार्य में कमी होने पर छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए अन्य विद्यार्थियों के सहयोग से कार्य पूर्ण करने की प्रेरणा दें।
- छात्रों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ कार्य करने वाले विद्यार्थी का चयन भी किया जा सकता हैं
- प्राप्त जानकारी को लिपिबद्ध कर कक्षा के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित किया जा सकता है।

प्रदत्त कार्य–5 : विज्ञापन निर्माण

विषय : सामाजिक जागरूकता से संबंधित विषय पर।

उद्देश्य :

- चिंतन रचनात्मकता का विकास।
- लेखन–कौशल का विकास।
- विचार–विश्लेषण एवं तथ्यों का संकलन।
- चमत्कारी प्रस्तुति की समझ।

www.FirstRanker.com

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. शिक्षक द्वारा बहुचर्चित विज्ञापनों को पढ़कर या विज्ञापनों के विषय में चर्चा करके छात्रों को विज्ञापन निर्माण के लिए प्रेरित किया जाएगा।
3. विद्यार्थियों को विज्ञापन निर्माण से संबंधित नियमों, शब्द–चयन, भाषा इत्यादि से परिचित करवाया जाएगा।
4. चार–पांच छात्रों का एक समूह बनाकर सम्पूर्ण कक्षा को विभिन्न समूहों में बाँट दिया जाएगा।
5. विद्यार्थियों को पल्स पोलियो, रक्तदान, साक्षरता, एड्स एवं भारतीय संस्कृति की धरोहर की रक्षा आदि विषय दिए जाएंगे।
6. विद्यार्थी अपनी पसंद के अनुसार विषय का चयन करें।
7. चुने गए विषय से संबंधित विज्ञापन हस्तलिखित होंगे।
8. मूल्यांकन के आधार पहले से ही छात्रों को बता दिए जाएं।
9. गतिविधि पूर्ण होने तक शिक्षक छात्रों के कार्य पर ध्यान दें व आवश्याकतानुसार मार्गदर्शन करें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय सामग्री का चयन
- रचनात्मकता एवं प्रभावशाली भाषा
- तुकबंदी/लयात्मकता
- कलात्मक प्रस्तुति

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- कक्षा में निर्मित सभी विज्ञापनों की सराहना की जाए।
- कार्य में कुछ कमी होने पर विद्यार्थियों को उससे परिचित करवाते हुए उसमें सुधार के लिए सुझाव दिए जाएं।
- सभी विद्यार्थियों के कार्य को कक्षा के सूचनापट्ट पर प्रदर्शित किया जाए।

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

तताँरा वामीरो कथा

लीलाधर मंडलोई

प्रदत्त कार्य–1 : कहानी लेखन

विषय : 'शब्दों पर आधारित कहानी लेखन'

उद्देश्य :

- कल्पनाशक्ति का विकास।
- लेखन कौशल का विकास।
- वाचन कौशल का विकास।
- नए शब्द भंडार से परिचय।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. कहानी लेखन के लिए कहानी विधा से परिचित करवाना।
3. शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखे जाएंगे।

   नियम, कुरीति, आजादी, पढ़ाई, समाज, बंधन, परंपरा, आत्मनिर्भर, खंडन, बेटी, विवाह, शादी, ससुराल, प्रथा, पुत्र, शिक्षा, रूचि, सुधार, आंदोलन, ज्ञान
4. शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को उपरोक्त शब्दों की सहायता से किसी एक विषय पर 150 शब्दों में कहानी लिखने के लिए प्रेरित किया जाएगा।
5. मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।
6. जब विद्यार्थी कार्य कर रहे होंगे तब शिक्षक घूम–घूमकर विद्यार्थियों के कार्य का निरीक्षण व यथासंभव सहायता करेंगे।
7. प्रत्येक विद्यार्थी अपनी कहानी की प्रस्तुति स्वयं करेगा व शिक्षक तथा अन्य विद्यार्थी उसका मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- कल्पनाशीलता

www.FirstRanker.com

- शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना
- भाषा शैली
- रोचकता
- प्रस्तुतीकरण

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि:

- छात्रों की कल्पनाशीलता व सृजनशीलता की सराहना की जाएगी।
- सर्वश्रेष्ठ कहानियों की सराहना की जाएगी।
- कमजोर लेखन को प्रोत्साहन एवं सहयोग दिया जाएगा।
- सभी कहानियों को संकलित करके कक्षा के लघु कहानी संग्रह का निर्माण करवाया जाएगा।

प्रदत्त कार्य-2 : नाट्य मंचन

विषय : लोककथा पर आधारित नाटक मंचन।

उद्देश्य :

- अभिनय क्षमता का विकास।
- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास।
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास।
- प्रस्तुतीकरण शैली का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. शिक्षक पाठ को पढ़ाकर उसे नाटकीय रूप देने के विषय में चर्चा करेंगे।
3. शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को विभिन्न समूहों में बांटा जाएगा प्रत्येक समूह में पांच-छः विद्यार्थी हो सकते हैं।
4. शिक्षक द्वारा कहानी को नाटकीय रूप प्रदान करने के लिए संवाद लेखन शैली का ज्ञान विद्यार्थियों को दिया जाएगा।

5. प्रत्येक समूह को किसी एक कहानी (लोककथा) को पढ़कर नाटक रूप में प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया जाएगा।
6. विद्यार्थियों को लोककथा छांटने, नाटकीय रूप प्रदान करने व प्रस्तुति के लिए 7–8 दिनों का समय दिया जाएगा।
7. सप्ताह के दौरान शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों से कार्य की प्रगति पर बातचीत की जाएगी।
8. मूल्यांकन के आधार बिंदु विद्यार्थियों को पहले से ही स्पष्ट कर दिए जाएंगे।
9. नियत दिन प्रत्येक समूह की प्रस्तुति के समय शिक्षक व अन्य समूह उनका मूल्यांकन करें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु का चुनाव
- संवाद लेखन क्षमता
- अभिनय शैली
- भाषा शैली
- आत्मविश्वास व हाव भाव

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ कहानी व नाट्य रूपांतरण की सराहना।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति की सराहना।
- नाटक लेखन व प्रस्तुति की सामान्य कमियों पर शिक्षक की टिप्पणी एवं सुझाव।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति का विद्यालय के मंच पर प्रस्तुतीकरण।

प्रदत्त कार्य–3 : लोकगीत संग्रह

विषय : विविध लोकगीतों का संग्रह करना।

उद्देश्य :

- लोकगीतों के प्रति ध्यान आकर्षित करना।
- संगीतात्मक अभिरूचि उत्पन्न करना।

- लोकभाषा के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना।
- संस्कृति से जोड़ना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक कार्य से संबंधित पूर्ण जानकारी प्रदान करें।
3. लोकगीत के चयन एवं तैयारी हेतु विद्यार्थियों को एक सप्ताह पूर्व ही बता दिया जाए।
4. कक्षा को कुछ समूहों में विभाजित किया जाए।
5. तय दिवस को विद्यार्थी पूरी तैयारी के साथ कक्षा में सामूहिक रूप से लोकगीत का गायन करें।
6. आवश्यकतानुसार विद्यार्थी वाद्य यंत्रों का उपयोग कर सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- लोकगीत का चयन
- लयात्मक प्रस्तुति
- आत्मविश्वास
- उच्चारण (स्वर की स्पष्टता)
- समग्र प्रस्तुति (वाद्य यंत्र)

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली गायन की सराहना की जाएगी।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत किया जाए।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन देकर प्रेरित किया जाए।
- अच्छी प्रस्तुति न कर पाने वाले समूह को एक अवसर और दिया जाए।
- संगीत अध्यापक की मदद ली जाए।

www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य-4 : परिचर्चा

विषय : समाज में व्याप्त रूढ़ियों पर चर्चा करना।

उद्देश्य :

- समाज में व्याप्त अंधविश्वासों व रूढ़िवादिता से परिचित करवाना।
- चिंतन-मनन द्वारा बौद्धिक क्षमता का विकास।
- वर्तमान सामाजिक परिवेश के प्रति जागरुकता।
- विचार अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास।
- सुधार के उपाय भी सुझाना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक कुछ अंधविश्वासों व रूढ़ियों के विषय में बताकर उसका समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को स्पष्ट करें।
3. कक्षा को कुछ समूहों में बाँट दिया जाए।
4. प्रत्येक समूह से एक विद्यार्थी अपने विचार प्रस्तुत करेगा।
5. विषय की तैयारी हेतु उन्हें 10 से 15 मिनट का समय दिया जाए।
6. विचाराभिव्यक्ति हेतु प्रत्येक विद्यार्थी को 3-4 मिनट का समय दिया जाए।
7. कार्य के दौरान शिक्षक आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों की सहायता करें।
8. विषय चुनाव में सहायता दें ताकि वे उन रूढ़ियों पर तैयारी करें जो समाज के विकास में बाधक हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- आत्मविश्वास
- भाषा शैली, उच्चारण
- तार्किक क्षमता
- अभिव्यक्ति/प्रस्तुतीकरण

www.FirstRanker.com

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे विचारों व प्रस्तुति की सराहना।
- भाषा संबंधी अशुद्धियों का शोधन करना।
- प्रस्तुतीकरण की कमियों को सुधारने हेतु सुझाव देकर प्रोत्साहन दिया जाए।

प्रदत्त कार्य-5 : स्वानुभव प्रस्तुतीकरण

विषय : जब मुझे क्रोध आता है तब.......

उद्देश्य :

- विभिन्न मनोभावों से परिचय।
- आत्मविश्लेषण की क्षमता का विकास।
- लेखन व वाचन क्षमता का विकास।

निर्धारित समय : एक या दो कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य (पाठ समाप्ति पर कार्य करवाया जाए।)
2. सर्वप्रथम अध्यापक विभिन्न मनोभावों से परिचित कराते हुए कार्य के विषय में छात्रों को बताएं। यह भी बताएं कि विभिन्न मनोभावों का हम पर क्या प्रभाव पड़ता है जैसे चिंता, उत्साह इत्यादि....।
3. प्रस्तुत विषय पर विचार हेतु विद्यार्थियों को 10-12 मिनट का समय दिया जाए।
4. कार्य के दौरान शिक्षक छात्रों के कार्यों पर ध्यान रखें तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।
5. प्रत्येक छात्र को प्रस्तुतीकरण हेतु 1-2 मिनट का समय दिया जाए। इस समय अन्य छात्र तथा अध्यापक मिलकर मूल्यांकन करें।
6. कार्य से पूर्व मूल्यांकन के आधार तथा अंक श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु

- शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना
- स्वाभाविक प्रस्तुतीकरण (रोचकता, हाव-भाव, आरोह-अवरोह)
- उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता
- आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति की सराहना की जाए।
- कार्य में कमी होने पर छात्र को प्रोत्साहित करें तथा सुधारात्मक सुझाव दें।
- सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति व अनुभव का चयन कर उसे लिपिबद्ध करवाएं तथा सूचनापट्ट पर प्रदर्शित करें।

तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र

प्रहलाद अग्रवाल

प्रदत्त कार्य-1 : राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फ़िल्मों की सूची बनाना।

विषय : पिछले दस वर्षों में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फिल्मों की सूची।

उद्देश्य :

- भारतीय फ़िल्मों के स्वरूप से परिचित करवाना।
- राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फ़िल्मों का ज्ञान।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास।
- स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. शिक्षक द्वारा कुछ राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फिल्मों के नाम बताए जाएंगे। जैसे – अंकुर, अर्द्धसत्य, पाथेर पांचाली...
3. प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा कम से कम दस फिल्मों के नाम चुने जाएंगे वे किसी भी भाषा के हो सकते हैं।
4. विद्यार्थियों को मूल्यांकन का आधार पहले ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।
5. कार्य पूरा करने के लिए एक दिन का समय दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- फिल्मों की सूची के आधार पर / फिल्मों के विषय के आधार पर भी

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- बहुत सारी जानकारियाँ एक जैसी हो सकती हैं। विशिष्ट जानकारी की सराहना की जाए।
- कार्य पूर्ण न करने वाले छात्रो को प्रेरणा एवं सहयोग।

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य-2 : परिचर्चा

विषय : पहले की फिल्मों और वर्तमान फिल्मों में समानता और अंतर।

उद्देश्य :

- विश्लेषण की क्षमता का विकास।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति व चिंतन-मनन की क्षमता का विकास।
- फिल्म की सर्वश्रेष्ठता के संदर्भ में विभिन्न मापदंडों की पहचान।
- फिल्मों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास।
- अभिव्यक्ति कौशल का विकास।

निर्धारित समय : दो या तीन कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य (5-6 विद्यार्थियों का एक समूह)
2. पाठ आरंभ करने से पूर्व यह कार्य करवाया जा सकता है।
3. सर्वप्रथम शिक्षक कुछ पुरानी तथा कुछ नई फिल्मों के उदाहरण देकर छात्रों से उनके विषय में चर्चा करें तथा कार्य से अवगत कराएं।
4. फिल्मों में समानता व अन्तर बताने के लिए छात्रों को विभिन्न आधार बताएं जैसे - गीत, संगीत, पटकथा, संवाद, अभिनय, अभिनेता, कलात्मकता इत्यादि...।
5. कार्य को करने के लिए प्रत्येक समूह को 10-15 मिनट का समय दिया जाए। अध्यापक कार्य का निरीक्षण करें तथा मार्गदर्शन भी करें।
6. प्रस्तुतीकरण के लिए प्रत्येक समूह को 2-3 मिनट का समय दिया जाए।
7. प्रत्येक समूह का एक विद्यार्थी विचाराभिव्यक्ति करे। इस समय अन्य समूह के छात्र तथा शिक्षक अभिव्यक्ति का मूल्यांकन करें।
8. मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही श्यामपट्ट लिखकर दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- अधिकतम समानता व अंतर
- शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना

www.FirstRanker.com

- उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता
- समूह में सहभागिता
- आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- समूह में सक्रिय योगदान व कार्य की पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक विद्यार्थी की सराहना की जाए।
- कार्य की अपूर्णता के संदर्भ में छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए पूर्ण करने की प्रेरणा दें।
- समानता व अंतर को लिपिबद्ध कर सूचना-पट्ट पर प्रदर्शित करें।
- समूह के कार्य की समग्रता के आधार पर अंक-निर्धारण करें।

प्रदत्त कार्य-3 : कार्य-प्रपत्र

विषय : साहित्यिक रचनाओं पर आधारित फिल्मों की सूची।

उद्देश्य :

- साहित्यिक रचनाओं पर आधारित फिल्मों का ज्ञान।
- फिल्म निर्माण में साहित्य के योगदान का परिचय।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास एवं ज्ञान का विस्तार।
- स्वाध्याय की प्रेरणा।
- चिंतन एवं मनन।

निर्धारित समय : एक या दो कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक कुछ ऐसी रचनाओं के विषय में बताएं जिन पर फिल्में बनी हैं।
3. कार्य से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी विद्यार्थियों को दो दिन पूर्व ही दे दी जाए।
4. कार्य-प्रपत्र का प्रारूप श्यामपट्ट पर लिख दिया जाए।

कार्य प्रपत्र

क्रम संख्या	फिल्म का नाम	साहित्यिक रचना	भाषा	रचनाकार
1.	....	....	....	....
2.	....	....	....	....
3.	....	....	....	....
4.	....	....	....	....
5.	....	....	....	....
6.	....	....	....	....
7.	....	....	....	....
8.	....	....	....	....
9.	....	....	....	....
10.	....	....	....	....

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- सूचनाओं की संख्या

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सम्पूर्ण सूचना सही देने वाले की सराहना की जाएगी।
- त्रुटियों को सुधारने का प्रयास किया जाएगा।
- विद्यार्थियों से प्राप्त सही जानकारी को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।

स्पष्ट करें अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं के साहित्य पर आधारित फिल्मों की सूची बच्चे एकत्रित कर सकते हैं।

जैसे –

1. निर्मला, गबन (हिंदी) प्रेमचंद
2. आंधी, काली, आंधी (हिंदी) कमलेश्वर
3. कुली, कुली (अंग्रेजी) मुल्कराज आनंद

www.FirstRanker.com

4. गाइड (गाइड) (अंग्रेजी) आर. के. नारायण

5. (पिंजर) पिंजर (पंजाबी) अमृता प्रीतम

प्रदत्त कार्य-4 : परियोजना कार्य

विषय : भारतीय संस्कृति को परिलक्षित करने वाले 10 फिल्मी गीतों (मुखड़ों) का संकलन।

उद्देश्य :

- भारतीय संस्कृति से परिचय व जुड़ाव।
- फिल्मों के संदर्भ में भारतीय संस्कृति का स्थान व महत्ता से परिचय।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति व स्वाध्याय का विकास।
- लेखन व वाचन कौशल का विकास।
- जानकारियां एकत्रित करने के प्रति अभिरुचि।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. यह कार्य पाठ समाप्त होने पर करवाया जाए।
3. सर्वप्रथम शिक्षक उदाहरण स्वरूप कुछ ऐसे गीतों का उल्लेख करे जिसके द्वारा भारतीय संस्कृति का कोई पक्ष सामने आए जैसे – "है प्रीत जहां की रीत सदा......।"
4. दो दिन पूर्व विद्यार्थी को कार्य से परिचित करवाते हुए आवश्यक जानकारियां एकत्रित करने का निर्देश दें। विद्यार्थी कार्य से संबंधित कुछ चित्र भी एकत्रित कर सकते हैं।
5. दो दिन पश्चात् कक्षा में ही छात्रों से उपरोक्त कार्य करवाया जाए। इस कार्य के लिए उन्हें 10-15 मिनट का समय दिया जाए।
6. यह कार्य एक पृष्ठ पर करवाया जाए। गतिविधि के दौरान अध्यापक प्रत्येक छात्र के कार्य पर दृष्टि रखें।
7. कार्य से पूर्व छात्रों को मूल्यांकन के आधार तथा अंकों के विषय में अवगत करवाया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- गीतों का संकलन

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रतिपुष्टि :

- कार्य पूर्ण करने वाले सभी छात्रों की सराहना की जाए।
- कार्य में कमी रह जाने पर उसे पूर्ण करने हेतु छात्र को प्रोत्साहित करें।
- कुछ चुने हुए गीतों का गायन भी कक्षा में करवाया जा सकता हैं।
- श्रेष्ठ गीतों को लिपिबद्ध करवा कर सूचना पट्ट पर प्रदर्शित करें।

प्रदत्त कार्य-5 : रचना के आधार पर वाक्य भेद।

विषय : पाठ में से सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्य छाँटिए।

उद्देश्य :

- रचना के आधार पर वाक्य भेद स्पष्ट करना।
- भाषा को व्याकरण सम्मत बनाना।
- व्याकरण को सरल एवं रोचक बनाना।
- लेखन एवं वाचन कौशल में दक्षता लाना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक कक्षा को वाक्य के भेदों की जानकारी देगा।

वाक्य के भेद

रचना के आधार पर
- सरल वाक्य
- संयुक्त वाक्य
- मिश्र वाक्य

अर्थ के आधार पर
1. विधान वाचक
2. प्रश्न वाचक
3. निषेध वाचक
4. आज्ञा वाचक
5. इच्छा वाचक
6. विस्मयादि वाचक
7. संदेह वाचक
8. संकेत वाचक

www.FirstRanker.com

2. अध्यापक श्यामपट्ट पर पाठ में आए सरल, मिश्र और संयुक्त वाक्य लिखेगा।
3. जानकारी देने के बाद छात्रों को पाठ में आए रचना के आधार पर वाक्य छाँटने का कार्य दिया जाएगा।
4. इसमें 10–15 मिनट का समय लगेगा।
5. मूल्यांकन के आधार बिन्दु श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँगे।
6. अध्यापक सही उत्तर बताकर साथ के साथ मूल्यांकन करा सकता है।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

-

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सभी उत्तर सही देने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- जिस विद्यार्थी के ज्यादातर उत्तर सही न हो उसे फिर से वर्गीकरण समझाने का प्रयास किया जाए।

गिरगिट

अंतोव चेखव

प्रदत्त कार्य–1 : पत्र लेखन

विषय : नवभारत टाइम्स के संपादक महोदय को सड़कों पर घूमते आवारा पशुओं के संदर्भ में पत्र लिखिए।

उद्देश्य :

- औपचारिक पत्र लेखन का प्रारूप समझाना।
- सामाजिक दायित्वों का आभास।
- पशुओं के प्रति संवेदना उत्पन्न करना।
- विचारों के प्रस्तुतीकरण की शैली का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों को औपचारिक पत्र लेखन के प्रारूप को स्पष्ट करेंगे।
3. श्यामपट्ट पर पत्र लेखन के प्रारूप को लिखा जाए।
4. शिक्षक द्वारा गलियों व सड़कों पर घूमने वाले पशुओं के कारण होने वाली समस्याओं पर चर्चा की जाएगी।
5. शिक्षक द्वारा छात्रों को प्रेरित किया जाए कि 'ऐसी समस्याओं का निदान कैसे किया जा सकता है' विषय से संबंधित पत्र संपादक महोदय को लिखें।
6. मूल्यांकन के आधार को पहले से ही विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।
7. विद्यार्थियों से यह कार्य कक्षा में ही करवाया जाए व इस कार्य को करने के लिए 10–15 मिनट का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु–विषयानुकूल व भावानुकूल
- पत्र लेखन प्रारूप
- शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- शिक्षक ध्यान दें कि प्रत्येक विद्यार्थी इस गतिविधि में हिस्सा ले।
- उत्कृष्ट लेखन की सराहना की जाएगी।
- सभी पत्रों का संकलन करके उन्हें कक्षा के सूचनापट्ट पर लगाया जाए।

प्रदत्त कार्य–2 : नाट्य मंचन

विषय : 'गिरगिट' कहानी का नाट्य मंचन।

उद्देश्य :

- नाट्य शैली से परिचय।
- ग्रहणशीलता की क्षमता का विकास।
- अभिनय क्षमता का विकास।
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास।

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. यह कार्य शिक्षक पाठ पढ़वाने के पश्चात् ही करवाएं।
3. पाठ पढ़ाने के पश्चात् शिक्षक विद्यार्थियों को संवाद लेखन व नाटक प्रस्तुतीकरण के नियमों से परिचित करवाएं।
4. पूरी कक्षा को विभिन्न समूहों में बांट दिया जाए। एक समूह में पांच से छ: विद्यार्थी हो सकते हैं।
5. नाटक लेखन से प्रस्तुतीकरण तक के लिए एक सप्ताह का समय दिया जाए।
6. मूल्यांकन के आधार बिंदुओं को पहले से विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।
7. शिक्षक सप्ताह के बीच–बीच में विद्यार्थियों के कार्य की प्रगति पर बातचीत करके सहयोग व प्रोत्साहन देंगे।
8. नियत दिन प्रत्येक समूह को 6–7 मिनट तक का समय प्रस्तुतीकरण के लिए देकर शिक्षक व विभिन्न समूहों द्वारा एक समूह के प्रस्तुतीकरण का मूल्यांकन किया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- संवाद शैली
- अभिनय शैली
- सहभागिता व सक्रिय योगदान
- भाषा प्रयोग (शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना)
- प्रस्तुतीकरण (आत्मविश्वास व हाव-भाव)

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- विद्यार्थियों के सामूहिक प्रयासों की सराहना।
- अभिनय विशेष की सराहना।
- सामान्य संवाद लेखन व प्रस्तुतीकरण की कमियों से विद्यार्थियों को परिचित करवाना।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति की विद्यालय के मंच पर प्रस्तुति।

प्रदत्त कार्य-3 : कहानी लेखन

विषय : चित्रों के आधार पर कहानी लेखन व प्रस्तुतीकरण।

उद्देश्य :

- कहानी लेखन विधा से परिचय।
- भावुकता व संवेदनशीलता का विकास।
- ज्ञान का विस्तार।
- काल्पनिकता का विकास।
- चिंतन मनन की प्रवृत्ति का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को कहानी लेखन की विधा से परिचित करवाएंगे।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com

2. विद्यार्थियों को चित्रों के आधार पर कहानी लेखन के लिए प्रेरित करना।

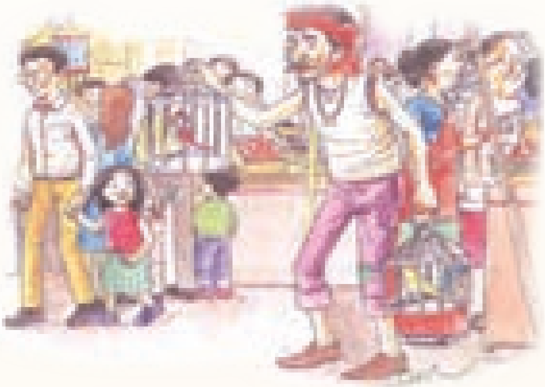

3. संपूर्ण कक्षा को विभिन्न समूहों में बांट दिया जाएगा व प्रत्येक समूह में चार-पांच विद्यार्थी हो सकते हैं
4. प्रत्येक समूह में से एक वक्ता कक्षा के सम्मुख कहानी प्रस्तुत करेगा।
5. मूल्यांकन का आधार पहले से ही विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाएगा।
6. कहानी प्रस्तुति के लिए 2-3 मिनट का समय दिया जाएगा।
7. एक प्रस्तुति के समय अन्य समूह व शिक्षक मूल्यांकन का कार्य करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- सटीक वाक्य रचना एवं भाषा
- रोचकता
- हाव-भाव, आरोह-अवरोह
- प्रस्तुतीकरण

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के सूचनापट्ट पर लगाया जाए।
- सराहनीय प्रस्तुतियों को प्रेरणा का स्रोत बनाया जाए।
- औसत प्रस्तुतियों को सुझाव देकर प्रोत्साहित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-4 : वर्ग पहेली

विषय : (पशु-पक्षियों के नामों से संबंधित) वर्ग में दिए गए शब्दों में कुछ पशु-पक्षियों के नाम छिपे हैं जिन्हें ढूंढ़कर सूची तैयार कीजिए।

उद्देश्य :

- शब्द भंडार में वृद्धि।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास।
- स्मरण शक्ति का विकास।
- चिंतन प्रवृत्ति का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. शिक्षक कार्य से संबंधित संपूर्ण जानकारी व नियम विद्यार्थियों को पहले से ही बता दें।
3. कार्य प्रपत्र के माध्यम से या श्यामपट्ट पर लिखकर इस कार्य को करवाया जाए।
4. पशु-पक्षियों के नाम ढूंढने के लिए विद्यार्थियों को 10-12 मिनट का समय दें।
5. विद्यार्थी सूची तैयार कर सकते हैं या कार्य प्रपत्र में विभिन्न रंगों का इस्तेमाल कर सकते हैं।
6. कार्य के समय शिक्षक विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार सहायता करें।

अ	को	य	ल	ब	स	ट	ढ	ड	हि
आ	इ	स	ट	शे	म	प	बं	द	र
न	प	अ	मो	र	ल	चि	च	ड	न
प	भा	म	प	स	ल	ड़ि	त	थ	प
म	लू	म	स	च	छ	या	अ	आ	च
क	ख	ग	घ	छ	थ	त	व	कौ	छ
घो	ड़ा	न	प	स	य	र	ल	आ	अ
आ	अ	च	छ	ज	प	फ	ट	य	आ
र	गैं	क	ख	हा	थी	ल	म	स	र
म	डा	च	छ	प	न	व	बि	ल्	ली
य	र	ल	व	फ	भ	फ	प	ट	स

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- नाम की संख्या के आधार पर

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अधिकतम नाम छांटने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- जो कार्य पूरा न कर पाए उनकी सहायता की जाए।
- गलत व अपूर्ण कार्य करने वाले विद्यार्थियों की सहायता व प्रेरणा।
- अंत में सभी पशु–पक्षियों के नाम श्यामपट्ट पर लिखे जाएं।

प्रदत्त कार्य–5 : विचार लेखन व प्रस्तुतीकरण ।

विषय : 'समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार'

उद्देश्य :

- नैतिक मूल्यों का विकास।
- विचार विश्लेषण क्षमता का विकास।
- तार्किक शैली का विकास।
- विचार लेखन व प्रस्तुति का अभ्यास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. यह कार्य पाठ पढ़ाने के पश्चात् दिया जाएगा।
3. विद्यार्थियो से शिक्षक समाज की वर्तमान स्थिति की चर्चा करेंगे व विषय की प्रस्तुति करेंगे।
4. विद्यार्थियो को मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।
5. विद्यार्थियो को यह कार्य करने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।

6. जब छात्र अपने विचारों को लेखनीबद्ध कर रहे होंगे तब शिक्षक घूम-घूमकर निरीक्षण करेंगे व विद्यार्थियो की यथासंभव सहायता करेंगे।

7. प्रत्येक विद्यार्थी की प्रस्तुति के मुख्य बिंदुओं को शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखा जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- वैचारिक स्तर
- भाषा शुद्धता
- आत्मविश्वास (हाव-भाव)
- तार्किकता का स्तर

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे विचारों व प्रस्तुति की सराहना।
- सामान्य भाषा संबंधी अशुद्धि का शोधन करना।
- कुछ नए शब्दों के प्रयोग से छात्रों का परिचय करवाना।
- प्रस्तुतीकरण की कमियों को सुधारने के लिए उपाय सुझाना।

www.FirstRanker.com

अब कहां दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

निदा फ़ाजली

प्रदत्त कार्य-1 : वाद-विवाद

विषय : "वैज्ञानिक उपकरण प्रदूषण का कारक"

उद्देश्य :

- तार्किक व आलोचनात्मक दृष्टि का विकास।
- विचार-विश्लेषण की क्षमता का विकास।
- मंडन एवं खंडन का अभ्यास।
- ज्ञान का विस्तार।
- मंच भय से मुक्ति।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. शिक्षक विद्यार्थियों को वाद-विवाद कला से अवगत करवाते हुए विषय का परिचय दें।
3. संपूर्ण कक्षा को दो वर्गों एक पक्ष दूसरा विपक्ष में बाँटा जाए।
4. चार-चार विद्यार्थियों का एक समूह होगा व एक समूह से एक वक्ता अपने समूह का मत प्रस्तुत करें।
5. तैयारी के लिए 15 मिनट का समय दिया जाए।
6. प्रस्तुति का समय 1.5-2 मिनट का होगा।
7. तैयारी के समय शिक्षक कक्षा में घूम-घूमकर विभिन्न समूहों का निरीक्षण करें।
8. मूल्यांकन का आधार कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।
9. एक समूह की प्रस्तुति के समय अध्यापक व अन्य समूह मूल्यांकन का कार्य करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- तार्किक क्षमता
- भाषायी क्षमता
- अभिव्यक्ति व प्रस्तुतीकरण
- उपयुक्त उदाहरणों द्वारा तर्क की पुष्टि

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।
- प्रत्येक वक्ता को प्रोत्साहित किया जाए।
- अच्छे वक्ताओं की प्रस्तुति को मंच पर प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाए।
- प्रस्तुति, अभिव्यक्ति एवं विषय वस्तु से संबंधित कमियों को शिक्षक दूर करने का प्रयास करें।

प्रदत्त कार्य–2 : नारा लेखन चित्र सहित।

विषय : वृक्षारोपण

उद्देश्य :

- पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता।
- सृजनात्मक क्षमता का विकास।
- कल्पनाशीलता का विकास।
- लेखन, श्रवण व वाचन कौशल का विकास।
- सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास।
- जागरुकता की प्रवृत्ति।

निर्धारित समय : एक कालांश

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रक्रियाः

1. सामूहिक कार्य।
2. दो विद्यार्थियों द्वारा मिलकर कार्य किया जाए।
3. सर्वप्रथम शिक्षक किसी अन्य विषय पर नारा सुनाएं जैसे –

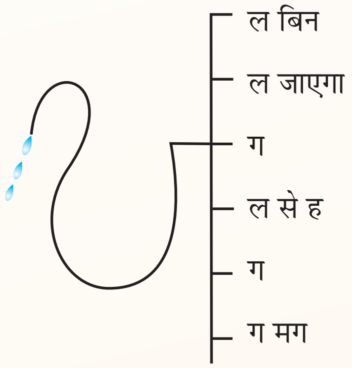

"जल बिन जल जाएगा जग
जल से है जग जगमग"

इसके अतिरिक्त और नारा लिखने के लिए प्रेरित किया जाए।

4. वृक्षारोपण के लिए स्लोगन लिखने व उससे संबंधित कुछ चित्र बनाने का निर्देश छात्रों को दें।
5. इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को 10–15 मिनट का समय दिया जाए।
6. इस कार्य को विद्यार्थी एक चार्ट/पृष्ठ पर करें।
7. गतिविधि के दौरान शिक्षक निरीक्षण करें व आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।
8. नारा वाचन के लिए विद्यार्थियों को एक-एक मिनट का समय दिया जाए।
9. मूल्यांकन के आधार बिंदु कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- भाषा शुद्धता (वाक्य रचना, वर्तनी, विरामचिह्न)
- शब्दों का चयन, तुकबंदी
- स्लोगन की प्रभावशीलता
- प्रस्तुतीकरण (उच्चारण, हाव-भाव)

www.FirstRanker.com

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- उत्कृष्ट स्लोगन लेखन की प्रशंसा की जाए।
- जो विद्यार्थी स्लोगन नहीं बना पाए उनकी सहायता करना।
- वर्तनी एवं उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को अन्य विद्यार्थियों के सहयोग से दूर करना।
- उत्कृष्ट स्लोगन को सूचना-पट्ट पर प्रदर्शित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-3 : परियोजना कार्य

विषय : विलुप्त होती प्रजातियों की समस्या तथा समाधान।

उद्देश्य :

- पशुओं/पक्षियों के प्रति संवेदना उत्पन्न करना।
- पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्वों का आभास करवाना।
- स्वानुभव को शब्दबद्ध करके अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास।
- शब्द भंडार में वृद्धि एवं विचाराभिव्यक्ति का अभ्यास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य/सामूहिक कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक विलुप्त होती प्रजातियों के बारे में कक्षा में चर्चा करेंगे।
3. समस्या के समाधान के लिए छात्रों को प्रोत्साहित किया जाएगा।
4. कक्षा में कुछ समूह बनाकर भी कार्य करवाया जा सकता है। समूह से एक प्रतिनिधि अपनी बात प्रस्तुत करेगा।
5. मूल्यांकन के आधार को पहले ही स्पष्ट कर दिया जाए।
6. तैयारी हेतु विद्यार्थियों को 10-15 मिनट का समय अवश्य दिया जाए।
7. विद्यार्थियों के विचार-विमर्श के समय शिक्षक प्रत्येक की गतिविधि पर ध्यान रखें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- वैचारिक स्तर
- भाषा शुद्धता
- आत्मविश्वास (हाव-भाव) प्रस्तुति
- तर्क द्वारा कथन की पुष्टि (समाधान हेतु)

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे विचारों व प्रस्तुति की सराहना।
- मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- सही समाधान हेतु शिक्षक अपने विचार प्रस्तुत करें।
- कार्य समाप्त होने के पश्चात् ही कमियों को बताकर सुधार हेतु सुझाव दिए जाएं।

प्रदत्त कार्य-4 : सार लेखन

विषय : पाठ का सार लेखन।

उद्देश्य :

- मानवीय मूल्यों का विकास।
- भावुकता एवं संवेदनशीलता का विकास।
- कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास।
- लेखन, वाचन एवं श्रवण कौशल का विकास।
- काव्य विधा के प्रति रुचि जागृत करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।

2. सर्वप्रथम शिक्षक कोई कविता (परोपकार से संबंधित) कक्षा में सुनाएं।
3. कार्य से संबंधित संपूर्ण जानकारी विद्यार्थियों को विस्तार से दी जाएगी।
5. मूल्यांकन के आधार पहले ही स्पष्ट कर दिए जाएं।
6. कक्षा को कुछ समूहों में विभक्त किया जाए। प्रत्येक समूह से एक प्रतिभागी स्वरचित कविता-पाठ करेगा।
7. शिक्षक चाहे तो कविता से जुड़े कुछ शब्द श्यामपट्ट पर लिख सकते हैं।
8. कविता लेखन हेतु विद्यार्थियों को 10-15 मिनट का समय अवश्य दें।
9. इस समय शिक्षक आवश्यकतानुसार सभी विद्यार्थियों को सहायता दें। उदाहरणस्वरूप श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखे जा सकते हैं –

बलिदान, स्वभाव, दया, कष्ट, फल, त्याग, सहयोग, संतोष, जीवन, अमर, अनाज, मृत्यु, मनुष्य, जीवन, मनुष्य, नदी, धर्म, वृक्ष, जल, ईश्वर, शरण, साधु, भूमि, शक्ति

नोट – अन्य शब्द भी दिए जा सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- मौलिकता/कल्पनाशीलता
- शब्द चयन
- उच्चारण की शुद्धता
- प्रस्तुतीकरण

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली रचना की सराहना एवं उसकी विद्यालय के मंच पर प्रस्तुति।
- औसत प्रस्तुतियों को अच्छा बनाने की प्रेरणा/प्रोत्साहन।
- अधूरे कार्य को पूरा करने हेतु सुझाव व अतिरिक्त समय दिया जाए।

www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य-5 : अनुच्छेद लेखन चित्र के आधार पर।

विषय : 'प्राकृतिक आपदाएं और हम'

उद्देश्य :

- प्रकृति व पर्यावरण के प्रति जागरुकता उत्पन्न करना।
- चिंतन मनन की प्रवृत्ति का विकास।
- ज्ञान का विस्तार।
- कल्पनाशीलता व रचनात्मकता का विकास।

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा पाठ को पढ़ाया जाएगा व उसके पश्चात् इस चित्र को प्रपत्र के रूप में बांटा जाएगा।

3. विद्यार्थी चित्र पर आधारित पर्यावरण के असंतुलन से संबंधित व उसके कारणों को स्पष्ट करते हुए अनुच्छेद लिखेंगे।
4. मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाए।
5. विद्यार्थियों को लेखन के लिए 10 मिनट का समय दिया जाए।
6. जब विद्यार्थी कार्य करेंगे तब शिक्षक घूम-घूमकर निरीक्षण करेंगे।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- भाषा शुद्धता
- शब्दों का चयन
- क्रमबद्धता व सुसंबद्धता

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- शिक्षक ध्यान दें कि सभी विद्यार्थी चित्र को ही आधार बनाकर अपना अनुच्छेद लिखें।
- अनुच्छेद में क्रमबद्धता व सुबद्धता होनी आवश्यक है।
- सामान्य अशुद्धियों का निवारण किया जाए।
- विद्यार्थियों को एक दूसरे के कार्य को मूल्यांकन करने के लिए दिया जाए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

पतझर में टूटी पत्तियाँ

रवींद्र केलेकर

प्रदत्त कार्य-1 : परिचर्चा

विषय : प्रतिस्पर्द्धा मनुष्यता के विकास में बाधक।

उद्देश्य :

- स्वानुभव को शब्दबद्ध करके अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास।
- शब्द भंडार में वृद्धि व अनुप्रयोग।
- स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास।
- समस्या पहचान उसके निदान हेतु उपाय ढूंढ़ने की क्षमता का विकास।
- विचारों का प्रस्तुतीकरण।
- श्रवण एवं वाचन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक जीवन में तनाव के कारणों के विषय में चर्चा करेंगे।
3. तनाव के कारणों के निदान के लिए छात्रों को प्रोत्साहित किया जाए।
4. तीन-चार विद्यार्थियों का एक समूह बनाया जाएगा। समस्त कक्षा को समूहों में बांट दिया जाएगा।
5. प्रत्येक समूह सामने आकर अपने विचार प्रस्तुत करेगा।
6. अध्यापक और अन्य छात्र समूह की चर्चा का मूल्यांकन करेंगे।
7. मूल्यांकन के आधार बिंदु कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएंगे।
8. विद्यार्थियों को तैयारी के लिए दस मिनट का समय दिया जाएगा।
9. तैयारी के समय अध्यापक घूम-घूमकर विद्यार्थियों का निरीक्षण करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु

www.FirstRanker.com

- शब्द चयन एवं वाक्य रचना
- सहभागिता एवं सक्रिय योगदान
- आत्मविश्वास एवं हावभाव
- प्रवाहशीलता, क्रमबद्धता, सुसम्बद्धता

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- मुख्य एवं अच्छे विचार बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।
- गलतियों एवं अशुद्धियों का निदान किया जाएगा।
- जीवन में तनाव दूर करने के श्रेष्ठ उपायों की सराहना की जाएगी।

प्रदत्त कार्य–2 : सामासिक शब्दों का चयन।

विषय : पाठ में आए सामासिक शब्दों का चयन करना।

उद्देश्य :

- तार्किक व आलोचनात्मक दृष्टि का विकास।
- विचार–विश्लेषण की क्षमता का विकास।
- मंडन एवं खंडन का अभ्यास।
- ज्ञान का विस्तार।
- मंच भय से मुक्ति।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. सामासिक शब्द के विषय में बताना / उदाहरण देना।
3. चार–चार विद्यार्थियों का एक समूह होगा व एक समूह से एक वक्ता अपने समूह का मत प्रस्तुत करेगा।
4. तैयारी के लिए एक दिन का समय दिया जाए।

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

5. प्रस्तुति के लिए 1.5–2 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. तैयारी के समय शिक्षक कक्षा में घूम–घूमकर विभिन्न समूहों का निरीक्षण करें।
7. मूल्यांकन का आधार कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।
8. एक समूह की प्रस्तुति के लिए अध्यापक व अन्य समूह मूल्यांकन का कार्य करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- तार्किक क्षमता
- भाषायी क्षमता
- अभिव्यक्ति व प्रस्तुतीकरण
- उपयुक्त उदाहरणों द्वारा तर्क की पुष्टि

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।
- प्रत्येक वक्ता को प्रोत्साहित किया जाए।
- अच्छे वक्ताओं की प्रस्तुति को मंच पर प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाए।
- प्रस्तुति, अभिव्यक्ति एवं विषय वस्तु से सम्बन्धित कमियों को शिक्षक दूर करने का प्रयास करें।

प्रदत्त कार्य–3 : मानचित्र के माध्यम से चाय उत्पादक राज्य के विषय में जानकारी।

विषय : चाय उत्पादक राज्यों के बारे में जानना।

उद्देश्य :

- भारत के चाय उत्पादक राज्यों की जानकारी एवं स्थिति।
- तथ्य संकलन की प्रेरणा।
- मानचित्र में स्थान चिह्नित करने का अभ्यास।
- चाय के लिए ये राज्य क्यों उपयुक्त है अत: यहाँ पाई जाने वाली मिट्टी और जलवायु का परिचय करवाना।

www.FirstRanker.com

 www.FirstRanker.com

- स्वाध्याय की प्रेरणा।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. पाठ समाप्ति पर यह कार्य करवाया जाए।
3. शिक्षक चावल, गेहूं या कपास उत्पादक राज्यों के विषय में बताते हुए कार्य के स्वरूप से विद्यार्थियों को परिचित करवाएं।
4. विद्यार्थियों को एक दिन पूर्व ही भारत का मानचित्र लाने का निर्देश दिया जाए।
5. निर्धारित दिन सभी विद्यार्थी मानचित्र पर चाय उत्पादक राज्यों की पहचान कर उसे चिह्नित करेंगे तथा अलग पृष्ठ पर उन राज्यों के विषय में दो-तीन पंक्तियां लिखेंगे।

6. इस कार्य हेतु विद्यार्थियों को 30 मिनट का समय दिया जाए।
7. कार्य के दौरान शिक्षक निरीक्षण करें तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन भी करेंगे। मूल्यांकन के आधार पूर्व में ही बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- सम्पूर्ण जानकारी देने पर (सभी राज्य)
- राज्यों के विषय में सही जानकारी देने पर
- शुद्ध वर्तनी, शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सम्पूर्ण कार्य सही करने वाले विद्यार्थियों की सराहना।
- अधूरा कार्य पूरा करने हेतु अतिरिक्त समय दिया जाए।
- सही कार्य करने वाले छात्र अन्य छात्रों की सहायता कर उनका कार्य पूरा करा सकते हैं।

प्रदत्त कार्य-4 : विचार प्रस्तुतीकरण

विषय : समाज के कुछ आदर्शवादी लोगों के आदर्शों पर।

उद्देश्य :

- नैतिक मूल्यों का विकास।
- सामाजिक दायित्वों का विकास।
- आदर्शवादी मूल्यों की पहचान।
- चिंतन प्रवृत्ति का विकास।
- प्रस्तुतीकरण शैली का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।

www.FirstRanker.com

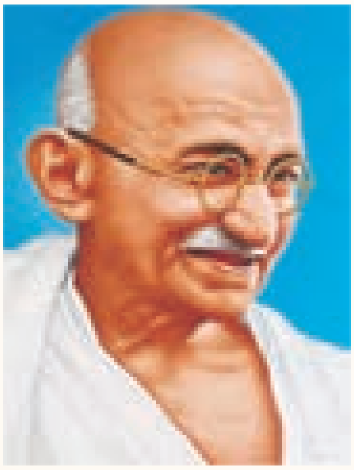 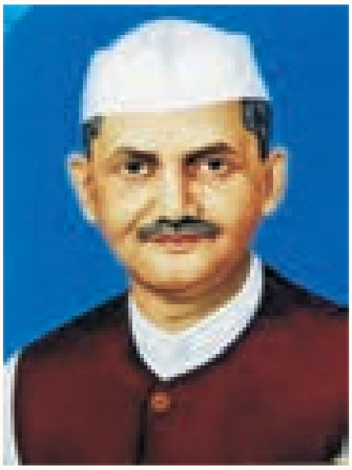 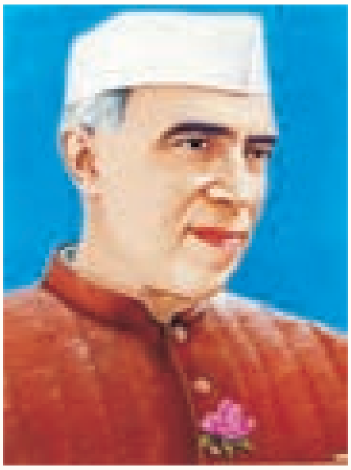

2. शिक्षक द्वारा ये तीनों चित्र दिखाकर उनके आदर्शों के विषय में विद्यार्थियों से चर्चा की जाएगी।
3. अब विद्यार्थियों को शिक्षक द्वारा इन तीन चित्रों के अलावा किसी एक महान चरित्र के आदर्शों के बारे में जानकारी एकत्र करके 8-10 पंक्तियों में कक्षा को उनके आदर्शों के विषय में बताएंगे।
4. विद्यार्थी को यह कार्य करने के लिए एक दिन का समय दिया जाएगा।
5. प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी प्रस्तुति के लिए 1.5-2 मिनट तक का समय दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- शब्द चयन व वाक्य रचना
- प्रवाहशीलता व क्रमबद्धता
- उच्चारण की शुद्धता
- आत्मविश्वास व प्रस्तुति

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रत्येक विद्यार्थी के विचारों को सुना जाएगा।
- मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।
- प्रत्येक प्रस्तुति का मूल्यांकन शिक्षक स्वयं करेंगे व अन्य विद्यार्थियों की सहायता भी ली जा सकती हैं।

www.FirstRanker.com

- सभी विद्यार्थियों के विचारों को एकत्रित करके कक्षा के सूचनापट्ट पर लगाएं।
- अधूरा कार्य करने वाले विद्यार्थियों को प्रेरित करके कार्य पूरा करवाएँ।

प्रदत्त कार्य–5 : सूची–निर्माण

विषय : 'वे कार्य जो सामाजिक व नैतिक दृष्टि से उचित होते हुए भी अक्सर हम नहीं करते।'

उद्देश्य :

- नैतिक मूल्यों की पहचान व विकास।
- आत्म विश्लेषण।
- स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास।
- चिंतन–मनन प्रवृत्ति का विकास।
- तुलनात्मक वर्गीकरण कर सकने की क्षमता का विकास।
- लेखन, वाचन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों रूपों से कराया जा सकता है।
2. सूची बनाने के प्रारूप को शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दे जिसे विद्यार्थी एक पृष्ठ पर उतारेंगे।

   सत्य बोलना चाहिए परंतु मैं अक्सर ....

   बड़ों की बातें माननी चाहिए परंतु मैं अक्सर ....

   क) ....

   ख) ....

   ग) ....

   घ) ....

   ङ) ....

   च) ....

   छ) ....

ज) ....

झ) ....

ञ) ....

3. मूल्यांकन के आधार पहले ही स्पष्ट कर दिए जाएं।

4. सूची तैयार करने हेतु विद्यार्थियों को 10–12 मिनट का समय अवश्य दिया जाए।

5. इस दौरान शिक्षक यह ध्यान रखें कि सभी विद्यार्थी रूचिपूर्वक कार्य को कर रहे हैं। प्रपत्र एकत्रित कर शिक्षक उसकी जांच करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- सही उत्तर

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छा कार्य करने वाले की सराहना।
- जांच के बाद शिक्षक यह अवश्य समझाए कि जो कार्य हम अक्सर नहीं करते वे कितने महत्वपूर्ण हैं इसलिए वह विद्यार्थियों को इन मूल्यों के प्रति जागरूक करें।
- जो कमियाँ रही उन्हें सुधारने हेतु सुझाव दिए जाएँ।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

कारतूस

हबीब तनवीर

प्रदत्त कार्य-1 : एकांकी-मंचन

विषय : पाठ का मंचन।

उद्देश्य :

- एकांकी विधा से परिचय।
- अभिनय क्षमता का विकास।
- प्रस्तुतीकरण शैली का विकास।
- मंच भय से मुक्ति।
- वाचन एवं श्रवण क्षमता का विकास।
- सहभागिता का विकास।
- संवाद लेखन क्षमता का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. पाठ को समझा लेने के पश्चात् शिक्षक इस कार्य के संदर्भ में सम्पूर्ण जानकारी विस्तार से दें।
3. मूल्यांकन के आधार बिंदु पहले ही स्पष्ट कर दिए जाएँ।
4. कक्षा को कुछ समूहों में बांट दिया जाए।
5. अभ्यास हेतु विद्यार्थियों को एक सप्ताह का समय अवश्य दें।
6. कहानी में थोड़े-बहुत फेर-बदल की छूट मान्य होनी चाहिए।
7. नियत दिन पर प्रत्येक समूह नाटक का मंचन करेंगे। प्रत्येक समूह को नाट्य मंचन के लिए 5-7 मिनट का समय दिया जाए।
8. प्रत्येक समूह एक-दूसरे की प्रस्तुति का ध्यानपूर्वक अवलोकन एवं मूल्यांकन करेंगे।

www.FirstRanker.com

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- संवाद लेखन एवं प्रस्तुति
- भाषा प्रयोग (शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना)
- प्रस्तुतीकरण (आत्मविश्वास व हावभाव)
- अभिनय

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- विद्यार्थियों के प्रयास की सराहना।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत किया जाएगा।
- अभिनय, संवाद-विशेष की सराहना।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन दिया जाएगा।

प्रदत्त कार्य-2 : रचना व वाचन।

विषय : 'चित्र के आधार पर वीरता व देशभक्ति की कहानी लिखना'

उद्देश्य :

- सामाजिक दायित्वों का आभास।
- ज्ञान का विस्तार।
- काल्पनिकता का विकास।
- चिंतन मनन प्रवृत्ति का विकास।
- लेखन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।

2. सभी विद्यार्थियों को प्रपत्र द्वारा चित्र बाँटे जाएंगे।

3. विद्यार्थियों को कहानी लेखन संबंधी सभी नियमों की जानकारी पूर्व में ही दे दी जाएगी।

4. मूल्यांकन का आधार पहले से विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।

5. इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को 15 मिनट का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- चित्र से संबंधित
- शब्द चयन व लेखन शैली
- मौलिकता
- कल्पनाशीलता

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के सूचनापट्ट पर लगाया जाए।
- सराहनीय प्रस्तुतियों को प्रेरणा का स्रोत बनाया जाए।
- औसत प्रस्तुतियों को सुझाव देकर प्रोत्साहित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-3 : अपने अनुभव बताना।

विषय : अपने किसी साहसिक कारनामे का कक्षा में वर्णन।

उद्देश्य :

- व्यावहारिक अनुभवों को लिपिबद्ध करने के लिए प्रेरित करना।
- वाचन क्षमता का विकास।
- साहस भाव जगाना।
- संस्मरण विधा से परिचय।
- लेखन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम अध्यापक अपने किसी साहसिक अनुभव को कक्षा में सुनाएं।
3. विद्यार्थियों को स्वानुभव लिखने के लिए प्रेरित किया जाए।
4. अनुभव को लिपिबद्ध करने के लिए विद्यार्थियों को 10 मिनट का समय दिया जाए।
5. विद्यार्थी को स्वानुभव सुनाने के लिए 1-2 मिनट का समय दिया जाए।
6. विद्यार्थियों को पूर्व में ही कार्य के मूल्यांकन के आधार बिंदुओं से परिचित करवाया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु - विषयानुकूल व भावानुकूल
- प्रवाहशीलता-क्रमबद्धता, धारा प्रवाह अभिव्यक्ति
- आत्मविश्वास
- उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता
- शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

www.FirstRanker.com

प्रतिपुष्टि :

- उत्कृष्ट लेखन व वाचन की सराहना की जाए।
- विद्यार्थी को स्वमूल्यांकन के लिए प्रेरित किया जाए।
- अन्य विद्यार्थियों से उच्चारण एवं वर्तनी की अशुद्धियों के विषय में पूछा जाए तथा उन्हीं में उन अशुद्धियों का निदान करवाया जाए।

प्रदत्त कार्य-4 : वर्ग पहेली (कार्य प्रपत्र)

विषय : वर्ग में दिए गए शब्दों में कुछ मुहावरे छुपे हैं जिन्हें ढूँढ़कर सूची तैयार करें।

उद्देश्य :

- मुहावरों की पहचान।
- चिंतन-मनन प्रवृत्ति का विकास।
- समस्या-समाधान की प्रेरणा।
- ज्ञान का विस्तार।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. पूर्वज्ञान के आधार पर शिक्षक छात्रों से कुछ मुहावरे पूछकर श्यामपट्ट पर लिखें तथा वाक्य में प्रयोग करवाएं।
3. कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित कराकर प्रस्तुत कार्य 'कार्य प्रपत्र' के द्वारा या 'श्यामपट्ट' पर लिखकर करवाया जाए।
4. नाम ढूँढकर सूची तैयार करने से लिए छात्रों को 10-15 मिनट का समय दिया जाए।
5. छात्र विभिन्न रंगों का इस्तेमाल करते हुए नामों को प्रदर्शित करते हुए सूची तैयार कर सकते हैं।
6. गतिविधि के दौरान शिक्षक ध्यान रखें कि प्रत्येक छात्र कार्य में रुचि लें।
7. मूल्यांकन के आधार तथा अंक कार्य से पूर्व ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

कार्य प्रपत्र

वर्ग पहेली

ब	ह	दां	तों	प	सी	ना	आ	ना	आं
च	क	क	र	खा	जा	ना	वि	क	खों
तू	का	म	त	मा	म	क	र	ना	में
ती	ब	टू	ट	जा	ना	बा	आ	आं	धू
बो	क	ढे	र	हो	ना	ट	वा	खों	ल
ल	का	न	भ	र	ना	जो	ज़	से	झों
ना	र	सो	इ	या	चा	ह	उ	बो	क
चे	ह	रा	मु	र	झा	ना	ठा	ल	ना
च	जा	न	ब	ख	श	दे	ना	ना	च
क	ना	आ	ड़े	हा	थों	ले	ना	दे	ना

सूची

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....
6. ....
7. ....
8. ....
9. ....
10. ....
11. ....

12. ....

13. ....

14. ....

15. ....

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- सही मुहावरे छांटने पर अंक दें।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- कार्य प्रपत्र एकत्रित करने के पश्चात् छात्रों की सहायता से सभी मुहावरों की सूची श्याम–पट्ट पर अंकित की जाए।
- मुहावरों का वाक्य में प्रयोग करने की प्रेरणा भी छात्रों को दी जाए।
- छात्रों की सहायता से मुहावरों के अर्थ भी श्यामपट्ट पर लिखे जा सकते हैं।

शिक्षकों के लिए मुहावरों की सूची :

तूती बोलना, हक्का बक्का रह जाना, दाँतों पसीना आना, चक्कर खा जाना, आँखों से बोलना, हक्का बक्का रह जाना, ढेर होना, कान भरना, जान बख्श देना, आवाज़ उठाना, टूट जाना, काम तमाम करना, आड़े हाथों लेना, आँखों में धूल झोंकना, चेहरा मुरझाना।

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य–5 : कार्य प्रपत्र

विषय : स्वतंत्रता सेनानी व संबंधित क्षेत्र।

उद्देश्य :

- विभिन्न स्वतंत्रता सेनानियों का परिचय।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास।
- चिंतन–मनन प्रवृत्ति का विकास।
- स्मरण शक्ति का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. यह कार्य विद्यार्थियों को पाठ पढ़ाने के पश्चात् दिया जाएगा।
3. इस कार्य से पूर्व शिक्षक विद्यार्थियों से स्वतंत्रता संग्राम पर चर्चा करेंगे।
4. मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाए।
5. कार्य के लिए विद्यार्थियों को 10–15 मिनट का समय दिया जाए।

कार्य प्रपत्र

स्वतंत्रता सेनानी से संबधित क्षेत्र का नाम लिखेः

क्रमांक	नाम	क्षेत्र
1.	लक्ष्मीबाई	झांसी
2.	चन्द्रशेखर आजाद	....
3.	भगत सिंह	....
4.	तांत्या टोपे	....
5.	मंगल पांडे	....
6.	रामप्रसाद बिस्मिल	....
7.	सरदार पटेल	....

www.FirstRanker.com

8.	विपिन चंद्रपाल	....
9.	लाला लाजपत राय	....
10.	बाल गंगाधर तिलक	....

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- सही उत्तर

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- शिक्षक ध्यान दें कि सभी विद्यार्थी इस कार्य में सक्रिय योगदान दें।
- सभी सही उत्तरों को शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- सबसे पहले सही कार्य पूर्ण करने वाले विद्यार्थी की विशेष सराहना।

हरिहर काका

मिथिलेश्वर

प्रदत्त कार्य-1 : 'हरिहर काका' कहानी का नवीन अंत।

विषय : कहानी के अंत को बदलते हुए कल्पना से समापन करना।

उद्देश्य :

- कल्पनाशीलता का विकास।
- वैचारिक मंथन व चिंतन-मनन की प्रेरणा।
- लेखन व वाचन कौशल का विकास।
- रचनात्मक अभिव्यक्ति का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. पाठ समाप्ति पर उपरोक्त कार्य करवाया जाए।
3. सर्वप्रथम किसी अन्य कहानी के 'नवीन अंत' के विषय में बताते हुए शिक्षक छात्रों को कार्य से परिचित करवाएं।
4. 'हरिहर काका' कहानी के किसी अन्य अंत के विषय में विचार करने के लिए छात्रों को 10 मिनट का समय दिया जाए तथा कुछ मुख्य बिंदु लिख लेने का निर्देश भी दिया जाए।
5. प्रत्येक छात्र को विचाराभिव्यक्ति हेतु 2 मिनट का समय दिया जाए, वह 9-10 पंक्तियों में कहानी के नवीन अंत के विषय में बताए।
6. गतिविधि के समय शिक्षक प्रत्येक छात्र के क्रियाकलापों पर ध्यान रखें। छात्राभिव्यक्ति के दौरान अन्य विद्यार्थी ध्यानपूर्वक सुनें। छात्र व शिक्षक मिलकर कार्य का मूल्यांकन करें।
7. मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- मौलिकता व नवीनता

www.FirstRanker.com

- शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना
- उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता
- हाव-भाव, आरोह-अवरोह
- आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक विद्यार्थी की सराहना की जाए।
- छात्रों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति का चयन किया जाए।
- उच्चारण संबंधी त्रुटियों पर छात्रों का ध्यान केन्द्रित कर उन्हें दूर करने का सुझाव दें।

प्रदत्त कार्य-2 : विचाराभिव्यक्ति

विषय : "आपसी संबंधों पर धन का प्रभाव"

उद्देश्य :

- चिंतन-मनन का विकास।
- स्पष्ट व स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास।
- कल्पनाशीलता का विकास।
- वाचन कौशल का विकास।
- श्रवण कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक दैनिक जीवन में धन की महत्ता पर उदाहरण देते हुए प्रकाश डालें तथा छात्रों को कार्य के स्वरूप से परिचित करवाएं।
3. प्रत्येक छात्र को प्रस्तुत विषय पर विचार हेतु 9-10 मिनट का समय दिया जाए, छात्र मुख्य विचार बिंदु लिख भी सकते हैं। इस समय शिक्षक घूम-घूम कर कार्य का निरीक्षण करें तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

- विचाराभिव्यक्ति हेतु प्रत्येक छात्र को 1–2 मिनट का समय दिया जाए। इस समय अन्य छात्र ध्यानपूर्वक सुनें। छात्र तथा शिक्षक मिलकर कार्य का मूल्यांकन करें।
- मूल्यांकन के आधार तथा अंक श्यामपट्ट पर कार्य से पूर्व लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु (मौलिकता व व्यावहारिकता)
- शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना
- उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता
- हाव–भाव, आरोह–अवरोह
- आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना।
- उच्चारण दोष दूर करने के लिए सुझाव।
- छात्रों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति तथा वक्ता का चयन।
- विचाराभिव्यक्ति से संबंधित मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।

प्रदत्त कार्य–3 : नाट्य मंचन / एकांकी मंचन।

विषय : कहानी का एकांकी में रूपांतरण व मंचन।

उद्देश्य :

- एकांकी विधा से परिचय।
- अभिनय क्षमता व संवाद शैली से परिचय।
- पटकथा लेखन का ज्ञान व अभ्यास।
- सहभागिता
- आत्मविश्वास

www.FirstRanker.com

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य (5-6 छात्रों का एक समूह)
2. प्रस्तुत कार्य के साथ पाठ का आरंभ किया जा सकता है।
3. सर्वप्रथम शिक्षक कार्य से छात्रों को परिचित करवाते हुए कहानी की पटकथा लेखन के संदर्भ में आवश्यक निर्देश दें तथा आधारों से अवगत कराएं।
4. एकांकी रूपांतरण तथा मंचन की तैयारी हेतु छात्रों को एक सप्ताह का समय दें। सप्ताह के बीच-बीच में कार्य की प्रगति के विषय में पूछकर छात्रों को प्रोत्साहित करें।
5. नियत दिन पर प्रत्येक समूह की प्रस्तुति के समय अध्यापक व कक्षा के अन्य समूह उसका मूल्यांकन करेंगे। प्रत्येक समूह को प्रस्तुति हेतु 10-15 मिनट का समय दें।
6. मूल्यांकन के आधार तथा अंक विभाजन गतिविधि से पूर्व श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- एकांकी रूपांतरण (विषय व भावानुरूप)
- संवाद शैली (हाव-भाव, आरोह-अवरोह)
- अभिनय शैली (शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना, उच्चारण)
- सहभागिता व सक्रिय योगदान
- आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- छात्रों के सामूहिक प्रयासों की सराहना।
- अभिनय विशेष की सराहना।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति का छात्रों के सहयोग से चयन।
- किसी भी दृष्टि से कमी होने पर सुधार हेतु सुझाव।

प्रदत्त कार्य-4 : साक्षात्कार

विषय : किसी अकेले व्यक्ति से साक्षात्कार।

उद्देश्य :

- भावुकता व संवेदनशीलता का विकास।
- समाज के प्रति दायित्व बोध जगाना।
- चिंतन-मनन की प्रेरणा।
- लेखन व वाचन क्षमता का विकास।
- शब्द भंडार में वृद्धि व अनुप्रयोग।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम अध्यापक समाज में ऐसे व्यक्तियों की दुर्दशा पर प्रकाश डालेंगे जो अकेले तथा बुजुर्ग हैं। इसके लिए समाचार-पत्रों में प्रकाशित खबरों का उदाहरण भी दिया जा सकता है।
3. छात्रों को निर्देश दिया जाए कि वे अपने आस-पास रहने वाले किसी ऐसे व्यक्ति के विषय में जानकारी प्राप्त करें तथा उसका साक्षात्कार लें। उनके पास जाकर उनकी मानसिक, सामाजिक, आर्थिक दशा को जानने का प्रयास करें। इसके लिए वे किसी वृद्धाश्रम में भी जा सकते हैं। उनसे मिलने से पहले कुछ प्रश्न बना लें।
4. इस कार्य के लिए छात्रों को एक सप्ताह का समय दिया जाए। यह कार्य पाठ समाप्त होने पर करवाया जाए।
5. साक्षात्कार का मूल्यांकन सभी कार्यों को संग्रह कर करें तथा कक्षा में उसे बताएँ।
6. मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषयवस्तु
- प्रश्नों का चयन
- भाषा
- प्रस्तुति

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- कार्य में कमी रहने के संदर्भ में छात्र को प्रोत्साहित करते हुए सुधार हेतु सुझाव दें।
- सर्वश्रेष्ठ साक्षात्कार का चयन कर उसकी प्रशंसा की जाए।
- कुछ साक्षात्कार का चयन कर प्रदर्शित करें।

प्रदत्त कार्य-5 : वाद-विवाद

विषय : "मीडिया का जनजीवन पर प्रभाव"

उद्देश्य :

- जनसंचार माध्यमों की महत्ता पर प्रकाश।
- प्रिंट और इलैक्ट्रोनिक मीडिया की जानकारी का विकास।
- समाज के प्रति नैतिक दायित्व बोध जगाना।
- किसी भी विषय के संदर्भ में स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास।
- कल्पनाशीलता व रचनात्मक क्षमता का विकास।
- लेखन व वाचन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम अध्यापक कुछ पंक्तियों के माध्यम से मीडिया के कार्य से छात्रों को अवगत करवाएँ। जैसे –

   मीडिया का सकारात्मक प्रभाव –

   मीडिया की देखो भैया आई ऐसी बहार

   पल-पल की जानकारी से भरा पड़ा अखबार

   भरा पड़ा अखबार न अब कोई अज्ञानी

   हर चेहरे की असली सूरत सबने है पहचानी

www.FirstRanker.com

मीडिया का नकारात्मक प्रभाव –

मीडिया की देखो भैया आई ऐसी बहार
अभद्र, अश्लील संस्कृति की चल पड़ी बयार
कुछ नहीं अब निजी रहा, हो गया सरे आम
अपनी रोटी सेंकना बस यही इनका काम

3. छात्रों को उपरोक्त विषय पर विचार हेतु 10–15 मिनट का समय दिया जाए।
4. छात्रों को निर्देश दिया जाए कि वे अपनी इच्छानुसार किसी भी विधा जैसे कविता, संस्मरण, अनुभव आदि के माध्यम से विचार लिख लें। इस कार्य के दौरान शिक्षक घूम–घूम कर निरीक्षण करें तथा आवश्यकतानुसार छात्रों का मार्गदर्शन करें।
5. विचाराभिव्यक्ति हेतु प्रत्येक छात्र को 2–3 मिनट का समय दिया जाए। इस समय अन्य छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे तथा मूल्यांकन भी करेंगे।
6. मूल्यांकन के आधार बिंदु तथा अंक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु (मौलिकता, भावानुरूपता)
- शब्द–चयन, सटीक वाक्य रचना, क्रमबद्धता
- उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता
- हाव–भाव, आरोह–अवरोह
- आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- कार्य में कमी रहने पर सामूहिक रूप से सुधार हेतु सुझाव दें।
- छात्रों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ वक्ता तथा अभिव्यक्ति का चयन किया जाए।
- कुछ चुनी हुई अभिव्यक्तियों को लिपिबद्ध कर सूचना–पट्ट पर प्रदर्शित करें।

www.FirstRanker.com

सपनों के से दिन

गुरदयाल सिंह

प्रदत्त कार्य-1 : संस्मरण लेखन

विषय : अपने बचपन की मधुर स्मृतियाँ।

उद्देश्य :

- विचार विश्लेषण की क्षमता का विकास।
- शिक्षक के प्रति आदर्श दृष्टिकोण का विकास।
- वाचन एवं श्रवण कौशल का विकास।
- कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत अथवा सामूहिक दोनों प्रकार से कराया जा सकता है।
2. शिक्षक सर्वप्रथम कार्य व मूल्यांकन के सभी बिंदुओं को स्पष्ट करेंगे।
3. कक्षा के विद्यार्थियों को कुछ समूह में बांटा जाएगा।
4. विचार करने एवं मुख्य बिंदुओं को लिखने हेतु विद्यार्थियों को 10-12 मिनट का समय दिया जाएगा।
5. प्रत्येक वक्ता 2-3 मिनट में अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।
6. शिक्षक उस समय जब विद्यार्थी तैयारी कर रहे हैं, यह ध्यान रखेंगे कि सभी विद्यार्थी रुचिपूर्वक कार्य करें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- मौलिक व सटीक लेखन/प्रस्तुति
- शब्द चयन
- आत्मविश्वास
- समग्र प्रस्तुति

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे विचारों व प्रस्तुति की सराहना।
- अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए अतिरिक्त समय दिया जाए।

प्रदत्त कार्य-2 : वाद-विवाद

विषय : 'अनुशासन के लिए सख्ती आवश्यक'

उद्देश्य :

- नैतिक मूल्यों का विकास।
- स्वमूल्यांकन की क्षमता का विकास।
- विचार-विश्लेषण की क्षमता का विकास।
- तार्किक व आलोचनात्मक दृष्टि का विकास।
- मंच भय से मुक्ति।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. शिक्षक विद्यार्थियों को वाद-विवाद कला के नियमों से परिचित करवाएंगे।
3. संपूर्ण कक्षा को दो वर्गों (एक-पक्ष), (दूसरा-विपक्ष) में बाँटा जाए।
4. चार-चार विद्यार्थियों का एक समूह होगा व एक समूह से एक वक्ता अपने समूह का मत प्रस्तुत करेगा।
5. तैयारी के लिए एक दिन का समय दिया जाए।
6. प्रत्येक वक्ता को 1-2 मिनट का समय दिया जाए।
7. मूल्यांकन का आधार पहले से ही विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।
8. एक समूह की प्रस्तुति के समय अन्य समूह व शिक्षक उनका मूल्यांकन करेंगे।

www.FirstRanker.com

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- तार्किक क्षमता
- भाषायी क्षमता
- अभिव्यक्ति व प्रस्तुतीकरण
- उपर्युक्त उदाहरणों द्वारा तर्क की पुष्टि

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रत्येक वक्ता को प्रोत्साहित किया जाए।
- अच्छे वक्ताओं को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत करने का मौका दिया जाए।

प्रदत्त कार्य–3 : प्रेरक प्रसंगों का संकलन।

विषय : महापुरुषों के जीवन के प्रेरक प्रसंगों का संग्रह।

उद्देश्य :

- नैतिक व मानवीय मूल्यों का विकास।
- स्वाध्याय की प्रेरणा।
- ज्ञान का विस्तार।
- जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण।
- लेखन–वाचन क्षमता का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. सर्वप्रथम अध्यापक किसी महापुरुष के जीवन से संबंधित प्रेरक प्रसंग सुनाकर कार्य से परिचित करवा सकते हैं।

3. प्रेरक प्रसंगों के संकलन के लिए विद्यार्थियों को 3-4 दिन का समय दिया जाए।
4. कार्य से पूर्व ही मूल्यांकन के आधार बिन्दुओं से विद्यार्थियों को परिचित करवाया जाए।
5. निर्धारित दिन प्रत्येक समूह से एक विद्यार्थी एक प्रेरक प्रसंग को प्रस्तुत करेगा।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषयवस्तु
- भाषा
- प्रस्तुति
- प्रेरक प्रसंगों की संख्या

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- उत्कृष्ट लेखन व वाचन की सराहना की जाए।
- विद्यार्थी को स्वमूल्यांकन के लिए प्रेरित किया जाए।
- उच्चारण एवं वर्तनी संबंधी अशुद्धियों का निदान करवाया जाए।

प्रदत्त कार्य-4 : नाट्य रूपांतरण व मंचन।

विषय : सपनों के दिन कहानी का मंचन।

उद्देश्य :

- नाट्य विधा से परिचय।
- संवाद लेखन की क्षमता का विकास।
- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास।
- सहभागिता का विकास।
- मंच भय से मुक्ति।
- प्रस्तुतीकरण शैली का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. पाठ को समझाने के पश्चात् शिक्षक इस कार्य के संदर्भ में सम्पूर्ण जानकारी विस्तार से दें।
3. कक्षा को कुछ समूहों में बाँट दिया जाए।
4. मूल्यांकन के आधार बिंदु पहले ही स्पष्ट कर दिए जाएं।
5. नाट्य लेखन एवं मंचन के अभ्यास के लिए एक सप्ताह का समय दिया जाए।
6. नियत दिन पर प्रत्येक समूह नाटक का मंचन करेगा।
7. प्रत्येक समूह को नाट्य मंचन के लिए 5-7 मिनट का समय दिया जाए।
8. एक समूह की प्रस्तुति के समय अध्यापक व अन्य छात्र ध्यानपूर्वक अवलोकन एवं मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- संवाद (लेखन एवं प्रस्तुति)
- भाषा प्रयोग (शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना)
- प्रस्तुतीकरण (आत्मविश्वास व हावभाव)
- अभिनय

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- विद्यार्थियों के प्रयास की सराहना।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत किया जाएगा।
- अभिनय, संवाद-विशेष की सराहना।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन दिया जाएगा।

प्रदत्त कार्य–5 : कार्य-प्रपत्र तैयार करना।

विषय : अपने विद्यालय की समग्र जानकारी ।

उद्देश्य :

- आसपास के वातावरण के प्रति जागरुकता।
- चिंतन–मनन प्रवृत्ति का विकास।
- ज्ञान का विस्तार।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों से उनके घर व आसपास के वातावरण के विषय में बातचीत करेगा।
3. विद्यार्थियों को उनके विद्यालय के प्रति जागरूक बनाने के लिए एक कार्यप्रपत्र दिया जाएगा।
4. विद्यार्थियों को कार्य करने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाए।

कार्य प्रपत्र

क) आपके विद्यालय का कुल क्षेत्र ....

ख) विद्यालय में लगे कुल वृक्षों की संख्या ....

ग) विद्यालय में कुल कमरों की संख्या ....

घ) विद्यालय में कुल शिक्षकों की संख्या ....

ङ) विद्यालय में प्रयोगशालाओं की संख्या ....

च) विद्यालय में छात्रों की संख्या ....

छ) विद्यालय में कौन–कौन से फूलों के पौधे हैं ....

ज) विद्यालय की प्रत्येक मंजिल पर कितने कमरे हैं ....

झ) विद्यालय में कौन–कौन से खेल खिलाए जाते हैं ....

ञ) आपके विद्यालय की एक खास बात ....

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- सही उत्तर

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- शिक्षक ध्यान दें कि प्रत्येक विद्यार्थी इस प्रपत्र को ध्यानपूर्वक करें।
- सबसे पहले सही व पूर्ण कार्य की सराहना।
- संपूर्ण व सही जानकारी को विद्यालाय के सूचनापट्ट पर लगाया जाए।

टोपी शुक्ला

राही मासूम रजा

प्रदत्त कार्य-1 : विचाराभिव्यक्ति

विषय : मित्रता जाति-पाति नहीं देखती।

उद्देश्य :

- आपसी मेलजोल को बढ़ावा देना।
- विचार विश्लेषण की क्षमता का विकास।
- वाचन एवं श्रवणकौशल का विकास।
- शब्द भंडार में वृद्धि एवं अनुप्रयोग।
- उदाहरण द्वारा प्रेरणा प्राप्त होना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम शिक्षक किसी प्रसंग को कक्षा में रोचक ढंग से प्रस्तुत कर इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करें।
2. यह कार्य व्यक्तिगत/सामूहिक दोनों प्रकार से कराया जा सकता है।
3. विचार करने एवं मुख्य बिंदुओं को लिखने हेतु विद्यार्थियों को 10-15 मिनट का समय अवश्य दिया जाए।
4. प्रत्येक विद्यार्थी या प्रत्येक समूह से एक वक्ता उदाहरण देकर कथन की पुष्टि करेगा।
5. शिक्षक एवं अन्य विद्यार्थी प्रत्येक वक्ता की प्रस्तुति का मूल्यांकन करेंगे।
6. प्रत्येक वक्ता को 2-3 मिनट का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- शब्द चयन व सटीक वाक्य
- तर्क द्वारा / उदाहरणों द्वारा कथन की पुष्टि

www.FirstRanker.com

- आत्मविश्वास
- प्रस्तुति (उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता)

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली विचाराभिव्यक्ति एवं पुष्टि के लिए दिए गए सटीक उदाहरण की सराहना की जाएगी।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन देकर कार्य अच्छे ढंग से कराया जाएगा।
- अधूरे कार्य को पूरा करने हेतु अतिरिक्त समय दिया जाएगा।
- कमियों के सुधार हेतु सुझाव दिए जाएँगे।

प्रदत्त कार्य–2 : संस्मरण लेखन

विषय : अपने दादा/दादी या नाना/नानी के साथ बिताए क्षणों की मधुर यादों का लेखन।

उद्देश्य :

- संस्मरण लेखन विधा से परिचित कराना।
- बुर्जुगों के साथ का महत्व समझाना।
- स्व–अनुभव को शब्दबद्ध कर अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास।
- शब्द–भंडार में वृद्धि व अनुप्रयोग।
- कल्पनाशीलता का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक अपने अनुभव व यादें (घटना) को रोचकता से कक्षा में प्रस्तुत कर विद्यार्थियों को इस कार्य के लिए अभिप्रेरित करें।
3. कार्य व मूल्यांकन के आधार बिंदुओं को पहले ही स्पष्ट किया जाएगा।
4. विद्यार्थियों को विचार करने एवं मुख्य बिंदुओं को लिखने हेतु कम से कम 10–12 मिनट का समय अवश्य दिया जाए।

5. शिक्षक इस दौरान यह ध्यान रखें कि सभी विद्यार्थी रुचिपूर्वक कार्य करें।

6. प्रत्येक विद्यार्थी अपनी बात 2–3 मिनट में प्रस्तुत करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु (भावानुकूल व विषयानुकूल)
- शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना, क्रमबद्धता
- उच्चारण की शुद्धता, प्रवाहशीलता
- आत्मविश्वास
- प्रभावशाली/रोचक प्रसंग

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली/रोचक प्रस्तुति की सराहना की जाएगी।
- प्रस्तुति में कमी पाए जाने पर सुधार हेतु सुझाव दिए जाएँ।
- उच्चारण व वाक्य विन्यास संबंधी त्रुटियों के सुधार हेतु प्रयास किया जाए।

प्रदत्त कार्य–3 : विचाराभिव्यक्ति

विषय : 'मेरा मित्र...... (नाम) इसलिए सबसे अच्छा है क्योंकि......'

उद्देश्य :

- विचारमंथन एवं चिंतन की क्षमता का विकास।
- विचाराभिव्यक्ति की क्षमता का विकास।
- विश्लेषण क्षमता का विकास।
- अच्छे मित्र की पहचान को स्पष्ट करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।

2. शिक्षक सर्वप्रथम एक अच्छे मित्र की विशेषताओं के विषय में कुछ बातें विद्यार्थियों को बताएंगे।
3. तत्पश्चात् कार्य व मूल्यांकन के सम्पूर्ण बिंदुओं को स्पष्ट करेंगे।
4. अपने सबसे अच्छे मित्र की कम से कम 5 विशेषताओं को विद्यार्थी संक्षेप में बताएंगे।
5. विचार करने हेतु उन्हें कम से कम 10 मिनट का समय अवश्य दिया जाए।
6. प्रत्येक विद्यार्थी को अपने विचार प्रस्तुत करने हेतु कम से कम 1-3 मिनट का समय दिया जाएगा।
7. शिक्षक इस दौरान यह ध्यान रखें कि सभी विद्यार्थी दूसरों के विचार ध्यानपूर्वक सुन रहे हैं या नहीं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- मौलिकता (5 विशेषताओं के संदर्भ में)
- अभिव्यक्ति
- भाव
- आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- विशेषताएं स्पष्ट न कर पाने वाले विद्यार्थियों से चर्चा कर उनकी सहायता की जाएगी।
- विशेषताओं को श्यामपट्ट पर संक्षेप में लिखा जाएगा और कार्य की समाप्ति पर शिक्षक यह बताएंगे कि ये सब एक अच्छे मित्र की विशिष्ट पहचान हैं।

प्रदत्त कार्य-4 : 'स्वानुभव प्रस्तुति'

विषय : अच्छा परीक्षा परिणाम न आने पर परिवार की प्रतिक्रिया।

उद्देश्य :

- विश्लेषण, चिंतन-मनन की क्षमता का विकास।
- जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास।
- लेखन, वाचन, श्रवण कौशल का विकास।
- किसी कार्य तथा उसके परिणाम के प्रति जागरुकता।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक व्यक्तिगत सुझाव के आधार पर विचार अभिव्यक्त करें तथा कार्य से छात्रों को परिचित कराएं।
3. यह कार्य पाठ आरंभ करने से पूर्व करवाया जा सकता है।
4. विषय पर विचार करने तथा विचार बिंदु लिखने के लिए छात्रों को 15-20 मिनट का समय दिया जाए।
5. कार्य के दौरान शिक्षक प्रत्येक छात्र के क्रियाकलापों पर ध्यान दें तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।
6. विचाराभिव्यक्ति हेतु प्रत्येक छात्र को 2 मिनट का समय दिया जाए।
7. छात्र तथा शिक्षक मिलकर कार्य का मूल्यांकन करें।
8. मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु व मौलिकता
- शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना
- उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता
- क्रमबद्धता, सुसंबद्धता
- आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना।
- कार्य में कमी रह जाने पर पूर्णता हेतु प्रेरणा।
- उच्चारणगत अशुद्धियों का सामान्य रूप से संशोधन।
- सर्वश्रेष्ठ वक्ता व अभिव्यक्ति का चयन।

www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य–5 : चारित्रिक विश्लेषण

विषय : 'टोपी शुक्ला' पाठ के चरित्रों के गुण–दोष का विश्लेषण करना।

उद्देश्य :

- चारित्रिक समझ तथा अन्तर करने की क्षमता का विकास।
- जीवन कौशल एवं मूल्यों की समझ का विकास।
- व्यक्तित्व को निखार सकेंगे।
- व्यक्ति एवं उनकी आदतों की समझ।
- अभिव्यक्ति एवं प्रस्तुति क्षमता का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य / सामूहिक कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक स्वानुभव के आधार पर विषय को समझाएं तथा कार्य से छात्रों को परिचित करवाएं।
3. शिक्षक छात्र को बताएं कि पाठ में कितने प्रकार के पात्र हैं।
4. स्त्री पात्र तथा पुरुष पात्र को क्रम से लिख लें।
5. सभी पात्रों के सामने गुण और दोष का कॉलम बनाकर, गुण–दोष को लिखें।
6. समस्या के कारणों की पहचान तथा लेखन।
7. आपको कौन से पात्र ने प्रभावित किया।
8. मुख्य बिंदुओं को साथ–साथ श्यामपट्ट पर भी लिखा जाए।
9. मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

कार्य प्रपत्र

क्र.	पात्र	गुण	दोष
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			
मूल समस्या			
प्रभावित करने वाले पात्र			

(कारण के साथ)

टिप्पणी :

- मूल्यांकन अपने सुविधानुसार करें।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाएं।
- कार्य में कमी रहने पर छात्रों को प्रेरित कर सुधार करवाया जाएं।
- अच्छे काम की सराहना करें तथा प्रदर्शित कीजिए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

व्याकरण

शब्द

प्रदत्त कार्य-1: शब्द और पद की पहचान।

विषय: निर्धारित पाठ से शब्द और पद की पहचान करना।

उद्देश्य :

- शब्द को समझना।
- पद को समझना।
- दोनों में अंतर को समझना।
- वाक्य में प्रयोग को समझना।
- समझ तथा प्रयोग की कला।
- चिंतन-मनन, जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम अध्यापक कार्य के विषय में विस्तार से छात्रों को समझाएँ।
3. किसी भी पाठ से उदाहरण छाँटकर विद्यार्थियों को समझाएं।
4. विद्यार्थियों को कक्षा कार्य की कॉपी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करें।
5. पाठ्यक्रम के अनुसार पाठ का चयन कर कार्य दें।
6. 20 मिनट का समय कार्य करने के लिए दिया जाए। कार्य के दौरान अध्यापक विद्यार्थियों को प्रोत्साहित तथा मदद करते रहें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- मूल्यांकन के आधार बता दिए जाएँ।
- मूल्यांकन बिन्दु तथा अंक अध्यापक अपनी सुविधानुसार तय करें।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य को रुचिपूर्वक समाप्त करने की दृष्टि से प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- कक्षा कॉपी को एकत्रित कर जाँच करें या बच्चों को श्यामपट्ट की सहायता से मूल्यांकित करें।
- शिक्षक छात्रों को प्रेरित करें कि वे स्वयं भी इसी प्रकार की वर्ग पहेली का अभ्यास कर सकते हैं।

प्रदत्त कार्य-2: सूचना लेखन

विषय : किसी भी विषय पर सूचना लिखना।

उद्देश्य :

- रचनात्मक कौशल का विकास।
- सूचना-लेखन कला की समझ।
- चिंतन एवं अभिव्यक्ति क्षमता।
- लेखन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. अध्यापक सूचना-लेखन के बारे में बताएंगे।
3. सूचना-लेखन का नमूना प्रारूप बच्चों को बताएंगे।
4. पुन: विद्यार्थियों को विषय देकर सूचना लेखन गतिविधि का आरंभ करवाएंगे।
5. मूल्यांकन के आधार श्यामपट्ट पर पहले ही लिख दिए जाएं।
6. सूचना-लेखन के लिए 20 मिनट का समय दिया जाए।
7. बीच-बीच में समस्या का अपने स्तर पर समाधान करते रहें ताकि कार्य में अरुचि दिखाने वाले विद्यार्थियों द्वारा काम कराया जा सके।

www.FirstRanker.com

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- प्रारूप
- विषयवस्तु
- भाषा

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छा कार्य करने वाले विद्यार्थियों की सराहना।
- अच्छी सूचना को अध्यापक कक्षा में सुनाएं।
- कमियों के सुधार हेतु सुझाव दें।

प्रदत्त कार्य-3: संवाद लेखन

विषय : 'कारतूस (एकांकी)' के आधार पर अपनी कल्पना से वज़ीर अली के पकड़े जाने पर वज़ीर अली और कर्नल के बीच का संवाद लिखिए।

निर्धारित समय : एक कालांश

उद्देश्य :

- लेखन कौशल एवं कल्पना शक्ति का विकास।
- स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास।

प्रक्रिया :

1. अध्यापक कार्य के बारे में विद्यार्थियों को बताएंगे।
2. कक्षा में अध्यापक कार्य और विषय को श्यामपट्ट पर लिखेंगे साथ ही कार्य करने की सीमा 25-30 मिनट भी लिख देंगे।
3. कार्य करवाते समय शिक्षक ध्यान दें कि सभी विद्यार्थी कार्य में संलग्न हों।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषयवस्तु

- संवाद योजना
- प्रस्तुति
- भाषा

टिप्पणी :

- अध्यापक कार्य सुविधानुसार गतिविधि में परिवर्तन तथा मूल्यांकन के आधार में बदलाव कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- रोचक एवं प्रभावी लेखन करने वाले विद्यार्थियों की सराहना।
- कार्य पूरा करने वाले विद्यार्थी की सराहना।
- कार्य–पत्रक का प्रदर्शन एवं कक्षा में सुनाना।

प्रदत्त कार्य–4: समास

विषय : समास की पहचान।

उद्देश्य :

- व्याकरणिक इकाईयों का ज्ञान।
- शब्द भंडार में वृद्धि।
- समास व उनके भेदों की पहचान व ज्ञान।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास।
- पूर्वज्ञान की परख व अनुप्रयोग।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. कुछ उदाहरणों के द्वारा शिक्षक कार्य के स्वरूप से परिचित कराएं।
3. कार्य–प्रपत्र पूर्ण करने के लिए छात्रों को 15–20 मिनट का समय दिया जाए।
4. मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही छात्रों को बताएं जाएं।

कार्य प्रपत्र

निर्देश :

दिए गए चित्र में से समस्त-पद, समास-विग्रह व भेद छांट कर तालिका बद्ध करें तथा समस्त पद होने पर समास-विग्रह तथा समास-विग्रह होने पर समस्त पद भी बनाएं –

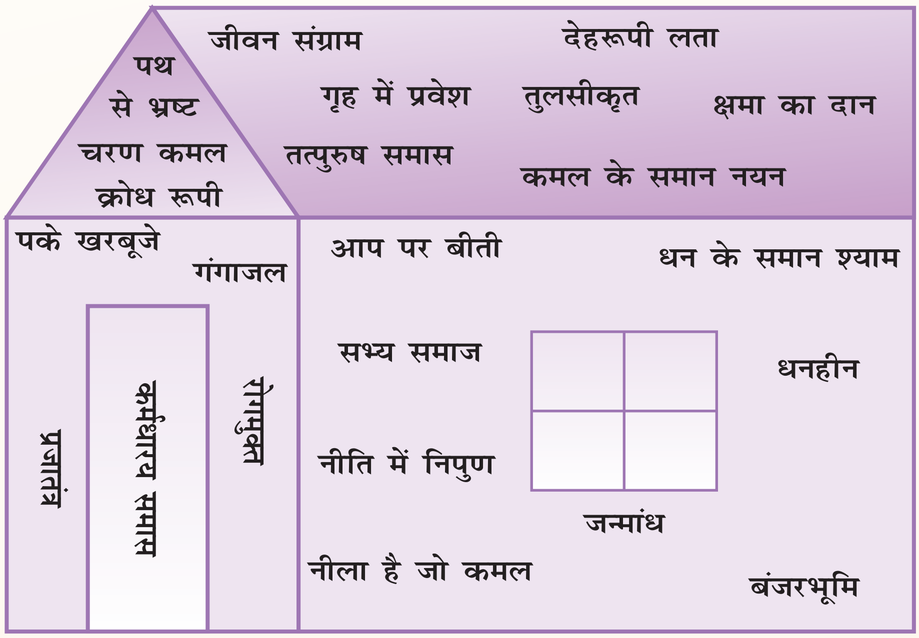

	समास	समास विग्रह	भेद
1.	पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट	तत्पुरुष समास
2.	....	....	....
3.	....	....	....
4.	....	....	....
5.	....	....	....
6.	....	....	....
7.	....	....	....
8.	....	....	....
9.	....	....	....
10.	....	....	....

11.	....	....	....
12.	....	....	....
13.	....	....	....
14.	....	....	....
15.	....	....	....
16.	....	....	....
17.	....	....	....
18.	....	....	....
19.	....	....	....
20.	....	....	....
21.	....	....	....

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- सही समास विग्रह, समस्त पद व भेद लिखने पर अंक दें।

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- रुचिपूर्वक कार्य करने पर सभी छात्रों की सराहना की जाए।
- कार्य प्रपत्र एकत्रित करने के बाद विद्यार्थियों की सहायता से सही समास लिखें।
- कार्य पूर्ण न कर पाने वाले छात्रों को उसे पूर्ण करने के लिए प्रेरित करें।

प्रदत्त कार्य–5 : विज्ञापन लेखन

विषय : पौष्टिक व स्वादिष्ट शिशु आहार का विज्ञापन।

उद्देश्य :

- विज्ञापन लेखन से परिचय।

- कल्पनाशीलता का विकास।
- सृजनात्मकता का विकास।
- रचनात्मक अभिव्यक्ति का विकास।
- लेखन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. शिक्षक विज्ञापन लेखन से विद्यार्थियों को परिचित कराएंगे।
3. कक्षा में किसी विषय पर विज्ञापन लेखन का कार्य श्यामपट्ट पर शिक्षक स्वयं करके भी दिखा सकते हैं।
4. छात्र समूह में दिए गए विषय पर आकर्षक, रोचक एवं सरस विज्ञापन सचित्र तैयार करेंगे।
5. गतिविधि के समय शिक्षक प्रत्येक समूह के क्रियाकलापों पर ध्यान रखें।
6. प्रत्येक समूह को 10-15 मिनट का समय विज्ञापन लेखन के लिए दिया जाएगा।
7. विज्ञापन प्रस्तुति के लिए 1-2 मिनट का समय दिया जाएगा।
8. मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय संबद्धता
- रोचकता
- आकर्षक
- सरल
- प्रस्तुतीकरण

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- छात्रों की कल्पनाशीलता व सृजनशीलता की सराहना की जाएगी।

- सर्वश्रेष्ठ विज्ञापन लेखन की सराहना।
- कमजोर लेखन को प्रोत्साहन एवं सहयोग।

विज्ञापन लेखन के कुछ विषय

- बच्चों की अभिरुचि को ध्यान में रखते हुए रिच क्रीमी, नट्स, कैरामल से भरपूर एक स्वादिष्ट चॉकलेट का विज्ञापन तैयार कीजिए जिसके उपभोक्ता अधिक से अधिक मात्रा में हों तथा इस उत्पाद को चित्र द्वारा चित्रित कीजिए।
- आपके पिता का शैम्पू का व्यापार है। अपने शैम्पू की गुणवत्ता की उपयोगिता को प्रतिपादित करते हुए आकर्षक विज्ञापन बनाइए।
- नारी शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए सरकारी एजेंसी के लिए विज्ञापन बनाइए।

प्रदत्त कार्य-6 : पद परिचय

विषय : विभिन्न पदों की पहचान (कार्य प्रपत्र)

उद्देश्य

- व्याकरणिक इकाइयों की पहचान।
- शब्द भंडार में वृद्धि।
- पूर्वज्ञान की परख एवं प्रयोग।

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. शिक्षक इस कार्यप्रपत्र को पद परिचय समझने के पश्चात् ही दें।
3. इस कार्यप्रपत्र को पूर्ण करने के लिए विद्यार्थियों को 10-15 मिनट का समय ही दिया जाए।
4. आवश्यकतानुसार शिक्षक विद्यार्थियों को बीच-बीच में सहायता करें।

कार्य प्रपत्र

निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पद का चित्रों में से सही विकल्प छांटकर लिखें -

- सुधा सदा हंसती रहती है।
- कछुआ धीरे-धीरे चल रहा था।

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

- गंगा <u>पवित्र</u> नदी है।
- हम मुंबई <u>जा रहे</u> हैं।
- कल <u>हमने</u> ताजमहल देखा।

	पद	परिचय
1.	सुधा	....
2.	धीरे-धीरे	....
3.	पवित्र	....
4.	जा रहे हैं	....
5.	हमने	....

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- सही उत्तर

www.FirstRanker.com

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सभी सही उत्तर देने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- अधूरा काम करने वालों को थोड़ा और समय दें।
- सभी सही उत्तरों को शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दें।

प्रदत्त कार्य–7 : मिश्र व संयुक्त वाक्य।

विषय : वाक्य पढ़कर मिश्र वाक्यों का संयुक्त वाक्य में और संयुक्त वाक्यों का मिश्र वाक्यों में रूपांतरण कर तालिका भरें।

उद्देश्य :

- वाक्य के स्वरूप से परिचय।
- तालिकाबद्ध करने की प्रवृत्ति का विकास।
- शब्द भंडार में वृद्धि।
- पूर्व ज्ञान का अनुप्रयोग।

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. शिक्षक इस कार्यप्रपत्र को पद परिचय समझने के पश्चात् ही दें।
3. इस कार्यप्रपत्र को पूर्ण करने के लिए विद्यार्थियों को 10–15 मिनट का समय ही दिया जाए।
4. आवश्यकतानुसार शिक्षक विद्यार्थियों को बीच–बीच में सहायता करें।

कार्य प्रपत्र

क्र.स.	वाक्य
1.	सूर्य छिपा और अँधेरा छा गया।
2.	अब असफल हो गए, तो शोक करना व्यर्थ है।
3.	उसके पास जो कुछ था, वह खो गया।

4.	लड़का बीमार था इसलिए वह डॉक्टर के पास गया।
5.	मेरे पास कामायनी है, जिसे जयशंकर प्रसाद ने लिखा है।
6.	शशि परिश्रमी है और वह कक्षा में प्रथम आती है।
7.	वह व्यक्ति बेईमान है और जल्द ही पकड़ा जाएगा।
8.	जैसे ही गार्ड ने हरी झंडी दिखाई वैसे ही ट्रेन चल पड़ी।
9.	संकटों ने उसे हर तरह से घेरा, किंतु वह निराश नहीं हुआ।
10.	जो विद्यार्थी साहसी होते हैं, वे उन्नति करते हैं।

क्र.स.	वाक्य

क्र.स.	वाक्य

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- सही उत्तर

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सभी सही उत्तर देने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- अधूरा काम करने वालों को थोड़ा और समय दें।
- सभी सही उत्तरों को शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दें।

प्रदत्त कार्य-8: वाक्य अशुद्धिशोधन

विषय : श्रुतलेख के रूप में अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करके लिखो।

उद्देश्य :

- शुद्ध्ध वाक्य रचना का अभ्यास।
- वर्तनी संबंधी त्रुटियों पर ध्यान आकर्षित करना।
- श्रवण एवं लेखन कौशल का विकास।
- एकाग्रता का विकास।
- तीव्र विचार मंथन एवं चिंतन।

प्रक्रिया :

1. शिक्षक कुछ रोचक अशुद्ध वाक्यों का संकलन करें और उन्हें बहुत आराम से एक-एक कर विद्यार्थियों को सुनाएं।
2. विद्यार्थी एक पृष्ठ पर उन अशुद्धियों को पहचान कर सही वाक्य लिखेंगे।
3. शिक्षक पहले कुछ वाक्यों को उदाहरण स्वरूप अवश्य बता दें।

जैसे – रोज सुबह एक गिलास भरा दूध पीना चाहिए और रोज सभी बच्चों को काटकर एक सेब खाना चाहिए। रोटी पर असली गाय का घी लगाकर खाना चाहिए। अरे! यह क्या? वर्षा में पानी बह रहा है। मैंने तो अभी बाहर जाना है। आपने भी जाना होगा। न जाने किसकी दृष्टि लग गई। – इत्यादि

शुद्ध्ध वाक्य – रोज सुबह एक गिलास दूध पीना चाहिए और रोज सभी बच्चों को एक सेब काटकर देना चाहिए। रोटी पर गाय का असली घी लगाकर खाना चाहिए। अरे! यह क्या? वर्षा हो रही है। मुझे अभी बाहर जाना है। आपको भी जाना होगा। न जाने किसकी नज़र लग गई।

4. इस प्रकार 10 वाक्य तैयार कर श्रुतलेख करवाएँ।
5. ध्यान रखें कि सभी विद्यार्थियोंको उत्तर लिखने का उचित समय मिल सके।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- वाक्य एवं वर्तनी सही होने पर मुल्यांकन करें।

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सम्पूर्ण कार्य सही करने वालों की सराहना की जाए।
- जो कार्य पूरा नहीं कर पाए, उन्हें अतिरिक्त समय दिया जाए।
- कोई वाक्य नहीं लिख पाए तो पुनः बोलकर लिखवाया जाए ताकि वह कार्य पूरा कर सके।
- मूल्यांकन के लिए प्रपत्र लेने के पश्चात् सही उत्तर अवश्य बता दिए जाएँ।

प्रदत्त कार्य-9 : कार्य-प्रपत्र (मिलान करें)

विषय : संधि

उद्देश्य :

- संधि का अभ्यास।
- शब्द भंडार में वृद्धि एवं शब्द निर्माण का ज्ञान।
- पूर्व ज्ञान का अनुप्रयोग।
- विचार मंथन एवं चिंतन।

प्रक्रिया :

1. स्वर संधि के भेदों को समझाने के पश्चात् ही यह कार्य कराया जाए।
2. कार्य व मूल्यांकन के विषय में विद्यार्थियों को विस्तार से समझाया जाए।
3. कार्य-प्रपत्र को शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दें, जिसे विद्यार्थी पृष्ठ पर उतार कर उत्तर देंगे।

कार्य प्रपत्र का प्रारूप (मिलान करें एवं शब्द बनाएं)

1.	लघु	+	एषण	=		
2.	पुरुष	+	इत	=		
3.	यथा	+	आगत	=		
4.	लोक	+	ऋषि	=		
5.	अनु	+	उत्तर	=	लघूत्तर	(उदाहरण स्वरूप)
6.	सु	+	ऊन	=		
7.	मातृ	+	इका	=		

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

8.	ब्रह्म	+	आदेश	=	
9.	प्रति	+	अर्थ	=	
10.	गै	+	उत्तम	=	
11.	सत्य	+	ऊर्मि	=	
12.	नि	+	एव	=	

4. इस कार्य के लिए विद्यार्थियोंको 15-20 मिनट का समय अवश्य दिया जाए।
5. शिक्षक यह सुनिश्चित कर लें कि सभी ने श्यामपट्ट से सही-सही लिख लिया है।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- सही उत्तर

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सम्पूर्ण कार्य सही करने वालों की सराहना की जाए।
- जो कार्य पूरा नहीं कर पाए, उन्हें अतिरिक्त समय दिया जाए।
- सही उत्तर श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं ताकि विद्यार्थी अशुद्धियों को सुधार सकें।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com
www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

शिक्षा केन्द्र, 2-समुदाय केन्द्र, प्रीत विहार, नई दिल्ली-110092

www.FirstRanker.com